website: www.royalpatrika.com
G-mail: royalpatrika@gmail.com
Yahoo: royal_patrika@yahoo.com

R.N.I. No. RAJHIN/2012/48736

दैनिक
रॉयल पत्रिका

वर्ष : 14 | अंक : 71 | पेज: 8 | जयपुर, शुक्रवार 20 फरवरी 2026 | मूल्य: 1.50 रुपये

पीएम मोदी ने छत्रपति शिवाजी महाराज की जयंती पर दी श्रद्धांजलि

नई दिल्ली । नरेंद्र मोदी ने छत्रपति शिवाजी महाराज की जयंती पर उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए कहा कि वे केवल एक ऐतिहासिक नाम नहीं, बल्कि देशवासियों के लिए आराध्य देव हैं। उन्होंने कहा कि शिवाजी

महाराज सिर्फ राजा-महाराजा नहीं थे, बल्कि स्वराज और सुराज के आदर्श को साकार करने वाले महान राष्ट्रनायक थे। सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म 'एक्स' पर अपने संदेश में प्रधानमंत्री ने लिखा कि शिवाजी महाराज दूरदर्शी नेता, कुशल प्रशासक और विलक्षण रणनीतिकार थे। उनका शौर्य, सुशासन और न्यायप्रियता आज भी देश को प्रेरणा देती है। उन्होंने कहा कि स्वाभिमान और न्याय की उनकी भावना समाज को सशक्त बनाने का मार्ग दिखाती है। वीडियो संदेश में पीएम मोदी ने कहा कि शिवाजी महाराज का व्यक्तित्व बहुआयामी था। उन्होंने स्वराज की स्थापना की और सुशासन की मजबूत नींव रखी। भारत की सामूहिक शक्ति को पहचानते हुए उन्होंने नौसेना का विस्तार किया और प्रभावी प्रशासनिक व्यवस्था विकसित की। उनकी सामरिक कुशलता और शांतिपूर्ण राजनीतिक दृष्टिकोण आज भी प्रासंगिक हैं। प्रधानमंत्री ने एक अन्य पोस्ट में कहा कि शिवाजी महाराज ने जन-जन के कल्याण को सर्वोपरि रखा और प्रजा की सुरक्षा के लिए स्वयं को समर्पित कर दिया। उनका जीवन आज भी राष्ट्र के लिए पथ-प्रदर्शक है। पीएम मोदी ने एक सुभाषित भी साझा किया, जिसमें बताया गया कि वही शासक प्रिय होता है जो धर्मनिष्ठ, न्यायप्रिय, निष्पक्ष और लोककल्याण के लिए सदैव सजग रहता है। उन्होंने कहा कि शिवाजी महाराज की वीरता, विचारधारा और प्रशासनिक कौशल आने वाली पीढ़ियों को सदैव प्रेरित करते रहेंगे।

जियो का 10 लाख करोड़ एआई निवेश

नई दिल्ली । नई दिल्ली में आयोजित 'इंडिया एआई इंपैक्ट समिट 2026' में मुकेश अंबानी ने बड़ा ऐलान करते हुए कहा कि Reliance Industries अपनी डिजिटल इकाई Jio Platforms के साथ मिलकर अगले सात वर्षों में 10 लाख करोड़ रुपये का निवेश करेगी। यह निवेश भारत को

आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (एआई) के क्षेत्र में वैश्विक ताकत बनाने के उद्देश्य से किया जाएगा। अंबानी ने कहा कि यह कदम केवल कारोबारी फायदा नहीं, बल्कि देश निर्माण और दीर्घकालिक आर्थिक मजबूती के लिए है। उनका लक्ष्य भारत को इंटरनेट युग से आगे बढ़ाकर "इंटेलिजेंस युग" में प्रवेश कराना है। उन्होंने तीन प्रमुख घोषणाएं कीं। पहली, जियो अब केवल इंटरनेट सेवा प्रदाता नहीं रहेगा, बल्कि एआई आधारित "इंटेलिजेंस" हर नागरिक और हर सेक्टर तक पहुंचाएगा। दूसरी, 10 लाख करोड़ रुपये का चरणबद्ध निवेश किया जाएगा। तीसरी, देश में स्वदेशी कंप्यूटिंग इंफ्रास्ट्रक्चर विकसित किया जाएगा ताकि भारत एआई तकनीक के लिए विदेशी निर्भरता कम कर सके। रणनीति के तहत बड़े पैमाने पर एआई-रेडी डेटा सेंटर स्थापित किए जा रहे हैं। जामनगर में मल्टी-गिगावॉट क्षमता वाला डेटा सेंटर निर्माणाधीन है, जिसकी 120 मेगावॉट क्षमता 2026 के दूसरे हिस्से में शुरू होने की उम्मीद है। कंपनी ग्रीन एनर्जी, विशेषकर सौर ऊर्जा, पर भी जोर दे रही है ताकि एआई इंफ्रास्ट्रक्चर टिकाऊ और पर्यावरण-अनुकूल बने। जियो की एज कंप्यूटिंग तकनीक एआई सेवाओं को तेज, सस्ती और लोगों के नजदीक लाने में मदद करेगी। "जियो एआई भारत" नामक बहुभाषी प्लेटफॉर्म के जरिए किसान, कारीगर और छात्र अपनी मातृभाषा में तकनीक से जुड़ सकेंगे। अंबानी ने भरोसा जताया कि एआई नए और उच्च कौशल वाले रोजगार के अवसर पैदा करेगा और भारत को 21वीं सदी की अग्रणी डिजिटल शक्ति बनाएगा।

राहुल गांधी समेत 25 सांसदों को जान से मारने की धमकी, आरोपी राजस्थान से गिरफ्तार

कोटा। लोकसभा में नेता प्रतिपक्ष राहुल गांधी और कांग्रेस के 25 सांसदों को जान से मारने की धमकी देने वाले युवक को राजस्थान पुलिस ने गिरफ्तार कर लिया है। सोशल मीडिया पर एक वीडियो वायरल होने के बाद कोटा पुलिस ने त्वरित कार्रवाई करते हुए आरोपी को हिरासत में लिया। वीडियो में आरोपी ने सांसदों पर लोकसभा अध्यक्ष के अपमान का आरोप लगाते हुए खुलेआम गोली मारने की धमकी दी थी। पुलिस के अनुसार आरोपी की पहचान राज सिंह आमेरा के रूप में हुई है। वह कोटा के उद्योग नगर थाना क्षेत्र के प्रेम नगर का रहने वाला बताया जा रहा है। शहर पुलिस अधीक्षक तेजस्वनी गौतम ने बताया कि वीडियो सामने आने के बाद पुलिस ने तत्काल जांच शुरू की और युवक को गिरफ्तार कर लिया। मामले की विस्तृत जांच जारी है।

वीडियो में दी थी गंभीर धमकी

वायरल वीडियो में आरोपी खुद को करणी सेना और भाजपा का कार्यकर्ता बताते हुए कहता नजर आया कि यदि संसद में दोबारा ऐसी घटना हुई तो वह सांसदों के घर में घुसकर हमला करेगा। उसने विशेष रूप से राहुल गांधी को निशाना बनाते हुए कहा कि "घर में घुसकर गोली मार देंगे।" वीडियो में आरोपी ने ओम बिरला के चैंबर में हुई कथित घटना का भी जिक्र किया और 25 कांग्रेस सांसदों की गिरफ्तारी की मांग की। वीडियो में दी गई धमकियों को गंभीरता से लेते हुए पुलिस ने आरोपी के खिलाफ विभिन्न धाराओं में मामला दर्ज किया है। शुरुआती जांच में सामने आया है कि आरोपी पहले भी आपराधिक मामलों में शामिल रहा है। पुलिस यह भी जांच कर रही है कि वीडियो बनाने के पीछे उसकी मंशा क्या थी।

खुद को भाजपा कार्यकर्ता बताया

वीडियो में आरोपी खुद को भारतीय जनता पार्टी का कार्यकर्ता बता रहा था। हालांकि भाजपा ने इस दावे से साफ इनकार किया है। पार्टी की ओर से बयान जारी कर कहा गया कि आरोपी का भाजपा से कोई संबंध नहीं है और इस तरह की भाषा एवं आचरण पार्टी की विचारधारा के खिलाफ है। भाजपा कोटा जिलाध्यक्ष राकेश जैन ने कहा कि पार्टी लोकतांत्रिक मूल्यों में विश्वास करती है और किसी भी प्रकार की हिंसा या धमकी का समर्थन नहीं करती। उन्होंने प्रशासन से ऐसे तत्वों के खिलाफ सख्त कार्रवाई की मांग की।

जांच जारी, सुरक्षा पर नजर

पुलिस अधिकारियों का कहना है कि आरोपी से पूछताछ की जा रही है और वीडियो की सत्यता तथा उसके पीछे के उद्देश्य की गहन जांच की जा रही है। साथ ही यह भी पता लगाया जा रहा है कि कहीं इस मामले में कोई अन्य व्यक्ति शामिल तो नहीं है। घटना के बाद राजनीतिक हलकों में भी प्रतिक्रिया देखी जा रही है। विपक्षी दलों ने इस तरह की धमकियों को लोकतंत्र के लिए गंभीर खतरा बताया है। फिलहाल आरोपी पुलिस हिरासत में है और आगे की कानूनी कार्रवाई की प्रक्रिया जारी है।

यूपी चुनाव 2027 के लिए बीजेपी की नई रणनीति, संगठन मजबूती पर फोकस

यूपी। उत्तर प्रदेश में भारतीय जनता पार्टी ने 2027 विधानसभा चुनाव को ध्यान में रखते हुए संगठन को और मजबूत करने की दिशा में बड़ा कदम उठाया है। प्रदेश अध्यक्ष पंकज चौधरी कार्यकर्ताओं को केंद्र में रखकर नई कार्यशैली लागू करने जा रहे हैं। उनका प्रयास है कि चुनाव से पहले अधिक से अधिक कार्यकर्ताओं से सीधा संवाद स्थापित किया जाए और जमीनी स्तर की फीडबैक सीधे संगठन तक पहुंचे। प्रदेश अध्यक्ष की रणनीति है कि "वन टू वन मैपिंग" के जरिए हर कार्यकर्ता से संपर्क और समन्वय बनाया जाए। उनका मानना है कि यदि संगठन मजबूत रहेगा तो चुनावी तैयारी भी स्वाभाविक रूप से सशक्त होगी। इसी सोच के तहत कार्यकर्ताओं से नियमित मुलाकात और संवाद को प्राथमिकता दी जा रही है।

ज्यादा से ज्यादा कार्यकर्ताओं से संवाद

नई कार्यशैली के तहत लखनऊ स्थित बीजेपी प्रदेश कार्यालय की व्यवस्था में भी बदलाव किया गया है। वहां लगी बड़ी-बड़ी मेजों को

हटाकर अतिरिक्त कुर्सियां लगाई गई हैं, ताकि ज्यादा से ज्यादा कार्यकर्ता सीधे बैठकर अपनी बात रख सकें। पंकज चौधरी अब नियमित रूप से लखनऊ में प्रवास के दौरान कार्यालय में बैठकर कार्यकर्ताओं से मुलाकात करेंगे और उनकी समस्याएं सुनेंगे। प्रदेश अध्यक्ष ने अपने कार्यकाल के लिए तीन प्रमुख नियम तय किए हैं—संगठनात्मक अनुशासन, विकास योजनाओं की निगरानी और जनता से प्रत्यक्ष संवाद। इसके साथ ही मासिक समीक्षा तंत्र लागू किया जाएगा। हर जिले में मासिक समीक्षा प्रणाली के तहत यह देखा जाएगा कि सरकारी योजनाएं जमीन पर कितनी प्रभावी हैं और उनका लाभ कार्यकर्ताओं व आम जनता तक पहुंच रहा है या नहीं।

2027 चुनाव की तैयारी शुरू

पंकज चौधरी "कार्यकर्ता सर्वप्रथम" का फॉर्मूला लागू कर रहे हैं। अब पार्टी मंच पर ही कार्यकर्ता और पदाधिकारी अपनी बात रख सकेंगे। पार्टी लाइन के खिलाफ जाने वाले नेताओं पर सख्ती भी जारी रहेगी। संगठन स्तर पर योजनाओं के लाभ की अलग से समीक्षा की जाएगी ताकि जमीनी हकीकत सामने आ सके। बीजेपी प्रदेश अध्यक्ष के इन कदमों को 2027 विधानसभा चुनाव की तैयारी के रूप में देखा जा रहा है। माना जा रहा है कि पार्टी चुनाव से पहले कार्यकर्ताओं की संभावित नाराजगी दूर करने, संगठन में ऊर्जा भरने और जमीनी नेटवर्क को मजबूत करने की रणनीति पर विशेष जोर दे रही है। इससे स्पष्ट है कि बीजेपी ने अभी से चुनावी बिसात बिछानी शुरू कर दी है।

BJP चाहती है बिहार में चालू हो दारू? शराबबंदी के बीच मुकेश सहनी का बड़ा आरोप

पटना। बिहार में करीब 10 साल से शराबबंदी कानून लागू है। इस बीच उपेंद्र कुशवाहा की पार्टी के एक विधायक ने इसकी समीक्षा की मांग कर सियासी बहस छेड़ दी है। हालांकि सरकार ने साफ कहा है कि शराबबंदी वापस नहीं होगी। इसी बीच विकासशील इंसान पार्टी के प्रमुख मुकेश सहनी ने गुरुवार (19 फरवरी 2026) को पटना में बड़ा दावा किया। उन्होंने आरोप लगाया कि भारतीय जनता पार्टी बिहार में फिर से शराब शुरू करना चाहती है। शराबबंदी की समीक्षा पर सहनी ने कहा कि महिलाओं की सुरक्षा और घरेलू शांति के लिए कानून लागू किया गया था। हर साल 40 हजार करोड़ के नुकसान के बावजूद इसे असफल क्यों बताया जा रहा है? उन्होंने सवाल उठाया कि क्या सरकार से कानून सही ढंग से लागू नहीं हो रहा या प्रशासन नियंत्रण में नहीं है।

'...और वे मोटी कमाई कर सकें'

सहनी ने कहा कि 9–10 साल में राज्य को भारी आर्थिक नुकसान हुआ, पहले उसका जवाब दिया जाए। उन्होंने आरोप लगाया कि बीजेपी चाहती है शराबबंदी खत्म हो ताकि मोटी कमाई की जा सके। उन्होंने कहा कि बिहार को आर्थिक रूप से कमजोर करने की साजिश हो रही है।

'नीतीश कुमार अस्वस्थ... बीजेपी हावी'

वीआईपी प्रमुख ने कहा कि मुख्यमंत्री नीतीश कुमार का सपना गांधी के आदर्शों पर चलने वाला राज्य बनाना था। जैसे गुजरात में शराबबंदी है, वैसे ही बिहार में सख्ती से लागू होनी चाहिए। उन्होंने कहा कि अभी नीतीश कुमार अस्वस्थ हैं और बीजेपी हावी है। फैसला सरकार को करना है, लेकिन उद्देश्य और नुकसान पर जवाब जरूरी है।

'वो जाने वाले हैं ये जानते हैं!': बटुक विवाद के बीच अखिलेश का ब्रजेश पाठक पर तंज

यूपी। उत्तर प्रदेश में बटुकों की शिखा को लेकर छिड़ी सियासत के बीच समाजवादी पार्टी के अध्यक्ष अखिलेश यादव ने डिप्टी सीएम ब्रजेश पाठक पर तीखा तंज कसा है। सपा प्रमुख ने ब्रजेश पाठक के एक इंटरव्यू का वीडियो साझा करते हुए कहा कि लगता है उन्हें आभास हो गया है कि उनका समय अब जाने वाला है, इसलिए वे न भूतपूर्व मुख्यमंत्री को स्वीकारते हैं और न ही वर्तमान को पूरी तरह मानते हैं। अखिलेश यादव ने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म एक्स पर उपमुख्यमंत्री के इंटरव्यू का वीडियो टैग किया। वीडियो में ब्रजेश पाठक सपा सरकार के कार्यकाल में कोई खास काम नहीं होने की बात कह रहे थे। उन्होंने सवाल उठाया कि अखिलेश यादव अपनी सरकार के कामों के आधार पर वोट क्यों नहीं

मांगते। इस पर एंकर ने कहा कि सपा अध्यक्ष तो अक्सर अपने कार्यकाल की उपलब्धियां गिनाते रहते हैं।

सोशल मीडिया पर तीखा बयान

वीडियो शेयर करते हुए अखिलेश यादव ने लिखा, "भूतपूर्व मुख्यमंत्री को अस्वीकारते हैं... वर्तमान मुख्यमंत्री को नहीं मानते हैं... उप होकर भी अपना राग अलापते हैं... मंत्रालय की जिम्मेदारियों से भागते हैं... लगता है वो जानेवाले हैं ये जानते हैं!" उनके इस बयान को प्रदेश की राजनीति में चल रही खींचतान से जोड़कर देखा जा रहा है। गौरतलब है कि अखिलेश यादव समय-समय पर योगी आदित्यनाथ और भारतीय जनता पार्टी के भीतर कथित मतभेदों को लेकर बयान देते रहे हैं। वे कई बार दावा कर चुके हैं कि उत्तर प्रदेश सरकार और केंद्र के बीच तालमेल ठीक नहीं है, जिसके चलते "दो इंजन" आपस में टकराते रहते हैं। इसके अलावा वे मुख्यमंत्री और दोनों डिप्टी सीएम के बीच भी तनाव होने का आरोप लगाते रहे हैं।

शंकराचार्य विवाद और बटुकों का मुद्दा

हाल के दिनों में शंकराचार्य विवाद को लेकर प्रदेश की राजनीति गर्म है। इसी संदर्भ में ब्रजेश पाठक ने बटुकों के अपमान को "महापाप" बताया था। उन्होंने कहा कि बटुकों की शिखा नहीं खींची जानी चाहिए थी और जो हुआ उसका लेखा-जोखा लिखा जाएगा। उनके इस बयान को कुछ लोग मुख्यमंत्री की लाइन से अलग रुख के रूप में देख रहे हैं। बटुकों के सम्मान और शंकराचार्य विवाद को लेकर जारी बयानबाजी ने राजनीतिक माहौल को और तीखा बना दिया है। जहां सपा इसे सरकार के भीतर असहमति का संकेत बता रही है, वहीं भाजपा इसे अनावश्यक विवाद करार दे रही है। फिलहाल यह मुद्दा प्रदेश की सियासत में नई बहस छेड़ चुका है और आने वाले दिनों में इसकी गूंज और तेज हो सकती है।

वाराणसी से लखनऊ तक टकराव की आहट: शंकराचार्य का सरकार पर हमला

यूपी। उत्तर प्रदेश के वाराणसी में ज्योतिष पीठ के शंकराचार्य स्वामी अविमुक्तेश्वरानंद सरस्वती ने योगी आदित्यनाथ की सरकार पर तीखा हमला बोला है। उन्होंने आरोप लगाया कि 'ईज ऑफ डूइंग बिजनेस' के नाम पर राज्य में सबसे ज्यादा बीफ व्यापार हो रहा है। शंकराचार्य ने 1 मार्च को सरकार को अंतिम अल्टीमेटम देने की घोषणा की और लखनऊ कूच की तैयारी का आह्वान किया। साथ ही उन्होंने दावा किया कि पश्चिम बंगाल में गौहत्या की घटनाएं उत्तर प्रदेश से कम होती हैं, जिससे राजनीतिक बयानबाजी और तेज हो गई है। इसी दौरान उन्होंने डिप्टी सीएम ब्रजेश पाठक के बयान पर कड़ी प्रतिक्रिया दी। शंकराचार्य ने कहा कि एक महीना चुप रहने के बाद अब इस तरह बोलना ऐसा लगता है जैसे किसी दबाव में प्रतिक्रिया दी जा रही हो। उन्होंने सवाल उठाया कि क्या किसी को मारकर उसके ऊपर फूल चढ़ाने

से शांति स्थापित हो सकती है? हालांकि उन्होंने यह भी कहा कि ब्रजेश पाठक के कदम से यह संकेत मिलता है कि कहीं न कहीं गलत हुआ है और उसे स्वीकार करने की भावना दिखी है। योग गुरु बाबा रामदेव की मिलजुल कर रहने की सलाह पर भी शंकराचार्य ने टिप्पणी की। उन्होंने कहा कि "कालनेमी से मिलकर रहना चाहिए", जो उनके बयान को और अधिक तीखा बनाता है। इस टिप्पणी को राजनीतिक हलकों में अलग-अलग अर्थों में देखा जा रहा है।

माघ मेले के विवाद से सियासी तापमान बढ़ा

प्रयागराज के माघ मेले में ज्योतिष पीठ के शंकराचार्य स्वामी अविमुक्तेश्वरानंद सरस्वती और प्रशासन के बीच हुए विवाद ने अब सियासी रंग ले लिया है। बयानबाजी और आरोप-प्रत्यारोप लगातार बढ़ते जा रहे हैं। इसी क्रम में डिप्टी सीएम ब्रजेश पाठक ने गुरुवार को अपने आधिकारिक आवास पर बड़ी संख्या में बटुकों को आमंत्रित कर उनका सम्मान किया। इस अवसर पर बटुकों ने फूल भेंट कर उनका स्वागत किया और समर्थन के लिए आभार व्यक्त किया। एक बटुक ने कहा कि डिप्टी सीएम ने उनकी आवाज उठाई और सम्मान दिया। दूसरे बटुक ने कहा कि वे सनातन समाज के पक्ष में खड़े होने और उनके साथ हुए अन्याय के मुद्दे को उठाने के लिए धन्यवाद देने आए हैं। इस घटनाक्रम ने प्रदेश की राजनीति में नया मोड़ ला दिया है और आने वाले दिनों में विवाद और गहराने के संकेत मिल रहे हैं।

AI समिट में भारत ने बनाया गिनीज वर्ल्ड रिकॉर्ड, 2.5 लाख से अधिक एआई रिस्पॉन्सिबिलिटी प्लेज मिले

नई दिल्ली । नई दिल्ली के भारत मंडपम में आयोजित इंडिया एआई इम्पैक्ट समिट 2026 के दौरान भारत ने एक बड़ा कीर्तिमान अपने नाम किया। अश्विनी वैष्णव ने घोषणा की कि देश ने 24 घंटे में एआई जिम्मेदारी अभियान के तहत सबसे अधिक संकल्प प्राप्त कर Guinness World Records में स्थान बनाया है। आधिकारिक बयान के अनुसार 16-17 फरवरी 2026 के बीच 24 घंटे की अवधि में कुल 2,50,946 वैध एआई रिस्पॉन्सिबिलिटी प्लेज प्राप्त हुए। यह अभियान 16 फरवरी को IndiaAI Mission के तहत Intel India के सहयोग से शुरू किया गया था। नागरिकों को AIPledge.IndiaAI.Gov.in पोर्टल के माध्यम से आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस के नैतिक, समावेशी और जिम्मेदार उपयोग का संकल्प लेने के लिए आमंत्रित किया गया था।

प्रतिभागियों को दिए गए डिजिटल बैज

आईएएनएस की रिपोर्ट के मुताबिक, गिनीज वर्ल्ड रिकॉर्ड के निर्णायकों ने आधिकारिक तौर पर इस उपलब्धि की पुष्टि की। इस पहल का उद्देश्य लोगों को डेटा गोपनीयता, जवाबदेही, पारदर्शिता और गलत सूचना से निपटने जैसे अहम मुद्दों पर जागरूक करना था। संकल्प लेने वाले प्रतिभागियों को डिजिटल बैज प्रदान किए गए और उन्हें एआई लर्निंग पाथ-वे तक विशेष पहुंच भी दी गई, जिससे वे एआई के जिम्मेदार उपयोग के बारे में और अधिक सीख सकें।

क्या बोले केंद्रीय मंत्री

केंद्रीय मंत्री अश्विनी वैष्णव ने कहा, "यही वह दिशा है जिसमें देश को आगे बढ़ना चाहिए—एक ऐसे भविष्य की ओर जहां एआई को जिम्मेदारी के साथ अपनाया जाए।" उन्होंने इस पहल का श्रेय नरेंद्र मोदी को देते हुए कहा कि प्रधानमंत्री ने युवाओं को एआई का उपयोग समाज के हित में करने की प्रेरणा दी है, ताकि यह तकनीक लोगों के जीवन को बेहतर बनाए और जिम्मेदारी से इस्तेमाल हो। उन्होंने बताया कि इस अभियान में शुरुआती 5,000 संकल्पों का लक्ष्य रखा गया था, लेकिन रिकॉर्ड तोड़ भागीदारी ने इसे कई गुना पार कर दिया। यह जिम्मेदार एआई अपनाने को लेकर जनता की बढ़ती जागरूकता और सक्रिय सहभागिता को दर्शाता है। समिट में कई देशों के राष्ट्राध्यक्ष, मंत्री, शोधकर्ता और उद्योग जगत के प्रतिनिधि भी शामिल हुए, जिससे यह आयोजन वैश्विक स्तर पर चर्चा का केंद्र बन गया।

मुफ्त की योजनाओं पर सुप्रीम कोर्ट की सख्त टिप्पणी- 'सिर्फ मुफ्त भोजन, साइकिल, कैश ट्रांसफर पर ध्यान देंगे तो विकास कैसे होगा?'

नई दिल्ली । मुफ्त की सरकारी योजनाओं को लेकर सुप्रीम कोर्ट ने कड़ी नाराजगी जताई है। तमिलनाडु में लोगों को मुफ्त बिजली देने की योजना पर सख्त रुख अपनाते हुए अदालत ने तमिलनाडु समेत सभी राज्यों को फटकार लगाई। मुख्य न्यायाधीश सूर्यकांत की अध्यक्षता वाली बेंच ने कहा कि अधिकांश राज्य पहले से ही राजस्व घाटे में हैं, लेकिन विकास कार्यों के बजाय मुफ्त योजनाओं पर अधिक खर्च कर रहे हैं।

केंद्र सरकार के नियम को दी चुनौती

तमिलनाडु पावर डिस्ट्रीब्यूशन कॉर्पोरेशन ने केंद्र सरकार के Electricity (Amendment) Rules, 2024 के नियम 23 को चुनौती दी है। यह नियम बिजली की कीमतों के नियमन से जुड़ा है। कॉर्पोरेशन का तर्क है कि यह प्रावधान राज्य के अधिकार क्षेत्र में हस्तक्षेप करता है और लोगों के कल्याण के लिए शुरू की गई मुफ्त बिजली योजना के खिलाफ है। कॉर्पोरेशन की ओर से वरिष्ठ वकील गोपाल सुब्रह्मण्यम ने अदालत में दलीलें पेश कीं। दलीलें सुनने के बाद कोर्ट ने केंद्र और तमिलनाडु सरकार को नोटिस जारी किया, लेकिन बड़ी संख्या में लोगों को मुफ्त बिजली देने की नीति पर गंभीर आपत्ति भी जताई।

सुप्रीम कोर्ट ने पूछा—हम कैसी संस्कृति विकसित कर रहे?

सुनवाई के दौरान मुख्य न्यायाधीश ने सवाल उठाया कि देश में किस प्रकार की संस्कृति विकसित की जा रही है। उन्होंने कहा कि जो लोग बिजली का बिल देने में असमर्थ हैं, उनके लिए लक्षित कल्याणकारी योजनाएं होनी चाहिए, लेकिन सबको मुफ्त सुविधा देना उचित नहीं है। अदालत ने चिंता जताई कि लगभग हर राज्य में ऐसी प्रवृत्ति बढ़ रही

है, जो वित्तीय अनुशासन पर दबाव डालती है। कोर्ट ने राज्यों को नसीहत दी कि यदि संसाधन उपलब्ध हैं तो उन्हें बुनियादी ढांचे, अस्पतालों, स्कूलों और कॉलेजों के विकास में लगाया जाना चाहिए। चुनाव के समय मुफ्त सामान या सुविधाएं बांटने के बजाय नीतियों की गंभीर समीक्षा की जानी चाहिए। अदालत ने कहा कि ज्यादातर राज्य राजस्व घाटे में होने के बावजूद इन योजनाओं पर भारी खर्च करने को मजबूर हो रहे हैं।

कटघरे में डायरेक्ट कैश ट्रांसफर योजनाएं

पीठ ने डायरेक्ट कैश ट्रांसफर (डीबीटी) योजनाओं पर भी सवाल उठाए। मुख्य न्यायाधीश ने कहा कि राज्य का कर्तव्य रोजगार के अवसर पैदा करना है। यदि सरकारें मुफ्त भोजन, मुफ्त साइकिल, मुफ्त बिजली और सीधे खातों में नकद हस्तांतरण पर ही केंद्रित रहेंगी, तो विकास परियोजनाओं के लिए धन कैसे बचेगा? अदालत की इन टिप्पणियों को व्यापक नीति बहस के रूप में देखा जा रहा है। कल्याणकारी योजनाओं और वित्तीय जिम्मेदारी के बीच संतुलन कैसे स्थापित किया जाए, यह प्रश्न अब न्यायिक विमर्श का भी हिस्सा बन गया है। मामले की अगली सुनवाई में केंद्र और राज्य सरकारों के जवाब के बाद आगे की दिशा स्पष्ट होगी।

रॉयल पत्रिका

संपादकीय....

एआई का 'यूपीआई-करण': भारत की नई डिजिटल दिशा

भारत अब एआई को केवल चैटबॉट की सुविधा तक सीमित रखने के मूड में नहीं है। हाल ही में Infosys के सह-संस्थापक नंदन नीलेकणी और Anthropic के संस्थापक डेरियो अमोदेई के बीच हुए समझौते ने साफ संकेत दे दिया है कि भारत एआई को एप्लिकेशन के स्तर पर उतारने जा रहा है। एन्थ्रोपिक का फ्रंटियर मॉडल 'क्लॉड' अब भारतीय परिप्रेक्ष्य में उपयोग के लिए उपलब्ध होगा। यह केवल तकनीकी साझेदारी नहीं, बल्कि एक रणनीतिक कदम है। इसी के साथ आईटी मंत्री ने "एआई का यूपीआई" बनाने की घोषणा की है। जैसे UPI ने देश के पारंपरिक नकद लेन-देन को डिजिटल प्लेटफॉर्म पर ला दिया, वैसे ही एआई को एक ओपन और व्यापक प्लेटफॉर्म के रूप में विकसित करने की योजना है। आधार और यूपीआई की सफलता में नंदन नीलेकणी की अहम भूमिका रही है। अब वही सोच एआई के क्षेत्र में अपनाई जा रही है—जहां तकनीक आम आदमी तक पहुंचे और गवर्नेंस का हिस्सा बने। सरकार का कहना है कि भारत में लागू होने वाला हर एआई मॉडल कानून, डेटा सुरक्षा और भारतीय संस्कृति की कसौटी पर खरा उतरेगा। यह डिजिटल संप्रभुता का संदेश भी है। दुनिया में एआई को लेकर नैतिकता और सुरक्षा पर गहरी बहस चल रही है। एन्थ्रोपिक जैसी कंपनी, जो एआई सेफ्टी के लिए जानी जाती है, के साथ साझेदारी इस दिशा में भरोसे का आधार बनाती है। कृषि क्षेत्र में एआई का उपयोग विशेष रूप से महत्वपूर्ण होगा। बहुभाषी एप के जरिए किसान अपनी भाषा में सरकारी योजनाओं, मौसम और बाजार भाव की जानकारी ले सकेंगे। "भारती" नामक एआई सहायक किसानों को सही सलाह दे सकेगा। भारत जैसे बहुभाषी देश में यह पहल तकनीक को जमीनी स्तर तक पहुंचाने में मददगार साबित हो सकती है। एमएसएमई क्षेत्र, जो अर्थव्यवस्था की रीढ़ है, एजेंटिक एआई से लाभ उठा सकता है। छोटे उद्योग अपने उत्पादों की गुणवत्ता जांच, कच्चे माल का विश्लेषण और ऊर्जा बचत जैसे कदम एआई की मदद से उठा सकेंगे। इससे उनकी प्रतिस्पर्धात्मक क्षमता बढ़ेगी और लागत घटेगी। स्वास्थ्य क्षेत्र में एआई का प्रयोग संवेदनशील है। रोग पहचान, प्राथमिक जांच और अस्पताल प्रबंधन में एआई सहायक हो सकता है, लेकिन इसके साथ डेटा सुरक्षा और नैतिकता का विशेष ध्यान रखना होगा। सरकार द्वारा तैयार 'सही' इंफ्रास्ट्रक्चर इसी उद्देश्य से बनाया गया है, ताकि स्वास्थ्य सेवाओं में एआई का उपयोग सुरक्षित और नियंत्रित तरीके से हो। शिक्षा में भी एआई व्यक्तिगत सीखने का साधन बन सकता है। प्रत्येक छात्र की जरूरत के अनुसार पाठ्य सामग्री और मार्गदर्शन उपलब्ध कराना संभव होगा। इससे शिक्षा अधिक समावेशी और प्रभावी बन सकती है। हालांकि, एआई के विस्तार के साथ रोजगार, डेटा नियंत्रण और एल्गोरिदमिक पक्षपात जैसे सवाल भी उठेंगे। यदि प्लेटफॉर्म पारदर्शी और जवाबदेह नहीं रहा, तो डिजिटल असमानता बढ़ सकती है। इसलिए एआई का यूपीआई-करण केवल तकनीकी परियोजना नहीं, बल्कि सामाजिक जिम्मेदारी भी है। भारत ने डिजिटल पब्लिक इंफ्रास्ट्रक्चर के क्षेत्र में जो मॉडल प्रस्तुत किया है, उसे अब एआई के जरिए आगे बढ़ाने की तैयारी है। यदि नवाचार और सुरक्षा के बीच संतुलन बना रहा, तो एआई भारत के गवर्नेंस और विकास को नई दिशा दे सकता है। यह कदम देश को एआई युग में अग्रणी बनाने की क्षमता रखता है—बशर्ते नीति, नैतिकता और पारदर्शिता साथ-साथ चलें।

बांग्लादेश में सत्ता परिवर्तन और भारत से रिश्तों की नई परीक्षा

दक्षिण एशिया की राजनीति में एक बार फिर बड़ा मोड़ आया है। बांग्लादेश में नई सरकार के गठन के साथ ही यह सवाल तेज़ी से उठ खड़ा हुआ है कि क्या सत्ता परिवर्तन से भारत-बांग्लादेश संबंधों में आई तल्ख़ी कम होगी या फिर इतिहास खुद को दोहराएगा। सत्रह वर्षों के लंबे अंतराल के बाद ब्रिटेन से स्वदेश लौटकर चुनावी मैदान में उतरे तारिक रहमान ने अपनी पार्टी बांग्लादेश नेशनलिस्ट पार्टी (बीएनपी) को जीत दिलाते हुए प्रधानमंत्री पद की शपथ ली है। शपथ ग्रहण समारोह में भारत की ओर से लोकसभा अध्यक्ष ओम बिरला ने भाग लेकर शुभकामनाएं दीं और भारत यात्रा का निमंत्रण भी सौंपा। प्रतीकों की राजनीति में यह संकेत सकारात्मक माना जा सकता है, लेकिन जमीनी हकीकत इससे कहीं अधिक जटिल है।

पिछले डेढ़-दो वर्षों में भारत-बांग्लादेश संबंधों ने जिस उतार-चढ़ाव का सामना किया, वह अभूतपूर्व रहा। अगस्त 2024 में शेख हसीना सरकार के तख्तापलट के बाद बनी अंतरिम व्यवस्था, जिसका नेतृत्व मोहम्मद यूनुस ने किया, भारत के प्रति अपेक्षाकृत ठंडी और कई बार कटु रुख़ अपनाती दिखी। यही वह दौर था जब बांग्लादेश में हिंदू नागरिकों और उनके धार्मिक स्थलों पर हमलों की खबरें सामने आईं। यह घटनाएं केवल कानून-व्यवस्था का मामला नहीं थीं, बल्कि भारत-बांग्लादेश संबंधों की संवेदनशीलता को भी प्रभावित कर रही थीं। जिस देश को 1971 में भारत की निर्णायक भूमिका के कारण स्वतंत्रता मिली, उसी देश की सत्ता का भारत-विरोधी रुख़ अपनाना नई दिल्ली के लिए असहज स्थिति थी।

इतिहास के पन्ने पलटें तो साफ दिखता है कि शेख मुजीब उर रहमान और उनकी पुत्री शेख हसीना भारत के सबसे विश्वसनीय साझेदार रहे। 1971 के मुक्ति संग्राम में भारत की सैन्य और कूटनीतिक सहायता के बिना पाकिस्तान के दमनचक्र से मुक्ति कठिन थी। लेकिन स्वतंत्रता के बाद की राजनीति में सत्ता के केंद्र बदलते रहे। जिया उर रहमान और बाद में खालिदा जिया के शासनकाल में भारत के साथ रिश्ते अक्सर संशय और प्रतिस्पर्धा के दायरे में रहे। यही वह विरासत है, जिसके राजनीतिक उत्तराधिकारी आज तारिक रहमान हैं।

तारिक रहमान के नेतृत्व में बीएनपी ने चुनावी अभियान के दौरान खुलकर भारत-विरोधी भाषा का इस्तेमाल नहीं किया। उनका 31 सूत्रीय एजेंडा विकास, डिजिटल डोमेन, इंफ्रास्ट्रक्चर और युवाओं को अवसर देने जैसे मुद्दों पर केंद्रित रहा। उन्होंने बांग्लादेश को 'रेनबो नेशन' बनाने की बात कही, जिसमें विविधता और आधुनिकता का मेल हो। यह दृष्टिकोण संकेत देता है कि वे घरेलू एजेंडे को प्राथमिकता देना चाहते हैं। लेकिन बांग्लादेश की राजनीति में भारत-विरोध एक ऐसा कार्ड रहा है, जिसे विभिन्न सरकारों ने समय-समय पर घरेलू असंतोष से ध्यान हटाने के लिए इस्तेमाल किया है। पाकिस्तान की राजनीति की तरह यहां भी 'बाहरी खतरे' का नैरेटिव आंतरिक चुनौतियों को ढकने का औज़ार बनता रहा है।

नई सरकार की संरचना भी दिलचस्प है। मंत्रिमंडल में एक हिंदू और एक बौद्ध प्रतिनिधि को शामिल किया गया है, जो अल्पसंख्यकों के प्रति संतुलित संदेश देने का प्रयास है। परंतु दूसरी ओर, बीएनपी की ऐतिहासिक निकटता कट्टरपंथी तत्वों और पाकिस्तान समर्थक धड़ों से भी रही है। इस बार मुख्य विपक्ष के रूप में उभरी जमात-ए-इस्लामी की भूमिका भी कम महत्वपूर्ण नहीं है। इसके अतिरिक्त, हालिया विद्रोह में सक्रिय रही नेशनल सिटीजन पार्टी (एनसीपी) ने 'जुलाई चार्टर' के मुद्दे पर नई सरकार के सामने चुनौती खड़ी कर दी है।

जुलाई चार्टर के तहत प्रस्तावित सुधार बांग्लादेश की संवैधानिक और राजनीतिक संरचना में व्यापक बदलाव की मांग करते हैं। अधिकतम दो कार्यकाल की सीमा, प्रधानमंत्री और पार्टी अध्यक्ष पद का पृथक्करण, आपातकाल पर कड़े प्रावधान, उच्च सदन की स्थापना और स्वतंत्र संस्थाओं की नियुक्तियों में राष्ट्रपति की भूमिका बढ़ाना—ये सभी सुझाव सत्ता के विकेंद्रीकरण की दिशा में कदम माने जा सकते हैं। लेकिन बीएनपी के कई नेताओं का तर्क है कि संसद को संविधान सभा में बदलने का कोई स्पष्ट संवैधानिक प्रावधान नहीं है। इससे आने वाले दिनों में राजनीतिक टकराव की आशंका बढ़ गई है।

भारत के लिए सबसे पेचीदा प्रश्न शेख हसीना का प्रत्यर्पण है। लगभग डेढ़ वर्ष से भारत में रह रही शेख हसीना को लेकर ढाका की नई सरकार क्या रुख़ अपनाती है, यह द्विपक्षीय संबंधों का तापमान तय करेगा। यदि प्रत्यर्पण की औपचारिक मांग दोहराई जाती है, तो भारत के सामने कूटनीतिक संतुलन की कठिन परीक्षा होगी। एक ओर पड़ोसी देश की नई सरकार से सहयोग बनाए रखना है, दूसरी ओर एक पुराने और विश्वसनीय साझेदार के प्रति नैतिक और राजनीतिक दायित्व भी है।

सीमा की लंबाई और भू-राजनीतिक वास्तविकताएं भारत-बांग्लादेश संबंधों को अनिवार्य बनाती हैं। दोनों देशों के बीच 4000 किलोमीटर से अधिक लंबी सीमा है, जो सुरक्षा, व्यापार, आव्रजन और सांस्कृतिक संपर्क का माध्यम है। सीमा पार तस्करी, अवैध आव्रजन और उग्रवादी गतिविधियां हमेशा संवेदनशील मुद्दे रहे हैं। यदि राजनीतिक संबंध तनावपूर्ण होते हैं, तो इन मुद्दों का समाधान और कठिन हो जाता है।

चीन और पाकिस्तान की भूमिका भी नजरअंदाज नहीं की जा सकती। दक्षिण एशिया में चीन का बढ़ता निवेश, बंदरगाह परियोजनाएं और इंफ्रास्ट्रक्चर सहयोग बांग्लादेश के लिए आकर्षक विकल्प प्रस्तुत करते हैं। पाकिस्तान ऐतिहासिक और वैचारिक समीकरणों के आधार पर कुछ धड़ों से संपर्क बनाए रखता है। यदि तारिक सरकार अनुभवहीनता या घरेलू दबावों के चलते संतुलन खोती है, तो यह बाहरी शक्तियों को प्रभाव बढ़ाने का अवसर दे सकता है। भारत के लिए यह रणनीतिक चिंता का विषय है।

हालांकि, हर संकट अपने भीतर अवसर भी छुपाए होता है। बांग्लादेश की अर्थव्यवस्था को स्थिरता, निवेश और क्षेत्रीय सहयोग की आवश्यकता है। भारत उसके लिए बड़ा व्यापारिक साझेदार और ऊर्जा, कनेक्टिविटी तथा शिक्षा के क्षेत्र में महत्वपूर्ण सहयोगी है। पूर्वोत्तर भारत की कनेक्टिविटी परियोजनाएं, नदी जल बंटवारा, सीमा प्रबंधन और व्यापार गलियारों का विस्तार दोनों देशों के साझा हित में है। यदि नई सरकार व्यावहारिक दृष्टिकोण अपनाती है, तो संबंधों में नई शुरुआत संभव है।

जनमत का भी महत्व है। बांग्लादेश की युवा आबादी रोजगार, तकनीक और वैश्विक अवसर चाहती है। वह निरंतर टकराव की राजनीति से अधिक विकास को प्राथमिकता दे सकती है। यदि तारिक रहमान इस आकांक्षा को समझते हैं और भारत के साथ सहयोग को विकास की रणनीति से जोड़ते हैं, तो परिदृश्य सकारात्मक हो सकता है। परंतु यदि घरेलू राजनीतिक संघर्ष—विशेषकर जुलाई चार्टर और संवैधानिक संशोधनों पर—तेज होता है, तो सरकार के लिए बाहरी मुद्दों को राजनीतिक हथियार बनाना आसान विकल्प बन सकता है।

इतिहास यह भी बताता है कि भावनात्मक नारों की उम्र सीमित होती है, जबकि भूगोल स्थायी होता है। भारत और बांग्लादेश पड़ोसी हैं, सांस्कृतिक रूप से जुड़े हैं और आर्थिक रूप से परस्पर निर्भर भी। किसी भी सरकार के लिए दीर्घकालिक हित टकराव नहीं, बल्कि सहयोग में निहित हैं। यही कारण है कि नई दिल्ली ने शपथ ग्रहण में प्रतिनिधित्व भेजकर संवाद का दरवाजा खुला रखा है।

अंततः यह कहना जल्दबाजी होगी कि सत्ता परिवर्तन से संबंध स्वतः सुधर जाएंगे। यह इस बात पर निर्भर करेगा कि नई सरकार अपने घरेलू एजेंडे, विपक्ष के दबाव, संवैधानिक बहसों और बाहरी प्रभावों के बीच किस प्रकार संतुलन बनाती है। यदि परंपरागत भारत-विरोधी राजनीति का सहारा लिया गया, तो तनाव बढ़ सकता है। लेकिन यदि विकास, स्थिरता और क्षेत्रीय सहयोग को प्राथमिकता दी गई, तो दक्षिण एशिया में नई साझेदारी का अध्याय भी खुल सकता है।

तारिक रहमान के सामने चुनौती केवल सत्ता संभालने की नहीं, बल्कि इतिहास की विरासत और भविष्य की उम्मीदों के बीच पुल बनाने की है। क्या वे अतीत की कटुता से ऊपर उठकर व्यावहारिक कूटनीति का रास्ता चुनेंगे, या घरेलू राजनीतिक चक्रव्यूह में फंसकर वही पुराना रास्ता अपनाएंगे—यह आने वाला समय बताएगा। फिलहाल इतना निश्चित है कि भारत और बांग्लादेश दोनों के लिए यह दौर परीक्षा का है, जिसमें दूरदर्शिता, संयम और परिपक्व नेतृत्व की सख्त जरूरत होगी।

बदलती दुनिया में हमारी जगह कहां है?

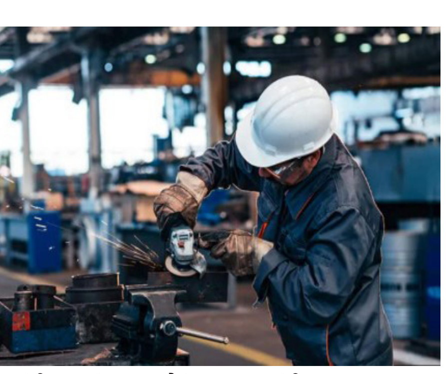

इक्कीसवीं सदी का तीसरा दशक आधा होने को है और दुनिया ऐसी रफ्तार से बदल रही है कि कल का सच आज पुराना लगने लगा है। कभी वैश्वीकरण को अंतिम सत्य माना गया था, आज राष्ट्रवाद, सामरिक प्रतिस्पर्धा और टेक्नोलॉजी की होड़ नई दिशा तय कर रही है। ऐसे दौर में सबसे अहम सवाल यही है—बदलती दुनिया में हमारी जगह कहां है? हम केवल दर्शक हैं या इस परिवर्तन के सक्रिय भागीदार? विश्व व्यवस्था अब एकध्रुवीय नहीं रही। शीत युद्ध के बाद जिस अमेरिकी वर्चस्व को स्थायी मान लिया गया था, वह अब बहुध्रुवीय संरचना में बदलता दिख रहा है। एशिया का उदय, अफ्रीका की नई संभावनाएं, यूरोप की आंतरिक चुनौतियां और इंडो-पैसिफिक का सामरिक महत्व—ये सभी संकेत देते हैं कि शक्ति का संतुलन खिसक रहा है। ऐसे में भारत जैसे देश के सामने अवसर भी है और परीक्षा भी।

भारत आज दुनिया की सबसे बड़ी आबादी वाला देश है, तेज़ी से बढ़ती अर्थव्यवस्था है और युवा जनसंख्या उसका सबसे बड़ा पूंजी-भंडार है। डिजिटल क्रांति ने गांव-गांव तक पहुंच बनाई है। यूपीआई, डिजिटल भुगतान, स्टार्टअप संस्कृति और अंतरिक्ष कार्यक्रमों ने यह साबित किया है कि हम केवल उपभोक्ता नहीं, नवाचारकर्ता भी बन सकते हैं। लेकिन सवाल यह है कि क्या यह गति हमें वैश्विक नेतृत्व की दिशा में ले जा रही है या हम अभी भी संभावनाओं के मोड़ पर खड़े हैं?

बदलती दुनिया में शक्ति केवल सैन्य ताकत से तय नहीं होती। टेक्नोलॉजी, डेटा, कृत्रिम बुद्धिमत्ता, सेमीकंडक्टर, हरित ऊर्जा और सप्लाई चेन पर पकड़ ही भविष्य की असली ताकत है। यदि हम इन क्षेत्रों में आत्मनिर्भरता और वैश्विक भागीदारी दोनों को संतुलित कर पाए, तभी हमारी जगह मजबूत होगी। केवल आयात-निर्यात के आंकड़े बढ़ाना पर्याप्त नहीं; ज्ञान-आधारित अर्थव्यवस्था का निर्माण जरूरी है।

भू-राजनीति के स्तर पर देखें तो भारत एक जटिल पड़ोस में स्थित है। पश्चिम में पाकिस्तान, उत्तर में चीन और पूर्व में म्यांमार-बांग्लादेश जैसे देश—हर दिशा में अलग तरह की चुनौतियां हैं। सीमा विवाद, आतंकवाद, अवैध तस्करी और समुद्री सुरक्षा के मुद्दे हमें सतर्क रखते हैं। साथ ही हिंद महासागर क्षेत्र में बढ़ती प्रतिस्पर्धा यह संकेत देती है कि समुद्री शक्ति और कूटनीति आने वाले समय में निर्णायक होगी। भारत यदि 'सुरक्षा प्रदाता' की भूमिका निभाना चाहता है, तो उसे नौसैनिक क्षमता, कूटनीतिक सक्रियता और आर्थिक विश्वसनीयता तीनों में संतुलन बनाना होगा।

आर्थिक दृष्टि से वैश्विक आपूर्ति श्रृंखलाएं पुनर्गठित हो रही हैं। महामारी और युद्धों ने यह सिखाया कि अत्यधिक निर्भरता जोखिम भरी है। कई बहुराष्ट्रीय कंपनियां 'चीन प्लस वन' रणनीति अपना रही हैं। यह भारत के लिए अवसर है कि वह विनिर्माण, लॉजिस्टिक्स और श्रम सुधारों के जरिए खुद को भरोसेमंद विकल्प के रूप में स्थापित करे। लेकिन इसके लिए केवल घोषणाएं नहीं, जमीनी सुधार आवश्यक हैं—भूमि, श्रम, न्यायिक प्रक्रिया और बुनियादी ढांचे में स्थिरता और पारदर्शिता चाहिए।

ऊर्जा सुरक्षा भी हमारी वैश्विक स्थिति तय करेगी। दुनिया हरित ऊर्जा की ओर बढ़ रही है, परंतु विकासशील देशों की ऊर्जा जरूरतें अभी भी पारंपरिक स्रोतों पर निर्भर हैं। भारत यदि सौर, पवन और हरित हाइड्रोजन में निवेश बढ़ाता है, तो वह न केवल आयात बिल घटा सकता है, बल्कि वैश्विक हरित परिवर्तन का नेतृत्व भी कर सकता है। जलवायु परिवर्तन के मुद्दे पर संतुलित और न्यायसंगत नीति अपनाकर भारत विकास और पर्यावरण के बीच सेतु बन सकता है।

सांस्कृतिक और सॉफ्ट पावर के स्तर पर भी भारत की भूमिका अहम है। योग, आयुर्वेद, बॉलीवुड, भारतीय खानपान और लोकतांत्रिक परंपरा—ये सभी हमारी पहचान को वैश्विक मंच पर विशिष्ट बनाते हैं। प्रवासी भारतीय समुदाय दुनिया के कई देशों में प्रभावशाली भूमिका निभा रहा है। यदि इस सॉफ्ट पावर को रणनीतिक रूप से जोड़ा जाए, तो यह हमारी कूटनीतिक ताकत को कई गुना बढ़ा सकता है। लेकिन केवल बाहरी दुनिया पर ध्यान देना पर्याप्त नहीं। बदलती दुनिया में हमारी जगह तभी मजबूत होगी, जब भीतर से हम मजबूत होंगे। सामाजिक समरसता, शिक्षा की गुणवत्ता, स्वास्थ्य सेवाओं की पहुंच और संस्थाओं की विश्वसनीयता—ये सभी आंतरिक स्तंभ हैं। यदि समाज में विभाजन बढ़ेगा, तो आर्थिक और कूटनीतिक उपलब्धियां भी टिकाऊ नहीं रहेंगी। लोकतंत्र की मजबूती ही हमारी सबसे बड़ी पूंजी है। विविधता में एकता केवल नारा नहीं, बल्कि रणनीतिक आवश्यकता है।

टेक्नोलॉजी की दुनिया में प्रतिस्पर्धा तेज है। कृत्रिम बुद्धिमत्ता, साइबर सुरक्षा और डेटा संरक्षण के क्षेत्र में नीतिगत स्पष्टता जरूरी है। डेटा नई सदी का तेल कहा जा रहा है। यदि हम अपने नागरिकों के डेटा की सुरक्षा करते हुए नवाचार को बढ़ावा दें, तो डिजिटल अर्थव्यवस्था वैश्विक मंच पर हमारी पहचान बना सकती है। लेकिन यदि हम केवल विदेशी प्लेटफॉर्म्स के उपभोक्ता बने रहे, तो मूल्य सृजन का लाभ बाहर चला जाएगा।

शिक्षा और कौशल विकास भी निर्णायक हैं। युवा आबादी तभी 'डेमोग्राफिक डिविडेंड' बनेगी, जब उसे गुणवत्तापूर्ण शिक्षा और रोजगार के अवसर मिलें। अन्यथा यही जनसंख्या बोझ बन सकती है। वैश्विक अर्थव्यवस्था में प्रतिस्पर्धा के लिए शोध, नवाचार और उद्यमिता को प्रोत्साहन देना होगा। विश्वविद्यालयों और उद्योग के बीच साझेदारी बढ़ानी होगी।

विदेश नीति में संतुलन की कला सबसे महत्वपूर्ण है। अमेरिका, रूस, यूरोप, जापान और खाड़ी देशों के साथ संबंधों को संतुलित रखते हुए भारत ने अब तक 'रणनीतिक स्वायत्तता' की नीति अपनाई है। बदलती दुनिया में यह संतुलन और कठिन होगा। किसी एक खेमे में पूरी तरह झुकना दीर्घकालिक हित में नहीं। बहुध्रुवीय दुनिया में बहुपक्षीय संबंध ही स्थिरता की गारंटी हैं।

सवाल यह भी है कि क्या हम केवल प्रतिक्रियात्मक नीति अपनाएंगे या पहल करेंगे? अंतरराष्ट्रीय मंचों पर जलवायु, डिजिटल शासन, वैश्विक स्वास्थ्य और आतंकवाद विरोधी प्रयासों में सक्रिय नेतृत्व की आवश्यकता है। यदि भारत समाधान प्रस्तुत करता है, तो उसकी साख बढ़ेगी। केवल आलोचना या विरोध से वैश्विक नेतृत्व नहीं मिलता।

ग्रामीण भारत और शहरी भारत के बीच की खाई भी हमारी वैश्विक स्थिति से जुड़ी है। यदि विकास असंतुलित रहेगा, तो सामाजिक असंतोष बढ़ेगा। बुनियादी ढांचे, कृषि सुधार और ग्रामीण उद्योगों को बढ़ावा देकर संतुलित विकास जरूरी है। आत्मनिर्भरता का अर्थ आत्मकेंद्रित होना नहीं, बल्कि क्षमता निर्माण है।

अंततः बदलती दुनिया में हमारी जगह कोई और तय नहीं करेगा; हमें स्वयं तय करनी होगी। यह केवल सरकार की जिम्मेदारी नहीं, बल्कि समाज, उद्योग, शिक्षा जगत और नागरिकों की साझा भूमिका है। हमें आत्मविश्वास और आत्ममंथन दोनों की जरूरत है। आत्मविश्वास इसलिए कि हमारे पास क्षमता है; आत्ममंथन इसलिए कि कमियां भी हैं।

'हिट एंड रन' मामलों में और कितनी जानें गंवाएंगे हम?

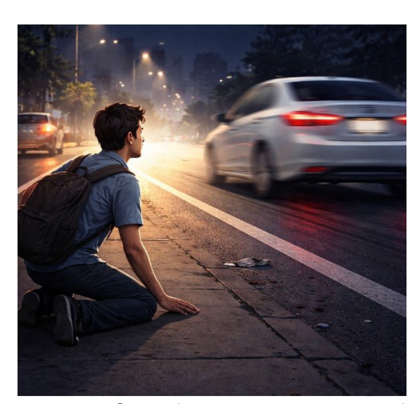

सड़क पर निकला हर व्यक्ति—चाहे वह पैदल हो, साइकिल पर हो, बाइक पर या कार में—अपनी मंज़िल तक सुरक्षित पहुंचने की उम्मीद लेकर चलता है। लेकिन जब कोई तेज़ रफ्तार वाहन किसी को टक्कर मारकर बिना रुके भाग जाता है, तो केवल एक दुर्घटना नहीं होती, बल्कि इंसानियत भी घायल होती है। 'हिट एंड रन' यानी टक्कर मारकर फरार हो जाना—यह शब्द अब खबरों की सुर्खियों का स्थायी हिस्सा बन चुका है। हर कुछ दिनों में किसी शहर, कस्बे या हाईवे से ऐसी खबर आती है कि किसी मासूम की जान चली गई और आरोपी वाहन चालक मौके से फरार हो गया। तब मन में यही सवाल उठता है—हिट एंड रन मामलों में और कितनी जानें गंवाएंगे हम?

भारत जैसे विशाल देश में सड़क दुर्घटनाएं पहले से ही गंभीर समस्या हैं। तेज रफ्तार, नियमों की अनदेखी, खराब सड़कें, ओवरलोड वाहन, नशे में ड्राइविंग—ये सभी कारण मिलकर दुर्घटनाओं की संख्या बढ़ाते हैं। लेकिन हिट एंड रन की घटनाएं इसलिए और भी भयावह हैं क्योंकि इनमें दुर्घटना के बाद जिम्मेदारी से भाग जाना शामिल होता है। कई मामलों में पीड़ित व्यक्ति को समय पर अस्पताल पहुंचा दिया जाए तो उसकी जान बच सकती है। परंतु आरोपी के फरार हो जाने से 'गोल्डन ऑवर' निकल जाता है और एक ज़िंदगी हमेशा के लिए बुझ जाती है। यह समस्या केवल कानून का विषय नहीं है, बल्कि सामाजिक मानसिकता का भी दर्पण है। जब कोई चालक दुर्घटना के बाद रुकने के बजाय भागने का फैसला करता है, तो वह केवल कानूनी सज़ा से बचने की कोशिश नहीं कर रहा होता, बल्कि वह अपनी नैतिक जिम्मेदारी से भी भाग रहा होता है। डर, घबराहट या सज़ा की आशंका—ये सब कारण हो सकते हैं, लेकिन क्या किसी की जान से बढ़कर कुछ हो सकता है? सवाल यह है कि हमने ऐसा माहौल क्यों बना दिया है जिसमें लोग मदद करने के बजाय भागना बेहतर समझते हैं?

कानूनी ढांचे की बात करें तो मोटर वाहन कानूनों में हिट एंड रन मामलों के लिए दंड का प्रावधान है। हाल के वर्षों में कानूनों को सख्त करने की चर्चा भी हुई है। लेकिन सख्त कानून तभी प्रभावी होते हैं जब उनका क्रियान्वयन मजबूत हो। कई बार देखा गया है कि दुर्घटना के बाद पुलिस जांच में देरी, सीसीटीवी फुटेज की कमी या गवाहों का सहयोग न मिलना—इन सबके कारण आरोपी आसानी से बच निकलते हैं। जब दंड का भय कमजोर पड़ता है, तो अपराध का जोखिम लेने की प्रवृत्ति बढ़ती है।

सड़क सुरक्षा का एक बड़ा पहलू है—निगरानी और तकनीक। महानगरों में कैमरे और ट्रैफिक मॉनिटरिंग सिस्टम लगाए गए हैं, लेकिन छोटे शहरों और ग्रामीण क्षेत्रों में यह व्यवस्था अभी भी सीमित है। हाईवे पर लंबी दूरी तक कोई प्रत्यक्ष निगरानी नहीं होती। यदि दुर्घटना रात में हो जाए, तो आरोपी वाहन की पहचान करना और कठिन हो जाता है। ऐसे में आधुनिक तकनीक—जैसे ऑटोमैटिक नंबर प्लेट रिकग्निशन, इंटेलिजेंट ट्रैफिक सिस्टम और डैश कैम डेटा—को व्यापक स्तर पर लागू करना आवश्यक है। तकनीक अपराध को रोकने का संपूर्ण समाधान नहीं है, परंतु यह जांच को तेज और सटीक बना सकती है।

हिट एंड रन की घटनाओं का एक पहलू 'गुड सेमेरिटन' यानी नेकदिल मददगार से भी जुड़ा है। कई लोग दुर्घटना स्थल पर घायल व्यक्ति को देखकर भी आगे नहीं बढ़ते, क्योंकि उन्हें डर रहता है कि पुलिस पूछताछ, कोर्ट-कचहरी और कानूनी उलझनों में फंसना पड़ेगा। जबकि कानून में ऐसे मददगारों को संरक्षण देने का प्रावधान है। जरूरत है इस जागरूकता को बढ़ाने की, ताकि लोग निडर होकर घायल को अस्पताल पहुंचाएं। कई बार आरोपी भले ही भाग जाए, लेकिन अगर आसपास के लोग तत्परता दिखाएं तो जान बच सकती है।

सामाजिक दृष्टिकोण से देखें तो सड़क पर अनुशासन की कमी भी एक बड़ा कारण है। लाल बत्ती पार करना, गलत दिशा में वाहन चलाना, हेलमेट या सीट बेल्ट न पहनना—ये सब आम व्यवहार बन चुके हैं। जब नियमों को हल्के में लेने की संस्कृति विकसित हो जाती है, तो गंभीर दुर्घटनाएं भी बढ़ती हैं। हिट एंड रन केवल एक घटना नहीं, बल्कि उस व्यापक लापरवाही का परिणाम है जो सड़क पर दिखाई देती है।

इसके अलावा, नशे में ड्राइविंग भी एक गंभीर समस्या है। शराब या नशीले पदार्थों के प्रभाव में चालक का निर्णय लेने की क्षमता घट जाती है। दुर्घटना होने पर वह घबराकर भाग सकता है। इस पर कड़ी निगरानी, नियमित जांच और कठोर दंड आवश्यक है। सार्वजनिक परिवहन चालकों और भारी वाहनों के ड्राइवरों के लिए तो विशेष रूप से सख्त परीक्षण और प्रशिक्षण अनिवार्य होना चाहिए।

मीडिया की भूमिका भी महत्वपूर्ण है। जब हिट एंड रन की खबरें सामने आती हैं, तो कुछ दिनों तक आक्रोश दिखता है, लेकिन फिर सब सामान्य हो जाता है। यह मुद्दा केवल सनसनी तक सीमित नहीं रहना चाहिए। सड़क सुरक्षा को निरंतर जन-अभियान का हिस्सा बनाना होगा। स्कूलों और कॉलेजों में ट्रैफिक नियमों और नागरिक जिम्मेदारी पर शिक्षा दी जानी चाहिए। बच्चों और युवाओं में यह समझ विकसित करनी होगी कि वाहन चलाना अधिकार नहीं, जिम्मेदारी है।

सरकार और प्रशासन की भूमिका नीतिगत सुधारों तक सीमित नहीं हो सकती। सड़कों की गुणवत्ता, स्ट्रीट लाइट की व्यवस्था, स्पष्ट संकेतक और सुरक्षित पैदल पार पथ—ये सब दुर्घटनाओं को कम करने में मदद करते हैं। कई हिट एंड रन घटनाएं ऐसी जगहों पर होती हैं जहां रोशनी कम होती है या सड़क डिजाइन में खामियां होती हैं। शहरी नियोजन और सड़क निर्माण में सुरक्षा को प्राथमिकता देनी होगी।

एक और महत्वपूर्ण पहलू है—बीमा और मुआवजा व्यवस्था। हिट एंड रन मामलों में पीड़ित परिवारों को त्वरित आर्थिक सहायता मिलनी चाहिए। कई बार परिवार का कमाने वाला सदस्य ही दुर्घटना का शिकार होता है, जिससे पूरा घर आर्थिक संकट में आ जाता है। यदि सरकारी कोष या बीमा योजना के तहत शीघ्र सहायता मिले, तो पीड़ित परिवार को कुछ राहत मिल सकती है। हालांकि, यह राहत किसी की जान की भरपाई नहीं कर सकती, लेकिन न्याय की दिशा में एक कदम हो सकती है।

हमें यह भी समझना होगा कि सड़क केवल गाड़ियों के लिए नहीं होती। पैदल यात्री, बुजुर्ग, बच्चे और विकलांग व्यक्ति भी उसी सड़क का हिस्सा हैं। यदि हम केवल वाहन चालक की सुविधा के आधार पर सड़क डिजाइन करेंगे, तो कमजोर वर्ग सबसे अधिक जोखिम में रहेगा। फुटपाथ, ज़ेब्रा क्रॉसिंग और ट्रैफिक सिग्नल का सम्मान अनिवार्य होना चाहिए।

आखिरकार, हिट एंड रन की समस्या का समाधान केवल कानून या तकनीक से नहीं होगा। यह सामूहिक चेतना का प्रश्न है। हमें अपने भीतर झांककर देखना होगा कि क्या हम सड़क पर उतने ही जिम्मेदार हैं जितना अपने घर में? क्या हम दुर्घटना के बाद मदद करने का साहस रखते हैं? क्या हम अपने बच्चों को यह सिखा रहे हैं कि गलती हो जाए तो भागना नहीं, बल्कि जिम्मेदारी लेना ही सच्ची बहादुरी है?

जब तक समाज में यह भावना मजबूत नहीं होगी कि हर जीवन अनमोल है, तब तक हिट एंड रन की घटनाएं पूरी तरह समाप्त नहीं होंगी। लेकिन यदि कानून सख्त हो, तकनीक सक्षम हो, प्रशासन सतर्क हो और समाज संवेदनशील हो—तो निश्चित ही इन घटनाओं में कमी लाई जा सकती है।

ईज ऑफ डूइंग बिजनेस और ईज ऑफ लिविंग के लिए भजनलाल शर्मा की महत्वपूर्ण पहल

-अनावश्यक अनुपालन और विनियमों को राज्य सरकार चरणबद्ध रूप से करेगी कम

जयपुर (रॉयल पत्रिका)। मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा के नेतृत्व में राज्य सरकार ने ईज ऑफ डूइंग बिजनेस और ईज ऑफ लिविंग को बढ़ावा देने के लिए व्यवसायों और आमजन को गैर जरूरी अनुपालन एवं विनियमों से राहत देने की दिशा में एक और महत्वपूर्ण पहल की है। राज्य सरकार भू उपयोग, भवन और निर्माण, श्रम, व्यवसायों के लिए लाइसेंस प्रक्रिया और जन उपयोगिता सहित कई महत्वपूर्ण क्षेत्रों में चरणबद्धरूप से नियमों और प्रक्रियाओं का सरलीकरण करने जा रही है। मुख्य सचिव वी. श्रीनिवास के निर्देशन में इससे संबंधित कार्य योजना को अंतिम रूप दे दिया गया है। इस कार्य योजना के अनुसार चुनिंदा श्रेणियों में उचित भूमि उपयोग के लिए भू-रूपांतरण आवश्यकताओं को समाप्त कर प्रक्रियात्मक देरी कम करने के लिए आंध्र प्रदेश में लागू की गई प्रणाली का अध्ययन किया जाएगा। जब तक निषिद्ध न हो तब तक सभी गतिविधियों की अनुमति के सिद्धांत पर मिश्रित भूमि-उपयोग विकास को स्वतः अनुमत करने के लिए बिल्डिंग बायलॉज और मास्टर प्लान में आवश्यक संशोधन पर विचार किया जा रहा है। वहीं, सहूलियत के लिए जोन-वार निषिद्ध सूचियां भी स्पष्ट रूप से परिभाषित की जाएंगी। कार्य योजना के अंतर्गत औद्योगिक क्लस्टर्स में खाली पड़ी भूमि का समुचित उपयोग सुनिश्चित करने हेतु औद्योगिक क्षेत्र भूमि आवंटन नीति को उदार बनाने, औद्योगिक क्षेत्र में श्रमिकों को सस्ते आवास उपलब्ध कराने तथा अपशिष्ट उपचार और फायर सेफ्टी सिस्टम जैसे आधारभूत ढांचे के लिए सार्वजनिक-निजी भागीदारी को प्रोत्साहित करने के लिए जरूरी कदम उठाए जाएंगे। ऊंचाई संबंधी प्रतिबंधों और सेटबैक संबंधी प्रावधानों को तर्कसंगत बनाते हुए फायर सेफ्टी से जुड़ी ग्लोबल बेस्ट प्रैक्टिस को अपनाने के लिए बिल्डिंग बायलॉज और फायर सेफ्टी नियमों में आवश्यक बदलाव किए जाएंगे। निवेशकों को भवन और निर्माण से जुड़ी सभी अनापत्तियां जारी करने, औद्योगिक क्लस्टर्स से संबंधित सभी अप्रूवल देने और स्वास्थ्य विभाग से जुड़े सभी लाइसेंस जारी

करने के लिए सिंगल प्वाइंट कॉन्टैक्ट के रूप में नोडल एजेंसियां नियुक्त करने पर विचार किया जा रहा है। इसके लिए वर्किंग ग्रुप बना कर विभिन्न राज्यों में अपनाए गए मॉडल्स का अध्ययन किया जाएगा। इसी प्रकार, व्यवसायों के लिए जरूरी लाइसेंस का सूचीकरण किया जाएगा, ताकि एक ही अनुपालना के लिए दोहरे लाइसेंस की जरूरत समाप्त की जा सके। इसके लिए अतिरिक्त मुख्य सचिव उद्योग की अध्यक्षता में ऊर्जा, नगरीय विकास, एलएसजी, श्रम, प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड सहित विभिन्न विभागों के सचिवों का एक वर्किंग ग्रुप बनाया जाएगा। दुकानों और वाणिज्यिक प्रतिष्ठानों के लिए सूचना के आधार पर डीम्ड लाइसेंसिंग के माध्यम से आजीवन पंजीकरण की अनुमति देने और ऐसे सभी प्रतिष्ठानों के लिए 24×7 संचालन की अनुमति देने पर भी सरकार विचार कर रही है। वजन एवं माप उपकरणों के लिए लाइसेंस सरलीकरण की भी तैयारी है ताकि मैन्युफैक्चरर और डीलर को बिना सरकारी निरीक्षण के स्वघोषणा के आधार पर स्वतः अनुमोदन मिल सके। वहीं, कम जोखिम वाली श्रेणियों में फील्ड निरीक्षण की अनिवार्यता को हटाकर स्वघोषणा के आधार पर विभिन्न विद्युत वितरण कंपनियों द्वारा बिजली कनेक्शन जारी करने का प्रावधान भी कार्ययोजना में शामिल है। औद्योगिक निवेश को गति देने के लिए प्राथमिकता वाले क्षेत्रों की पहचान करने, परियोजनाओं के शुरू होने में लगने वाले वास्तविक समय को कम करने के लिए सिंगल विंडो सिस्टम को मजबूत बनाया जाएगा। साथ ही, एमएसएमई के लिए सरकारी और निजी क्षेत्र में स्थापित सभी टेस्टिंग सुविधाओं की एकीकृत राज्य-स्तरीय डायरेक्टरी बनाई जाएगी। विधि विभाग के स्तर पर सेक्टरवार सभी राज्य कानूनों, नियमों, विनियमों और सरकारी आदेशों की एक केंद्रीकृत डिजिटल रिपॉजिटरी बनाई जाएगी। इन सभी अनुपालन और विनियम बदलावों के कार्यान्वयन को आसानी से एक ही बार में लागू करने के लिए कार्ययोजना अनुसार मिले सुझावों को शामिल करते हुए भारत सरकार से प्राप्त ड्राफ्ट के आधार पर एक विधेयक तैयार कर अनुमोदन के लिए रखा जाएगा। उल्लेखनीय है कि राज्य सरकार द्वारा गत वर्ष भी दंड के स्थान पर न्याय एवं विश्वास आधारित विनियमन को बढ़ावा देने के लिए राजस्थान जन विश्वास (उपबन्धों का संशोधन) लाया गया है। इसी कड़ी में, सुशासन व जन सहभागिता में वृद्धि किये जाने के लिए अगली पीढ़ी के सुधार के रूप में राजस्थान जन विश्वास अधिनियम 2.0 लाए जाने की घोषणा राज्य बजट 2026-27 में की गई है।

प्रश्नकाल में केवल प्रश्न–उत्तर, वाद-विवाद नहीं –देवनानी

जयपुर (रॉयल पत्रिका)। राजस्थाऔन विधान सभा अध्यसक्ष वासुदेव देवनानी ने गुरूवार को सदन की कार्यवाही के दौरान स्पष्ट व्यवस्था देते हुए कहा कि प्रश्नकाल का उद्देश्य केवल सदस्यों द्वारा पूछे गए प्रश्नों के उत्तर प्राप्त करना है, न कि वाद-विवाद या विस्तृत चर्चा करना। स्पीकर देवनानी ने कहा कि प्रश्नकाल लोकतांत्रिक व्यवस्था का एक महत्वपूर्ण अंग है, जिसमें जनप्रतिनिधि सरकार से जनहित से जुड़े मुद्दों पर तथ्यात्मक जानकारी प्राप्त करते हैं। अतः प्रश्नकाल के दौरान अनावश्यक बहस, आरोप-प्रत्यारोप या विषयांतर चर्चा से बचना चाहिए। उन्होंने सभी माननीय सदस्यों से कहा कि वे नियमों एवं परंपराओं का पालन करते हुए संक्षिप्त एवं स्पष्ट प्रश्न पूछें तथा मंत्रीगण भी निर्धारित विषय पर सटीक और तथ्यात्मक उत्तर दें, जिससे सदन की कार्यवाही सुचारु, मर्यादित और प्रभावी ढंग से संचालित हो सके। देवनानी ने कहा कि प्रश्नकाल की गरिमा बनाए रखना हम सभी की सामूहिक जिम्मेदारी है और इससे जनता की अपेक्षाओं के अनुरूप सदन की कार्यप्रणाली को और अधिक सुदृढ़ किया जा सकता है। देवनानी ने कहा कि पूर्व में दी गई अध्य क्षीय व्यकवस्था में अनुपूरक प्रश्नत मूल प्रश्नप से ही संबंधित होना चाहिये। सदस्य को दो ही पूरक प्रश्नअ पूछने की अनुमति है।

देवनानी को 'उम्र 18 की' प्रति भेंट—

राजस्था न विधान सभा अध्य क्ष वासुदेव देवनानी को युवा लेखक हर्ष वर्धन पाण्डे य ने अपनी नवीन पुस्तक उम्र 18 की प्रति भेंट की। देवनानी ने युवा लेखक को बधाई एवं शुभकामनाएं दी।

सूर्य किरण एरोबैटिक टीम एवं सारंग हेलीकॉप्टर डिस्प्ले टीम ने युवाओं से किया संवाद

-एनसीसी कैडेट्स, स्कूली एवं मूक बधिर विद्यार्थियों को किया प्रेरित

जयपुर (रॉयल पत्रिका)। भारतीय वायु सेना की ब्रांड एंबेसडर टीमों सूर्य किरण एरोबैटिक टीम और सारंग हेलीकॉप्टर डिस्प्ले टीम ने गुरुवार को जयपुर के युवाओं से संवाद कर उन्हें राष्ट्र सेवा, अनुशासन और उत्कृष्टता के लिए प्रेरित किया। संवाद कार्यक्रम हरिश्चन्द्र माथुर राजस्थान राज्य लोक प्रशासन संस्थान के भगवत सिंह मेहता सभागार में आयोजित हुआ, जिसमें एनसीसी कैडेट्स, विभिन्न विद्यालयों के छात्र-छात्राएं एवं मूक-बधिर विद्यार्थी उपस्थित रहे। टीम सदस्यों ने विद्यार्थियों को वायुसेना में करियर के अवसरों, कठोर प्रशिक्षण प्रक्रिया, टीमवर्क और समर्पण के महत्व से अवगत कराया। साथ ही 20 एवं 22 फरवरी को जल महल की पाल पर प्रस्तावित भव्य एयर शो की जानकारी साझा की। पायलटों ने कहा कि जयपुरवासियों के लिए यह अवसर भारतीय वायुसेना के साहस, सटीकता और अनुशासन को सजीव रूप में देखने का यादगार क्षण होगा। आयोजन में जानकारी दी गई कि वर्ष 1996 में स्थापित सूर्य किरण एरोबैटिक टीम एशिया की एकमात्र नौ-विमान एरोबैटिक टीम है और विश्व की चुनिंदा टीमों में शामिल है। यह टीम लाल-सफेद रंग के आकर्षक Hawk Mk-132 जेट विमानों पर उड़ान भरते हुए लूप, बैरल रोल, उलटी उड़ान तथा लोकप्रिय 'डीएनए' संरचना जैसे रोमांचक

करतब प्रस्तुत करती है। अब तक 800 से अधिक प्रदर्शनों के माध्यम से टीम ने चीन, श्रीलंका, म्यांमार, थाईलैंड, सिंगापुर और संयुक्त अरब अमीरात सहित अनेक देशों में भारतीय वायुसेना की पेशेवर दक्षता का प्रदर्शन किया है। टीम में 14 पायलट शामिल हैं। टीम लीडर ग्रुप कैप्टन अजय दसरथी (सु-30 एमकेआई के अनुभवी पायलट) हैं तथा डेप्यूटी लीडर विंग कमांडर तेजेश्वर सिंह हैं। अन्य पायलटों एवं तकनीकी अधिकारियों की समर्पित टीम सटीक गठन उड़ान को संभव बनाती है। उल्लेखनीय है कि टीम के तीन पायलट विंग कमांडर राजेश काजला, विंग कमांडर अंकित वशिष्ठ और स्क्वाड्रन लीडर संजेश सिंह जयपुर से ही हैं। हाल ही में विमानों में स्वदेशी स्मोक पॉड्स का एकीकरण किया गया है, जिसे वायुसेना के 11 बेस रिपेयर डिपो, नासिक में विकसित किया गया है। इससे प्रदर्शन के दौरान आकाश में तिरंगे के रंगों की आकर्षक छटा बिखेरी जा सकती है, जो आत्मनिर्भर भारत की भावना को दर्शाती है। वहीं, आयोजन में यह भी जानकारी दी गई कि सारंग हेलिकॉप्टर डिस्प्ले टीम अपने रंग-बिरंगे हेलिकॉप्टरों और सटीक सामूहिक उड़ान के लिए विश्वभर में प्रसिद्ध है। वर्ष 2004 में सिंगापुर में आयोजित एशियन एरोस्पेस शो में पहली अंतरराष्ट्रीय प्रस्तुति के बाद से टीम 390 से अधिक स्थलों पर 1200 से अधिक प्रदर्शन कर चुकी है। टीम ध्रुव हेलिकॉप्टर का संचालन करती है, जिसे हिंदुस्तान एयरोनॉटिक्स लिमिटेड द्वारा डिजाइन एवं विकसित किया गया है। यह सर्व-मौसम और बहु-उद्देश्यीय क्षमता वाला हेलिकॉप्टर है, जो 'आत्मनिर्भरता' की भावना का सशक्त प्रतीक है। 20 फरवरी तक अभ्यास उड़ानों के पश्चात 22 फरवरी को जलमहल के ऊपर पाँच हेलिकॉप्टरों का भव्य सामूहिक प्रदर्शन जयपुरवासियों को रोमांचित करेगा। सूर्य किरण एरोबैटिक टीम और सारंग हेलिकॉप्टर डिस्प्ले टीम का आदर्श वाक्य "सदैव सर्वोत्कृष्ट" उत्कृष्टता, अनुशासन और राष्ट्रभक्ति की भावना को प्रतिबिंबित करता है। युवाओं के साथ संवाद कार्यक्रम ने न केवल उन्हें प्रेरित किया, बल्कि भारतीय वायुसेना के साहसिक एवं तकनीकी कौशल की झलक भी प्रस्तुत की। जयपुर का आसमान 20 और 22 फरवरी को इसी जोश और गौरव का साक्षी बनेगा।

नर सेवा को नारायण सेवा मानकर जन सेवा करनी चाहिए - मीणा

मनोहरपूर (रॉयल पत्रिका)। जगदीश मीणा प्रदेश सचिव राजस्थान कांग्रेस प्रदेश कांग्रेस कमेटी ने कहा कि नर सेवा को नारायण सेवा मानकर चंद्र भगवान जन कल्याण संस्थान के कार्यकर्ताओं द्वारा होटल चंद्र महल बस स्टैंड पावटा पर एक मेगा चिकित्सा शिविर का आयोजन श्रीमती प्रभाती देवी स्वर्गीय नाथूराम मीणा एवं भगवान सहाय मीणा की पुण्य स्मृति में पत्रकार जगदीश सेन समाजसेवी सुरेश शर्मा बंसी गुर्जर हेमराज कुमावत वेद प्रकाश बाकोलिया के सानिध्य में आयोजित हुआ । कार्यक्रम का उद्घाटन संत शिरोमणि गोपाल आश्रम के महामंडलेश्वर ज्ञान दास जी महाराज के कर कमलो द्वारा किया गया इस कार्यक्रम में जैन ent अस्पताल के चिकित्सकों द्वारा 380 मरीजों को निशुल्क जांच एवं निशुल्क दवाइयां वितरण की गई पांच लोगों को सुनने की मशीन वितरण की गई। इस कार्यक्रम में बीडीएम अस्पताल एवं पावटा चिकित्सालय के चिकित्सकों द्वारा 80 लोगों को आंखों की दवाइयां वितरण की गई एवं 11 लोगों का ऑपरेशन करने के लिए चिन्हित किया गया फिजिशियन चिकित्सक द्वारा 113 लोगों को जांच एवं दवा दी गई कार्यक्रम में 21 बुजुर्ग जोड़ों को साल एवं राजस्थानी साफा भेंट करके सम्मानित किया गया एवं माता-पिता पूजन भी किया गया। कार्यक्रम का संचालन जगदीश प्रसाद सेन ने किया धन्यवाद भाषण सुरेश शर्मा बागावास ने किया । कार्यक्रम में कांग्रेस के सीनियर नेता रामनिवास यादव सामाजिक कार्यकर्ता दीपक शर्मा, गुमानजी मीणा, आदिवासी जिला कांग्रेस के अध्यक्ष जगदीश मीणा, मास्टर पंचायत समिति सदस्य वेद प्रकाश बाकोलिया, समाजसेवी बंसी गुर्जर, गोवर्धन कुमावत, भोमाराम यादव, शंकर जांगिड़, ओम प्रकाश शर्मा, कैलाश स्वामी सहित हजारों लोग कार्यक्रम में शामिल हुए। इस मौके पर बोलते हुए जगदीश मीणा ने कहा कि मैं आजीवन जन सेवा का कार्य करते हुए संतो बुजुर्गों का आशीर्वाद प्राप्त करता रहूंगा।

रमजान रहमत और बरकत का महीना हैं - सिंह

मनोहरपूर (रॉयल पत्रिका)। अखिल भारतीय किसान कॉंग्रेस के राष्ट्रीय महासचिव दिगराज सिंह शाहपुरा ने रमजान उल मुबारक महीने का चाँद दिखने पर मुस्लिम समुदाय के लोगों को "रमजान के महीने की मुबारकबाद दी है! सिंह ने कहा कि इस पवित्र महीने में आप सभी को शांति, खुशी और बरकत मिले। सिंह ने कहा कि रमजान रहमत और बरकत का महीना हैं। उल्लेखनीय हैं कि रमजान के दौरान विभिन्न शहरों में विशेष आयोजन किए जाएंगे, जैसे कि नमाज, तरावीह, आदि कार्यक्रम। "रमजान का महीना मुसलमानों के लिए एक पवित्र महीना है, जिसमें वे अपने गुनाहों की माफी मांगते हैं और अपने जीवन को सुधारने का संकल्प लेते हैं। रमजान के दौरान विभिन्न प्रकार के विशेष व्यंजन बनाए जाते हैं, जैसे कि सेंवया, हलीम, बिरयानी, और फल।" रमजान के दौरान विभिन्न प्रकार के दान और सेवा के कार्य किए जाते हैं, जैसे कि गरीबों को खाना खिलाना और जरूरतमंदों की मदद करना।"

सुशासन की दिशा में जयपुर विकास प्राधिकरण का बड़ा कदम

-जेडीए में आरक्षण पत्र जारी करने की प्रक्रिया होगी ऑनलाइन

जयपुर (रॉयल पत्रिका)। मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा की मंशानुसार सुशासन एवं ई-गवर्नेंस को सुदृढ़ करते हुए जयपुर विकास प्राधिकरण ने आरक्षण पत्र जारी करने की प्रक्रिया को एंड-टू-एंड ऑनलाइन करने का निर्णय लिया है। आयुक्त सिद्धार्थ महाजन के निर्देशानुसार विकसित की जा रही इस डिजिटल प्रणाली के तहत दस्तावेज़ अपलोड, ऑनलाइन परीक्षण, अनुमोदन एवं निर्गमन तक की संपूर्ण कार्यवाही पोर्टल आधारित होगी। नई व्यवस्था के माध्यम से आवेदक घर बैठे अपने प्रकरण की अद्यतन स्थिति, आवश्यक टिप्पणियाँ एवं संबंधित अभिलेख देख सकेंगे। इससे न केवल पारदर्शिता सुनिश्चित होगी, बल्कि प्रक्रिया में लगने वाला समय भी घटेगा और नागरिकों को कार्यालयों के अनावश्यक चक्कर नहीं लगाने पड़ेंगे।

सुझावों से संवरता विकास का खाका—

जयपुर विकास प्राधिकरण की कार्यप्रणाली को अधिक प्रभावी एवं जवाबदेह बनाने के उद्देश्य से आयुक्त महाजन ने गुरुवार को आयोजित संवाद कार्यक्रम में विभिन्न हितधारकों से विस्तृत चर्चा की। बैठक में शहरी नियोजन, प्रक्रियागत सरलीकरण, जनसुविधाओं के विस्तार तथा जयपुर के समग्र विकास से जुड़े मुद्दों पर विचार-विमर्श किया गया साथ ही कार्यक्रम में पधारे आमजन के लम्बित प्रकरणों का भी हाथों

हाथ अवोलकन कर संबंधित उपायुक्त को समयबद्ध तरीके से निस्तारण के निर्देश दिए । इस दौरान जेडीए आयुक्त ने जनसुनवाई प्रकरणों की समीक्षा भी की साथ ही अधिकारियों को सुझावों का परीक्षण करवा कर प्राथमिकता के साथ लागू करने के निर्देश दिये। संवाद कार्यक्रम में पधारे हितधारकों ने जेडीए की इस पहल पर संतोष जताया है। आयुक्त महाजन ने अधिकारियों को निर्देशित किया कि ऑनलाइन प्रणाली लागू करने के साथ तीन वर्ष से अधिक पुराने लंबित प्रकरणों एवं लिगेसी डेटा का परीक्षण कर त्वरित निस्तारण सुनिश्चित करें। इससे अभिलेखों का सुव्यवस्थित संधारण, लंबित मामलों का शीघ्र निस्तारण तथा प्रशासनिक पारदर्शिता को बल मिलेगा। गौरतलब है कि जेडीए द्वारा विभिन्न योजनाओं में अधिग्रहित भूमि के बदले पूर्व में जारी मैनुअल आरक्षण पत्रों का चरणबद्ध डिजिटलीकरण भी प्रारंभ कर दिया गया है। पुराने हस्तलिखित एवं मुद्रित अभिलेखों का डेटा एंट्री के माध्यम से कंप्यूटरीकरण कर उन्हें प्राधिकरण की आधिकारिक वेबसाइट पर अपलोड किया जा रहा है, जिससे संबंधित हितधारक बिना कार्यालय आए आवश्यक जानकारी प्राप्त कर सकें। अब जयपुर विकास प्राधिकरण ने एक कदम और आगे बढ़ाते हुए आगामी समय में जारी किए जाने वाले सभी आरक्षण पत्र ई-प्रणाली के माध्यम से तैयार करने का निर्णय लिया है। जिसके तहत अधिकृत अधिकारी द्वारा ई-साइन किए गए दस्तावेज़ सीधे ऑनलाइन उपलब्ध रहेंगे। इससे दस्तावेज़ों की प्रामाणिकता सुनिश्चित होगी, रिकॉर्ड प्रबंधन सुव्यवस्थित होगा साथ ही मानवीय त्रुटियों की संभावना न्यूनतम रहेगी। उल्लेखनीय है कि डिजिटल माध्यम से सेवा प्रदायगी को सरल बनाकर प्राधिकरण ने शहर के सुव्यवस्थित विकास एवं जनसुविधाओं के सशक्तीकरण की दिशा में अपनी प्रतिबद्धता को पुनः स्थापित किया है। जयपुर विकास प्राधिकरण की यह पहल प्रशासनिक दक्षता, पारदर्शिता एवं नागरिक-केंद्रित सेवाओं को बढ़ावा देने की दिशा में एक सुदृढ़ कदम साबित होगी।

रोजेदारों ने रोजा रखकर रब को अपने सब्र का इम्तिहान दिया

मनोहरपूर (रॉयल पत्रिका)। रमजान का पवित्र माह शुरू होते ही मुस्लिम समाज के लोग नेकियां कमाने में लग गए है आज प्रथम रोजा था रोजेदारों ने 12 घण्टे 50 मिनट का रोजा रखकर व भूखे प्यासे रहकर अपने रब को अपने सब्र का इम्तिहान दिया हैं। मगरिब की अजान होने की आवाज के साथ मे खिजुर से रोजा खोला गया व रोजेदारों ने भारत देश की सलामती की दुआएं की गई। छोटे-छोटे बच्चे भी नमाज पढ़ने व रोजा रखने की जिद कर रहे है। वृद्ध महिला पुरुष भी अपनी आख़िरत को संवारने के लिए ईबादत कर रहे है।

इंडिया स्किल्स क्षेत्रीय प्रतियोगिता में राजस्थान के युवाओं का दबदबा

-17 प्रतिभागी नेशनल स्टेज के लिए चयनित

जयपुर (रॉयल पत्रिका)। कौशल विकास के लिए राज्य की नोडल एजेंसी, राजस्थान कौशल एवं आजीविका विकास निगम (RSLDC), राजस्थान के उन 17 उम्मीदवारों की उपलब्धि का जश्न मना रही है जिन्होंने आधिकारिक तौर पर 'इंडिया स्किल्स नेशनल प्रतियोगिता' के लिए क्वालीफाई कर लिया है। प्रबंध निदेशक ऋषव मंडल ने बताया कि RSLDC उन 17 चयनित उम्मीदवारों को सर्वोत्तम संभव प्रशिक्षण प्रदान करेगा जो राष्ट्रीय कार्यक्रम में राज्य का प्रतिनिधित्व करेंगे। यह उपलब्धि राज्य के कौशल विकास ईकोसिस्टम के लिए एक महत्वपूर्ण मील का पत्थर है और इसके व्यावसायिक प्रशिक्षण पहलों की बढ़ती ताकत को रेखांकित करती है। उल्लेखनीय है कि प्रतियोगिता का सफर 5,000 प्रतिभागियों की विशाल स्क्रीनिंग के साथ शुरू हुआ। राज्य स्तरीय फाइनल: जनवरी 2026 में आयोजित राज्य स्तरीय फाइनल में 536 उम्मीदवारों ने प्रतिस्पर्धा की। प्रतिस्पर्धी समूह में से 63 सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करने वालों को क्षेत्रीय स्तर पर राजस्थान का प्रतिनिधित्व करने के लिए चुना गया था। क्षेत्रीय स्तर पर राजस्थान के दल ने पदकों की झड़ी लगा दी। 9 स्वर्ण पदक (प्रत्येक को ₹75,000 का नकद पुरस्कार), 8 रजत पदक (प्रत्येक को 50,000 रू.) 10 कांस्य पदक (प्रत्येक को 25,000 रू.), 8 मेडालियन ऑफ एक्सीलेंस विभिन्न कौशल श्रेणियों में उत्कृष्टता का प्रदर्शन करते हुए, राजस्थान के प्रतिभागियों ने अपने हुनर और प्रतिस्पर्धी भावना से अपनी अलग पहचान बनाई। इस विशिष्ट समूह में से, 17 विशिष्ट उम्मीदवारों को अब इंडिया स्किल्स प्रतियोगिता के राष्ट्रीय स्तर के लिए चुना गया है, जहाँ वे देश के बेहतरीन युवा पेशेवरों के बीच मुकाबला करेंगे।

नगर निगम जयपुर सतर्कता शाखा की टीम द्वारा की गई कार्रवाई

-4 हजार रुपये का किया कैरिंग चार्ज वसूल, 2 केन्टर सामान जब्त

जयपुर (रॉयल पत्रिका)। नगर निगम जयपुर आयुक्त डॉ. गौरव सैनी के निर्देषानुसार एवं पूर्व से प्राप्त शिकायतों पर उपायुक्त सतर्कता के नेतृत्व में गुरूवार को सतर्कता शाखा की द्वारा नगर निगम जयपुर क्षेत्राधिकार में महेश नगर 80 फीट रोड़, वन्देमातरम सर्किल एवं भारत माता सर्किल से अस्थाई अतिक्रमण करने वालों के विरुद्ध 4 हजार रुपये का कैरिंग चार्ज वसूल कर 2 केन्टर सामान जब्त किया गया। उपायुक्त सतर्कता ने बताया कि नगर निगम जयपुर क्षेत्राधिकार में महेश नगर 80 फीट रोड़, वन्देमातरम सर्किल एवं भारत माता सर्किल से अस्थाई अतिक्रमण हटवाया गया। उपरोक्त कार्रवाई के दौरान 2 केन्टर सामान जब्त कर गोदाम में भिजवाया गया व अस्थाई अतिक्रमण करने वालों से मौके पर 4 हजार रुपये का कैरिंग चार्ज वसूल किया गया तथा दौरे के दौरान कार्यवाही सतर्कता टीम द्वारा मौके पर समझाइष करते हुए मौखिक पाबंद करवाया कि भविष्य में अस्थाई अतिक्रमण समय से हटा ले अन्यथा नगर निगम जयपुर के क्षेत्राधिकार में अवैध अतिक्रमण करने वालों के विरुद्ध भारी चालान या प्रभावी कार्रवाई अमल में लाई जायेगी।

जनगणना 2027 के तहत दो दिवसीय गहन प्रषिक्षण शिविर का हुआ शुभारंभ

-प्रथम चरण के लिये जिला एवं चार्ज अधिकारियों का दो दिवसीय प्रषिक्षण

जयपुर (रॉयल पत्रिका)। जनगणना 2027 के प्रथम चरण की तैयारी के अंतर्गत नगर निगम जयपुर मुख्यालय के ई.सी. मीटिंग हॉल में जिला एवं चार्ज अधिकारियों का दो दिवसीय गहन प्रशिक्षण शिविर आयोजित किया जा रहा है यह शिविर 19 फरवरी एवं 20 फरवरी को आयोजित किया जा रहा है। प्रशिक्षण शिविर का शुभारंभ जनगणना कार्य निदेशालय के निदेशक विष्णु चरण मल्लिक द्वारा किया गया इस अवसर पर आयुक्त डॉ गौरव सैनी, अतिरिक्त आयुक्त नरेंद्र कुमार बंसल सहित नगर निगम के उपायुक्त, नगर पालिका E.O सहित एवं अन्य अधिकारी मौजूद रहे। निदेशक विष्णु चरण मल्लिक ने प्रशिक्षण शिविर की कार्य योजना के बारे में विस्तार से जानकारी दी उन्होंने कहा कि जनगणना 2027 पूर्ण तथा डिजिटल मोड में आयोजित की जाएगी जो पारदर्शिता शुद्धता एवं त्वरित डाटा संकलन की दिशा में एक महत्वपूर्ण पहल है। प्रशिक्षण के अंतर्गत cmms पोर्टल स्वगणना एप तथा जनगणना 2027 के अंतर्गत आम जन से पूछे जाने

वाले प्रश्नों की विस्तृत जानकारी दी गई साथ ही डिजिटल उपकरणों के माध्यम से डाटा संकलन अपलोडिंग एवं सत्यापन की प्रक्रिया का व्यावहारिक प्रशिक्षण भी प्रदान किया गया निर्धारित कार्यक्रम के अनुसार 1 मई से 15 मई 2026 तक स्वगणना तथा 16 मई 2026 से 14 जून 2026 तक मकान सूचीकरण एवं मकान गणना का कार्य संपादित किया जाएगा।

आवश्यक नम्बर

रॉयल पत्रिका

बिजली फॉल्ट के लिए		**पानी के लिए**	
टोल फ्री नंबर	18001806507	जलदाय कार्यालय	2706624
वॉट्सएप नंबर	9414037085	फायर ब्रिगेड	2747400
कस्टमर केयर	2203000	**मेडिकल इमरजेंसी के लिए**	
आईवीआरएस	1912	एंबुलेंस	102/108
कचरा गाड़ी के लिए		एसएमएस इमरजेंसी	2518333
ग्रेटर	2747400	महिला चिकित्सालय	22610616
सीवरेज लीकेज	2607500	जनाना हॉस्पिटल	22378721
हेरिटेज	2607500	SDMH	22574189
टोल फ्री नंबर	14420	SMS ब्लड बैंक	22518222
पुलिस की मदद के लिए		कल्याण ब्लड बैंक	22721771
साइबर क्राइम	1930/2360094	**घायल पशुओं के लिए**	
कंट्रोल रूम	2388435/36/37/38	नगर निगम	2747400
ट्रैफिक कंट्रोल रूम	2565630	बर्ड बाइक	9887345580
चाइल्ड हेल्पलाइन	1098	हेल्प इन सफरिंग	8107299711
महिला हेल्पलाइन	1090	जनमंच ट्रस्ट	7230055800
मुख्यमंत्री पोर्टल	181	पशु चिकित्सालय	2747400

सूरतगढ़ में हवाई अड्डा एवं हवाई सेवा की मांग को लेकर धनराज कमलेश सहारण फाउंडेशन ने केंद्रीय नागरिक उड्डयन मंत्री से मुलाकात की

सूरतगढ़ (रॉयल पत्रिका) । धनराज कमलेश सहारण फाउंडेशन की प्रोफेसर डॉ. अलका सहारण की अध्यक्षता में मुंबई में हुई वार्षिक बैठक के दौरान सूरतगढ़ की देश के अन्य प्रांतों से कनेक्टिविटी पर मंथन किया गया। विशेष रूप से हवाई सेवा कनेक्टिविटी की अनुपस्थिति पर, फाउंडेशन की वार्षिक बैठक में सर्वसम्मति से यह निर्णय लिया गया कि सूरतगढ़ में नागरिक हवाई अड्डा और हवाई सेवा शुरू करने के लिए केंद्रीय नागरिक उड्डयन मंत्री से मुलाकात कर मांग पत्र दिया जाए। इस संदर्भ में फाउंडेशन के सामाजिक सरोकार के अंतर्गत फाउंडेशन की और से डॉ. विकास सहारन ने केंद्रीय नागरिक उड्डयन मंत्री राम नायडू से मुलाकात कर क्षेत्रीय कनेक्टिविटी योजना के तहत सूरतगढ़ में नागरिक हवाई अड्डा और हवाई सेवा शुरू करने की मांग की। बैठक के दौरान डॉ. विकास सहारन ने केंद्रीय नागरिक उड्डयन मंत्री को बताया कि सूरतगढ़ के

आस-पास और दूरदराज के क्षेत्रों से भारत और विदेश के विभिन्न हिस्सों में अध्ययनरत छात्र, व्यापारी, विभिन्न क्षेत्रों में कार्यरत पेशेवर और जनमानस को सुगम, तीव्र और सुचारू यातायात सेवा कनेक्टिविटी की कमी के कारण समस्याओं का सामना करना पड़ता है, विशेषकर आपातकालीन स्थिति में। केंद्रीय नागरिक उड्डयन मंत्री राम नायडू से मुलाकात के दौरान डॉ. विकास सहारन ने उन्हें सूरतगढ़ के सेना क्षेत्र में कार्यरत भारत के विभिन्न राज्यों से आने वाले कार्मिकों और महाजन फील्ड फायरिंग रेंज में विशेष सैन्य अभ्यास के लिए भारत और विदेश के विभिन्न हिस्सों से आने वाले सेनाकर्मी द्वारा सूरतगढ़ से आने जाने के दौरान हवाई सेवा संपर्क के अभाव के कारण आने वाली कनेक्टिविटी समस्याओं के बारे में भी बताया/ केंद्रीय नागरिक उड्डयन मंत्री ने डॉ. विकास सहारन के साथ बातचीत के दौरान सकारात्मक दृष्टिकोण रखते हुए नागरिक उड्डयन मंत्रालय द्वारा सूरतगढ़ में सिविल हवाई अड्डा और त्वरित हवाई सेवा के लिए जल्द ही मंत्रालय द्वारा व्यवहार्यता रिपोर्ट सर्वे करने का भरोसा दिया ।

हाईकोर्ट पहुंचा कोटा का हिजाब मामला, कोर्ट ने सरकार और अन्य पक्षकारों को नोटिस जारी किया

-एडवोकेट अजीत कसवां और अन्सार इन्दौरी ने की पैरवी

कोटा (रॉयल पत्रिका) । राजस्थान उच्च न्यायालय ने हिजाब पहनने के कारण प्रतियोगी परीक्षा से वंचित किए जाने के मामले में पीड़ित छात्रा द्वारा दायर रिट याचिका पर महत्वपूर्ण कदम उठाया है। कोर्ट ने संबंधित पक्षों को नोटिस जारी कर जवाब मांगा है। याचिकाकर्ता के वकील अजीत कसवां और अन्सार इन्दौरी ने बताया कि छात्रा ने राजस्थान कर्मचारी चयन बोर्ड, जयपुर द्वारा आयोजित शिक्षक सीधी भर्ती परीक्षा 2025 (स्तर-II, सामाजिक अध्ययन) के लिए आवेदन किया था और उसे विधिवत रूप से एक वैध प्रवेश पत्र जारी किया गया था। पीड़ित के अधिवक्ताओ ने बताया कि याचिका में दावा किया गया है कि परीक्षा आयोजकों ने हिजाब को परीक्षा नियमों का उल्लंघन मानते हुए परीक्षा केंद्र में प्रवेश से रोक दिया, जिससे याचिकाकर्ता के धार्मिक अधिकारों का हनन हुआ। न्यायालय ने इस पर सुनवाई करते हुए संबंधित पक्षों को नोटिस जारी कर दिए हैं। उन्होंने बताया कि याचिकाकर्ता मुस्लिम समुदाय से संबंधित है और अपनी धार्मिक आस्था और अंतःकरण के अनुसार हिजाब पहनती है, जो केवल सिर को ढकता है और चेहरे को नहीं छुपाता। दिनांक 18.01.2026 को, याचिकाकर्ता निर्धारित परीक्षा केंद्र पर समय से पहले सभी आवश्यक दस्तावेजों के साथ उपस्थित हुई, लेकिन उसे केवल हिजाब पहनने के कारण परीक्षा में प्रवेश करने से मनमाने ढंग से रोक दिया गया, जबकि उसका चेहरा पूरी तरह से दिखाई दे रहा था और वह पहचान सत्यापन के लिए हिजाब को समायोजित करने को तैयार थी। परीक्षा आयोजक की कार्रवाई मनमानी, भेदभावपूर्ण, अनुचित थी, जिसके परिणामस्वरूप याचिकाकर्ता को सार्वजनिक रोजगार के एक मूल्यवान अवसर से वंचित किया गया और उसे गंभीर और अपूरणीय क्षति हुई। याचिका में मांग की गई है कि संबंधित पक्षों को निर्देश दें कि याचिकाकर्ता को पुनः परीक्षा या विशेष परीक्षा में उपस्थित होने का अवसर प्रदान करें । साथ ही प्रतियोगी परीक्षाओं में हिजाब पहनने की अनुमति देने के लिए उचित सुरक्षा जांच के साथ दिशानिर्देश तैयार करें। उन्होंने बताया कि यह मामला भारतीय संविधान के अनुच्छेद 25 (धार्मिक स्वतंत्रता) और समानता के अधिकार से जुड़ा है, जो हिजाब जैसे धार्मिक प्रतीकों को सार्वजनिक परीक्षाओं में पहनने के अधिकार पर बहस को नई दिशा दे सकता है। अगली सुनवाई की तिथि जल्द घोषित की जाएगी।

दी पब्लिक केरियर ट्रक ऑनर्स संस्थान के सालाना चुनाव संपन्न

-मन्नू पठान निर्विरोध जनरल सेकेट्री निर्वाचित, पैनल के सभी सदस्य जीते

बारां (रॉयल पत्रिका) । दी पब्लिक केरियर ट्रक ऑनर्स संस्थान बारां के सत्र 2026 - 2027 के चुनाव मंगलवार 17 फरवरी 2026 को चुनाव अधिकारी अनवर अली पीटीआई, राजेश कुमार पिपलानी (प्रेम), प्रदीप नागर, राय बहादुर सिंह, फारूक अहमद ओर अब्दुल मजीद की देखरेख में संस्थान के कार्यालय में चुनाव हुए। जिसमें संस्थान से जुड़े सदस्यों ने बढ़ चढ़कर वोटिंग में हिस्सा लिया। जनरल सेकेट्री के पद पर मोहम्मद शाहिद मन्नू पठान 15 फरवरी को ही निर्विरोध निर्वाचित हो चुके थे। बाकी के पदों पर हुई वोटिंग में अध्यक्ष पद पर 428 मत पड़े जिसमें श्याम कुमार बंसल 180 मत भीमसेन अदलक्खा 119 मत ओर शिव कुमार कश्यप 118 मत मिले 11 मत कैंसिल हुए। इस तरह श्याम कुमार बंसल 61 मतों से विजय हुए। उपाध्यक्ष पद पर 428 मत पड़े। जिसमें आबिद हुसैन 113 मत, गोविंद प्रसाद 176

मत ओर खुर्शीद आलम 124 मत मिले, 15 मत कैंसिल हुए इस तरह गोविंद प्रसाद 52 मतों से विजय हुए। बोर्ड इंचार्ज पद पर 428 मत पड़े जिसमें खलील अहमद 85 मत, कल्लू अली 189 मत, ओर राकेश कुमार पिपलानी 135 मत मिले 19 मत कैंसिल हुए । कल्लू अली 54 मतों से विजय हुए। कोषाध्यक्ष पद के लिए 428 मत पड़े, जिसमें ध्रुव कुमार यादव 178 मत, मोहम्मद सलीम 115 मत ओर मान सिंह नायक को 122 मत मिले 13 मत कैंसिल हुए। इस तरह ध्रुव कुमार यादव 56 मतों से विजय हुए। इस तरह मन्नू पठान का पूरा पैनल इस चुनाव में बेहतरीन जीत प्राप्त कर विजय हुआ। चुनाव में विजय हुए सभी नवनिर्वाचित पदाधिकारियों को चुनाव अधिकारी अनवर अली पीटीआई ने अपने अपने पद की शपथ दिलाई। संस्थान कार्यालय पर उपस्थित लोगों ने जीते हुए पदाधिकारियों का माला पहनाकर मुंह मीठा करवाकर स्वागत किया। इस दौरान संस्थान से जुड़े सैकड़ों लोग उपस्थित रहे।

रमज़ान की चाँद रात पर हज़रत दीवाना शाह र.अ. की दरगाह में उमड़ा अकीदतमंदों का सैलाब

कपासन (रॉयल पत्रिका)। प्रख्यात सूफी संत हज़रत दीवाना शाह साहब र.अ. की दरगाह शरीफ पर बुधवार को रमज़ान माह की चाँद रात पर उमड़े जायरीन। दरगाह ऑफिस सैक्रेट्री शफी मोहम्मद छीपा के अनुसार बुधवार को दिन-भर आशिके दीवाना का आना-जाना लगा रहा। आस्ताना-ऐ-आलिया में स्थित मुख्य मज़ार पर चादर, फूल, अगरबत्ती, इत्र पेश करने के लिये लम्बी-लम्बी कतारे लगी। आहाता-ए-नूर में महफिले मीलाद व महफिले समा का प्रोग्राम दिन-भर चलता रहा, मैला ग्राऊण्ड मे 250 से उपर अस्थाई दुकाने लगी। जायरिनों की व्यवस्था हेतु 30 सिक्यूरिटी गार्ड तैनात किए गए। दरगाह शरीफ की औलिया मस्जिद में मोलाना हाफिजो कारी मोहम्मद शाकीर की ईमामत मे सेकड़ों लोगों ने तराविह की नमाज अदा की और रोजेदारों के लिए सुबह सेहरी का इंतजाम किया गया। चिराग बत्ती के समय मुल्क में अमनों सुकून की दुआ की तो आमीन-आमीन की सदा से दरगाह परिसर गूंज उठा।

स्व. ओमप्रकाश व्यास की तृतीय पुण्यतिथि पर सेवा कार्यों का आयोजन

-नि:शुल्क मल्टी स्पेशलिटी चिकित्सा शिविर सहित कई जनकल्याणकारी कार्यक्रम होंगे

शब्बीर हुसैन

बारां (रॉयल पत्रिका) । स्वर्गीय ओमप्रकाश व्यास मानव सेवार्थ समिति, बारां द्वारा समिति के प्रेरणास्रोत स्व. ओमप्रकाश व्यास (सेवानिवृत्त व्याख्याता) की तृतीय पुण्यतिथि के अवसर पर 20 फरवरी 2026, शुक्रवार को नर सेवा–नारायण सेवा के उद्देश्य से विभिन्न सामाजिक एवं सेवा गतिविधियों का आयोजन किया जाएगा। इस संबंध में आयोजित प्रेस वार्ता में कार्यक्रम संयोजक हरिमोहन गोयल, प्रमोद शर्मा, ऋषि वल्लभ शर्मा, संजय गोयल, ललितमोहन शर्मा एवं दिनेश शर्मा ने संयुक्त रूप से जानकारी देते हुए बताया कि स्व. ओमप्रकाश व्यास के सेवा, सादगी और समाज के प्रति समर्पण से प्रेरित होकर समिति प्रत्येक वर्ष पुण्यतिथि पर जनसेवा के कार्यक्रम आयोजित करती है। संयोजकों ने बताया कि कार्यक्रम के अंतर्गत प्रातः 10 बजे से दोपहर 2 बजे तक खण्डेलवाल धर्मशाला, राजकीय चिकित्सालय के सामने, बारां में

एक निःशुल्क मल्टी स्पेशलिटी चिकित्सा परामर्श एवं दवा वितरण शिविर आयोजित किया जाएगा। इस शिविर में हड्डी रोग, स्पाइन सर्जरी, महिला एवं प्रसूति रोग, चर्म रोग एवं फिजियोथेरेपी सहित विभिन्न विशेषज्ञ चिकित्सकों द्वारा निःशुल्क परामर्श दिया जाएगा तथा आवश्यक दवाओं का वितरण भी किया जाएगा। साथ ही शिविर में उपलब्ध जांच सुविधाओं पर 50 प्रतिशत तक की विशेष छूट भी प्रदान की जाएगी। कार्यक्रम संयोजकों ने आगे बताया कि चिकित्सा शिविर के अतिरिक्त पूरे दिन सेवा गतिविधियों के अंतर्गत पक्षियों के लिए दाना वितरण, मातृ एवं शिशु सामग्री वितरण, भोजन वितरण तथा अन्य सामाजिक सरोकारों से जुड़े कार्यक्रम भी आयोजित किए जाएंगे। उन्होंने आमजन से अपील की कि अधिक से अधिक लोग इस सेवा शिविर का लाभ उठाएं तथा स्व. ओमप्रकाश व्यास जी की स्मृति में आयोजित इन सेवा कार्यों में सहभागिता निभाएं। समिति ने मीडिया के माध्यम से आमजन को कार्यक्रम में शामिल होने का आमंत्रण देते हुए कहा कि समाज के सहयोग से ही ऐसे सेवा कार्यों को निरंतर आगे बढ़ाया जा सकता है।

माहे रमजान के पवित्र महीने का सबसे खुशनुमा और सुकून भरा वक्त होता है रोजा इफ्तार

मोहम्मद अली पठान

चूरू (रॉयल पत्रिका)। माहे रमजान के पहले रोजा इफ्तार किया गया। मुस्लिम समुदाय में रमजान के पवित्र महीने का सबसे खुशनुमा और सुकून भरा वक्त होता है। पूरे दिन भूखे-प्यासे रहकर अल्लाह की इबादत करने के बाद, शाम को सूरज ढलते ही जब रोजा खोला जाता है, तो उसे 'इफ्तार' कहते हैं। इसकी शुरुआत अक्सर खजूर और पानी से की जाती है, जो सुन्नत (पैगंबर का तरीका) माना जाता है। इफ्तार केवल खाना खाने का नाम नहीं है, बल्कि यह सब्र, शुक्र और भाईचारे का प्रतीक है। इस मौके पर परिवार के सभी सदस्य एक साथ दस्तरख्वान पर बैठते हैं। और अल्लाह से दुआ मांगते हैं। मस्जिदों और सार्वजनिक जगहों पर सामूहिक इफ्तार का आयोजन होता है,

जहाँ अमीर-गरीब का भेद मिट जाता है और सभी मिलकर प्रेम और एकता के साथ भोजन साझा करते हैं। इफ्तार का समय एक मोमिन के लिए बेहद खुशियों और बरकतों वाला होता है। इस्लाम में इसकी अहमियत इस कदर है कि हदीस के मुताबिक, "रोज़ेदार के लिए दो खुशियाँ हैं: एक इफ्तार के समय और दूसरी अपने रब से मुलाकात के वक्त।"इफ्तार की प्रमुख बरकतें और महत्व है। 1. दुआओं की कबूलियतः इफ्तार से ठीक पहले का वक्त दुआओं की कबूलियत का होता है। अल्लाह इस समय अपने बंदों की आज़िज़ी और प्यास को देखकर उनकी जायज़ मुरादें पूरी फरमाता है। 2. सुन्नत का सवाबः खजूर या पानी से जल्द इफ्तार करना सुन्नत है। वक्त पर रोज़ा खोलना अल्लाह को बेहद महबूब है। 3. सामूहिकता और भाईचाराः परिवार और दोस्तों के साथ मिलकर इफ्तार करना आपसी मोहब्बत को बढ़ाता है। दूसरों को इफ्तार कराने का सवाब रोज़ेदार के बराबर ही बताया गया है। 4. शुक्रगुज़ारी का अहसासः दिन भर की भूख-प्यास के बाद जब रिज़्क सामने आता है, तो इंसान को अल्लाह की नेमतों की असली कद्र महसूस होती है। इफ्तार केवल खाना खाने का नाम नहीं, बल्कि अल्लाह की इबादत और उसके शुक्र का एक मुकद्दस पड़ाव है।

मानदेय,पीएफ और रोजगार सुरक्षा पर सरकार से मांगा जवाब

-सदन में संविदा कर्मियों और सफाई कर्मियों की भर्ती का उठाया मुद्दा

चौमू (रॉयल पत्रिका)। विधानसभा सत्र के प्रश्नकाल में चौमू विधायक डॉक्टर शिखा मिल बराला ने संविदा कर्मियों की रोजगार सुरक्षा और सफाई कर्मचारियों की भर्ती का मुद्दा उठाया। उन्होंने कहा कि संविदा कर्मचारियों में नौकरी को लेकर सुरक्षा की भावना है। जयपुर नगर निगम की पशु शाखा का उदाहरण देते हुए लेकर उन्होंने व्यवस्था की खामियों को उजागर किया। डॉक्टर शिखा मिल बराला ने सरकार से पूछा कि संविदा कर्मियों की सुरक्षा और जवाबदेही करने के लिए कोई स्थाई समाधान लाया जाएगा। उन्होंने नगर परिषद चौमू का उदाहरण देते हुए कहा

कि संविदा कर्मचारियों को समय पर मानदेय नहीं मिला है। पीएफ जमा करने में भी अनियमितता है। साथ ही नियमित सफाई कर्मचारियों की भर्ती को बार-बार टाला जा रहा है। उन्होंने सरकार से स्पष्ट योजना और समय बद, उत्तर देने की मांग की। ताकि प्रदेश के लाखों संविदाकर्मियों और सफाई कर्मचारियों को राहत मिल सके।

मां चामुण्डा देवी मार्ग कीचड़ में तब्दील, भक्तों को भारी परेशानी

हनीस शेख

हिंडौन (रॉयल पत्रिका)। मां चामुण्डा देवी मंदिर जाने वाला मुख्य रास्ता इन दिनों कीचड़ में तब्दील हो गया है। हल्की बारिश के बाद ही सड़क पर पानी भर जाता है और पूरे मार्ग पर फिसलन व दलदल जैसी स्थिति बन जाती है। रोजाना स्कूली बच्चों और स्थानीय लोगों को इस रास्ते से गुजरने में भारी दिक्कतों का सामना करना पड़ रहा है। स्थानीय निवासी विष्णु डागुर चिनायटा ने बताया कि कई बार शिकायत के बावजूद न तो जनप्रतिनिधियों ने ध्यान दिया और न ही प्रशासन ने कोई ठोस कदम उठाया। स्थिति यह है कि पैदल चलना भी मुश्किल हो गया है, वहीं दोपहिया वाहन फिसलने

का खतरा बना रहता है। ग्रामीणों का कहना है कि आस्था का केंद्र मां चामुण्डा देवी मंदिर क्षेत्र होने के बावजूद मूलभूत सुविधाओं की अनदेखी की जा रही है। यदि जल्द ही सड़क की मरम्मत और जल निकासी की व्यवस्था नहीं की गई तो किसी भी दिन बड़ा हादसा हो सकता है। स्थानीय लोगों ने ग्राम पंचायत प्रशासन से तत्काल कीचड़ हटाने, सड़क की मरम्मत कराने और स्थायी समाधान की मांग की है, ताकि राहगीरों को राहत मिल सके।

रमज़ान का पवित्र महीना शुरू, पहली सहरी के साथ रोज़ों की शुरुआत, मुस्लिम समुदाय में दिखा उत्साह

हनीस शेख

हिंडौन (रॉयल पत्रिका)। रहमतों और बरकतों का महीना रमज़ान शुरू होते ही शहर में खास रौनक देखने को मिली। पहली सहरी के साथ ही रोज़ों की शुरुआत हुई और मुस्लिम समुदाय में उत्साह और उमंग का माहौल रहा। देर रात से ही घरों में सहरी की तैयारियां शुरू हो गई थीं और सुबह अज़ान के साथ लोगों ने पहला रोज़ा रखा। शहर की मस्जिदों में नमाज़ और इबादत का सिलसिला शुरू हो गया। रोज़ेदारों ने अल्लाह से अपने गुनाहों की माफी मांगी और देश में अमन, चैन व भाईचारे की दुआएं कीं। बड़ों के साथ-साथ नन्हे बच्चों में भी खास उत्साह नजर आया, जिन्होंने पहला रोज़ा रखकर अपनी खुशी जाहिर की। रमज़ान के पहले दिन बाजारों में भी रौनक दिखाई दी। लोग खजूर, फल और रोज़ा इफ्तार से जुड़ी जरूरी चीजों की खरीदारी करते नजर आए। शाम को इफ्तार के वक्त घरों और मस्जिदों में खास इंतजाम किए गए। मुस्लिम महासभा के प्रदेश मीडिया प्रभारी अजीम खान चिनायटा ने बताया कि पहला रोज़ा हर मुसलमान के लिए बेहद खास होता है। यह महीना सब्र, इबादत और खुदा की राह पर चलने का पैगाम देता है। रोज़ेदार अल्लाह से अपनी गलतियों की माफी मांगते हैं और समाज में शांति व सद्भाव की दुआ करते हैं। रमज़ान के इस पाक महीने की शुरुआत के साथ ही पूरे शहर में इबादत और इंसानियत का माहौल बन गया है।

आमीन पठान ने मोहम्मद रफीक को खेल प्रकोष्ठ जिला अध्यक्ष नियुक्त

बनेड़ा/रायला (रॉयल पत्रिका)। रायला के सोनू कायमखानी ने बताया की अवसर पर बिसायती समाज सेवा संस्थान के उपाध्यक्ष मोहम्मद रफ़ीक़ बिसायती को कांग्रेस कमेटी राजस्थान के खेल प्रकोष्ठ से भीलवाड़ा जिलाध्यक्ष (खेल प्रकोष्ठ) नियुक्त किए जाने पर हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं दी गईं। बिसायती समाज सेवा संस्थान ने रफ़ीक़ बिसायती के उज्ज्वल भविष्य की कामना करते हुए विश्वास व्यक्त किया कि वे अपने दायित्वों का निर्वहन पूरी निष्ठा और समर्पण के साथ करेंगे तथा संगठन को नई ऊंचाइयों तक पहुंचाएंगे। नियुक्ति के इस खुशी के अवसर पर संस्थान के संस्थापक आरिफ काजी (उपसरपंच, रायला), हाफिज

मोहम्मद (करेड़ा), मोहम्मद उमर (भीलवाड़ा) तथा कोषाध्यक्ष मोहम्मद सलीम (भीलवाड़ा) सहित गणमान्य उपस्थित रहे। सभी पदाधिकारियों ने रफ़ीक़ बिसायती का माला एवं पगड़ी पहनाकर सम्मानपूर्वक स्वागत किया और नई जिम्मेदारी के लिए शुभकामनाएं प्रेषित कीं। इसी क्रम में राजस्थान प्रदेश कांग्रेस कमेटी (खेल प्रकोष्ठ) विभाग द्वारा जिला भीलवाड़ा के नव-नियुक्त जिला अध्यक्ष (खेल प्रकोष्ठ मोहम्मद रफ़ीक़ बिसायती जी ने देर रात्रि रायला स्थित अल्पसंख्यक जिला प्रभारी झुंझुनूं सोन खान कायमखानी निवास पर पहुंचकर आभार व्यक्त किया। इस अवसर पर उपस्थित जनों ने उनका माला पहनाकर एवं मुंह मीठा करवाकर स्वागत किया तथा उनके सफल कार्यकाल की कामना की।a

61 वर्षीय दिव्यांग को नहीं मिल रही सामाजिक सुरक्षा पेंशन

-नगरपरिषद चूरू में एक वर्ष पहले किया था आवेदन, अब भटक रहे हैं

मोहम्मद अली पठान

चूरू (रॉयल पत्रिका)। सरकार चाहे कुछ भी कर ले, चूरू वाले अधिकारी कभी नहीं सुधरेंगे। चूरू में एक 61 वर्षीय दिव्यांग को सामाजिक सुरक्षा पेंशन नहीं मिल रही है। गुसाईयों की छत्तरी के पास, वार्ड नंबर 2 निवासी अहमद अली खान पुत्र सादुले खां ने बताया कि ई मित्र के माध्यम से दिव्यांगता का प्रमाण पत्र बनवाकर पेंशन के लिए नगरपरिषद चूरू में एक वर्ष पहले आवेदन किया था। वहां से कोई जवाब नहीं मिला तो पुनः नगरपरिषद में गया। वहां बैठे बाबू ने कुछ कमियां बताई। दो माह पहले उन्हें भी पूरा कर दिया।

उसके बाद भी आज तक पेंशन मिलनी शुरू नहीं हुई है। पेंशन शुरू हो जाती तो कुछ राहत मिल जाती। परन्तु नगरपरिषद वालों की मनमानी के कारण पेंशन नहीं मिल रही है। कुल मिलाकर चूरू में सामाजिक सुरक्षा पेंशन नहीं मिलने के कई मामले सामने आ चुके हैं। इसके लिए दोषी कौन है, यह जांच का विषय है। विभाग के मंत्री अविनाश गहलोत चूरू जिले के प्रभारी मंत्री हैं। मंत्री के प्रभार वाले जिला मुख्यालय पर सामाजिक सुरक्षा पेंशन नहीं मिलना बड़े ही दुर्भाग्य की बात है। यानी यहां के अधिकारियों के मन में मंत्री के नाम का कोई डर नहीं है। सब अपनी मर्जी के मालिक हैं। चूरू में यही कहा जा सकता है कि बिना दाम, बिल्कुल भी नहीं होगा काम। चाहे मंत्री हो या विधायक, अधिकारी किसी की नहीं मानते।

निजी बस मालिकों की मनमानी से यात्री परेशान

मोहम्मद अली पठान

चूरू (रॉयल पत्रिका)। जिला मुख्यालय से आने जाने वाली निजी बस मालिकों की मनमानी से यात्री परेशान हैं। यहां निजी बसों द्वारा यातायात के नियमों की खुलेआम धज्जियां उड़ाई जा रही है। मिली जानकारी के अनुसार निजी बस मालिक यात्रियों से मनमाना किराया वसूलते हैं। इतना ही नहीं रूट कहीं का ले रखा है और चलते कहीं और मार्ग पर हैं। समय की भी कोई पाबंदी नहीं है। बस स्टैंड से चलकर कलेक्ट्रेट के पास खड़े हो जाते हैं फिर सीएम बहड़ सर्किल पर थम जाते हैं। उधर वाले फाटक के पास बस खड़ी कर देते हैं। कभी बारात लेकर चले जाते हैं तो यात्री बस का इंतजार ही करते रह जाते हैं। यात्रियों को भेड़ बकरियों की तरह भर लेते हैं। बस की छत और केबिन में भी सवारियों को बैठा लेते हैं। चलती बस में चालक द्वारा मोबाइल पर बात करना और धूम्रपान करना तो आम बात है। कई तो शराब के नशे में भी बस को चलाते हुए देखे जा सकते हैं। कहने वाले यात्री से झगड़ा करने पर उतारू हो जाते हैं। ये लोग यात्रियों के जीवन के साथ यह कहकर खिलवाड़ कर रहे हैं कि उनकी पहुंच ऊपर तक है। संबंधित विभाग को तुरंत अभियान चलाकर ऐसे वाहनों के खिलाफ कठोर कार्रवाई करनी चाहिए। यहां का जिला प्रशासन भी कोई काम का नहीं है। जिला मुख्यालय पर निजी बसों के थमने की कोई समुचित व्यवस्था नहीं है। ऐसे में बस वाले भी परेशान हैं।

आप किसी भी उम्र के हों, अगर आपके जोड़ों में दर्द, सूजन रहती है तो आपको जांच कराने में देर नहीं करनी चाहिए। ऐसा रूमेटॉइड आर्थराइटिस के कारण हो सकता है। सही समय पर टेस्ट और ट्रीटमेंट के जरिए इससे राहत मिल सकती है।

रूमेटॉइड आर्थराइटिस समय पर डायग्नोसिस-ट्रीटमेंट है जरूरी

डिजीज

डॉ. अभिक बनर्जी
जोनल टेक्निकल चीफ
अपोलो डायग्नोस्टिक्स, कोलकाता

कई आंकड़ों से यह बात सामने आई है कि बहुत से लोग रूमेटॉइड आर्थराइटिस (आरए) जैसी गंभीर बीमारी के साथ चुपचाप जीवन जी रहे हैं। लगभग 50 प्रतिशत मरीज समय पर डॉक्टर के पास नहीं जाते। वे शुरुआती लक्षणों को अकसर तनाव, थकान या हल्का जोड़ों का दर्द समझकर नजरअंदाज कर देते हैं। यह समस्या अब युवाओं में भी देखी जा रही है, जिससे आगे चलकर जोड़ों को गंभीर नुकसान और विकलांगता हो सकती है।

कैसे होती है समस्या: रूमेटॉइड आर्थराइटिस, एक लंबे समय तक बनी रहने वाली बीमारी है। इसमें शरीर की रोग प्रतिरोधक क्षमता, अपने ही जोड़ों पर हमला करने लगती है। इससे जोड़ों में लगातार सूजन बनी रहती है और धीरे-धीरे जोड़ों को नुकसान पहुंचता है।

इस बीमारी के होने के कई कारण हो सकते हैं, जैसे परिवार में बीमारी का इतिहास, हार्मोन में बदलाव, धूम्रपान, ज्यादा तनाव और कुछ संक्रमण। आमतौर पर लोग सोचते हैं कि गठिया सिर्फ बढ़ती उम्र में होता है, लेकिन रूमेटॉइड आर्थराइटिस 20 से 30 साल की उम्र के लोगों को भी हो सकता है।

रोग के लक्षण: इस रोग के कॉमन लक्षण हैं जोड़ों में दर्द, सूजन, सुबह के समय जोड़ों में जकड़न, जल्दी थक जाना और कमजोरी महसूस होना। अगर समय पर जांच और इलाज न किया जाए, तो यह बीमारी जोड़ों की बनावट बिगाड़ सकती है। इसके अलावा यह फेफड़ों, दिल और आंखों जैसे शरीर के दूसरे अंगों को भी प्रभावित कर सकती है। इससे चलने-फिरने में परेशानी होती है, रोजमर्रा के काम करना मुश्किल हो जाता है, काम करने की क्षमता घटती है और जीवन की गुणवत्ता पर बुरा असर पड़ता है। सबसे बड़ी समस्या यह है कि शुरुआती लक्षण बहुत हल्के होते हैं, इसलिए लोग उन्हें गंभीरता से नहीं लेते। 20-30 साल के युवा और कामकाजी लोगों में रूमेटॉइड आर्थराइटिस के मामलों में लगभग 20 प्रतिशत की बढ़ोतरी देखी गई है।

न करें इग्नोर: इस रोग से ग्रसित करीब 50 प्रतिशत लोग जोड़ों की जकड़न, दर्द या सूजन जैसे शुरुआती लक्षणों को नजरअंदाज कर देते हैं और तब डॉक्टर के पास जाते हैं, जब बीमारी रोजमर्रा की जिंदगी को प्रभावित करने लगती है। हर 10 में से लगभग 5 मरीज ऐसे होते हैं, जो बहुत देर से जांच के लिए आते हैं, जब तक जोड़ों को नुकसान शुरू हो चुका होता है। यह देरी आगे चलकर स्थायी जोड़ों की खराबी और लंबे समय की विकलांगता का कारण बन सकती है।

बहुत से मरीज इसलिए चुपचाप दर्द सहते रहते हैं क्योंकि उन्हें रूमेटॉइड आर्थराइटिस के शुरुआती लक्षण समझ में ही नहीं आते या वे डॉक्टर के पास जाने में देर कर देते हैं। खासकर युवा लोग यह मान लेते हैं कि जोड़ों का दर्द ज्यादा काम, तनाव या व्यायाम की कमी की वजह से है। लेकिन ऐसा सोचने से बीमारी बढ़ती जाती है और जोड़ों को ऐसा नुकसान हो जाता है, जिसे समय पर जांच और उपचार से रोका जा सकता था। रूमेटॉइड आर्थराइटिस को कंट्रोल करने के लिए जल्दी जांच कराना सबसे जरूरी है।

जांच के तरीके: आरए की जांच के लिए कुछ अहम जांचें की जाती हैं, जैसे रूमेटॉइड फैक्टर (आरएफ) और एंटी सीसीपी एंटीबॉडी टेस्ट, जो यह बताते हैं कि बीमारी ऑटोइम्यून है या नहीं। ईएसआर और सीआरपी जांच से शरीर में सूजन का स्तर पता चलता है। ब्लड की सामान्य जांच से शरीर की दूसरी समस्याओं का पता लगाया जाता है। इसके अलावा एक्सरे, अल्ट्रासाउंड या एमआरआई स्कैन से जोड़ों में सूजन और शुरुआती नुकसान का पता चल जाता है। अगर समय पर जांच हो जाए, तो बीमारी को धीमा करने वाली दवाएं शुरू की जा सकती हैं। इससे दर्द कम होता है, बीमारी आगे नहीं बढ़ती और जोड़ों की काम करने की क्षमता बनी रहती है। नियमित जांच और स्कैन से इलाज को समय-समय पर बदला जा सकता है और बीमारी के दोबारा बढ़ने से बचा जा सकता है।

ट्रीटमेंट: इसके इलाज में ऐसी दवाएं दी जाती हैं, जो बीमारी को बढ़ने से रोकती हैं। इसके साथ फिजियोथेरेपी भी बहुत जरूरी होती है, जिससे जोड़ों की ताकत बनी रहती है। रोजाना हल्का व्यायाम, संतुलित आहार, तनाव को कम करना और धूम्रपान छोड़ना भी इलाज का अहम हिस्सा है। नियमित रूप से डॉक्टर से फॉलोअप कराने से बीमारी पर नजर रखी जा सकती है और जरूरत पड़ने पर इलाज बदला जा सकता है। *

प्रस्तुति: सेहत डेस्क

देश-दुनिया में आए दिन सुसाइड यानी आत्महत्याओं के मामले सामने आते रहते हैं। वैसे तो सभी आयु वर्ग के व्यक्तियों में ऐसी प्रवृत्ति देखी जाती है, लेकिन पिछले कुछ वर्षों से युवा वर्ग, खासकर स्टूडेंट्स में भी आत्महत्या के मामलों में इजाफा हुआ है, जो एक चिंताजनक और विचारणीय मुद्दा है। कुछ सुझावों पर अमल कर आत्मघाती प्रवृत्ति से बचाव किया जा सकता है।

सुसाइड के लगातार बढ़ते मामले सपोर्ट-ट्रीटमेंट से संभव है बचाव

डॉक्टर्स एडवाइस

डॉ. वैभव चतुर्वेदी
मनोचिकित्सक-कोकिलाबेन
धीरूभाई अंबानी हॉस्पिटल, इंदौर

वर्ल्ड साइकिएट्रिक एसोसिएशन के अनुसार खुद की जान को खत्म कर देने वाले लोगों की संख्या में इजाफा होना परिवार, समाज और सरकार इन तीनों के ही लिए अत्यंत गंभीर विचारणीय मुद्दा है। ऐसा इसलिए क्योंकि इतनी जानें तो दुनिया भर में प्रतिवर्ष होने वाली विभिन्न प्राकृतिक आपदाओं और आतंकवादी घटनाओं में भी नहीं जाती हैं, जितनी लोग स्वयं गवां देते हैं। साइकिएट्रिक एसोसिएशन के अनुसार, 'इस स्थिति को काफी हद तक कम किया जा सकता है, अगर हम आत्महत्या की तरफ बढ़ रहे लोगों को यह दिलासा दिला सकें कि हम तुम्हारे साथ हैं।'

एक प्रमुख कारण है डिप्रेशन

अवसाद (डिप्रेशन), आत्महत्या के एक बड़े कारण में शुमार है। बड़ी संख्या में लोग दुनिया भर में डिप्रेशन के कारण आत्महत्या करते हैं, ऐसा महर्षि यूरोपियन रिसर्च यूनिवर्सिटी, नीदरलैंड्स द्वारा किए गए एक अध्ययन का आकलन है।

तनाव का हावी होना

यूरोपियन साइकिएट्रिक एसोसिएशन द्वारा किए गए एक अध्ययन के अनुसार, जिन लोगों के दिलो-दिमाग पर तनाव हावी हो जाता है और जो मनोचिकित्सक या विशेषज्ञ डॉक्टर के परामर्श पर अमल नहीं करते, तो इस स्थिति में ऐसे लोग नकारात्मक विचारों से घिर जाते हैं। उन्हें लगता है कि उनकी दुनिया अंधेरे में जा चुकी है, जिससे निकलने का कोई रास्ता नहीं है। इस तरह की मनोदशा कालांतर में आत्महत्या का कारण बन सकती है।

अन्य कारकों के दुष्प्रभाव: कुछ मनोरोग जैसे बाइपोलर डिसऑर्डर, सिजोफ्रेनिया आदि के अलावा मादक पदार्थों की एक अरसे से जारी लत खुद की जान लेने के जोखिम को बढ़ा सकती है।

विफलता या भावनात्मक झटका: किसी क्षेत्र में असफल रहना और उस असफलता को बर्दाश्त न कर पाना भी आत्महत्या का कारण बन सकता है। वहीं संबंधों में विच्छेद से एक बड़ी संख्या में लोगों को भावनात्मक झटका लगता है, जिसे अनेक लोग सहन नहीं कर पाते। इसके अलावा पारिवारिक और व्यवसाय से संबंधित जिम्मेदारियों का बोझ और आर्थिक स्थिति का खराब होना आदि ऐसे कारण हैं, जो खुद की जान को नुकसान पहुंचाने के लिए उकसाते हैं।

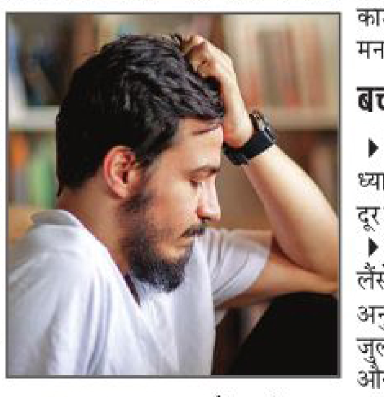

इन लक्षणों पर दें ध्यान

- अकेलापन पसंद करना, यह सोचना कि दुनिया में मेरा कोई नहीं है।
- किसी भी प्रकार के मेल-मिलाप से कतराना।
- दूसरों के समक्ष इस तरह की बातें करना कि अब जिंदगी जीने का मकसद नहीं रह गया है।
- किसी कारण के बगैर खुद को जोखिम में डालने वाले कार्य करना। जैसे लापरवाही से वाहन चलाना आदि।
- किसी की बात न सुनना-खुद में गुमशुम रहना।
- स्वभाव में अप्रत्याशित परिवर्तन जैसे जो व्यक्ति खुशमिजाज रहता हो, वह उदास रहने लगता है।
- ऐसे लोगों का मूड अकसर उदास रहता है।
- भूख कम लगना या समय पर खाना न खाना।
- नींद पूरी न ले पाना।
- आत्महत्या का प्रयास करने वाले कुछ ऐसे भी लोग होते हैं, जो उपरोक्त संकेत नहीं देते और वे अपनी बात को मन में दबाए रखते हैं।

दूसरों की मदद लें

अमेरिकन साइकिएट्रिक एसोसिएशन के अनुसार दुनिया में मानसिक समस्याओं से पीड़ित लगभग 65 प्रतिशत से अधिक लोग दूसरों से मदद लेने में हिचकिचाते हैं, ऐसा इसलिए क्योंकि उन्हें लगता है कि अगर मैं किसी अन्य व्यक्ति को अपनी परेशानी बताऊंगा तो वे सब मेरी आलोचना करेंगे। ऐसे लोगों की गलत धारणा को दूर करने में मनोचिकित्सक काउंसलिंग का सहारा लेते हैं। इससे मन की नकारात्मकता दूर होती है।

बचाव के उपाय

- योगासन, प्राणायाम और विशेषकर ध्यान या मेडिटेशन मन की अशांति को दूर करने का एक सशक्त माध्यम हैं।
- विश्व प्रसिद्ध मेडिकल जर्नल 'दि लैंसेट' में प्रकाशित एक अध्ययन के अनुसार जो लोग समाज में मिलते-जुलते (सोशल इंटरएक्शन) रहते हैं और जिंदगी में रिश्तों को अहमियत देते हैं, उनमें आत्महत्या से संबंधित विचारों के पनपने की आशंकाएं काफी हद तक कम हो जाती हैं।
- पीड़ित व्यक्ति को अकेला न छोड़ें।
- ईश्वर पर गहन विश्वास रखने से व्यक्ति में चिंताओं, तनावों और पीड़ाओं से लड़ने का माद्दा विकसित होने में मदद मिल सकती है। ऐसा विश्वास व्यक्ति को निराशावादी से आशावादी बना सकता है। जो व्यक्ति आशावादी है, वह आत्महत्या करने का प्रयास अपवाद स्वरूप ही करता है।
- कोई हॉबी विकसित करें। अगर आपकी संगीत में रुचि है तो इसके लिए कुछ समय निकालें।

इलाज के तरीके

अवसाद से प्रभावित ऐसे लोग, जो सुसाइडल सोच की ओर बढ़ रहे हैं, उन्हें इन उपचारों से ठीक कर सकते हैं।

साइकोथेरेपी: इसमें मनोचिकित्सक मरीज के साथ संवाद स्थापित करते हैं और उसके परिजनों को भी सुझाव देते हैं।

इलेक्ट्रो कंवल्सिव थेरेपी (ईसीटी): इंडियन साइकिएट्रिक सोसायटी के अनुसार यह थेरेपी डिप्रेशन समेत अन्य मनोरोगों को दूर करने की एक विशिष्ट चिकित्सा विधि है, जिसके अच्छे नतीजे सामने आ रहे हैं। इस विधि के अंतर्गत नियंत्रित विद्युत तरंगों के जरिए 'ब्रेन केमिस्ट्री' को प्रभावित किया जाता है। इसके जरिए मस्तिष्क में आने वाले आत्मघाती विचारों को सकारात्मक विचारों में तब्दील करने में मदद मिलती है।

एंटीडिप्रेसेंट टैबलेट्स: मनोचिकित्सक की सलाह के अनुसार रोगी को एंटीडिप्रेसेंट दवाई लेनी चाहिए। *

प्रस्तुति: विवेक शुक्ला

बच्चों-किशोरों पर पैरेंट्स दें ध्यान

इंडियन साइकिएट्रिक सोसायटी के विशेषज्ञों के अनुसार अपने करियर को बनाने के चक्कर में पढ़ाई का दबाव और उस पर भी पैरेंट्स की अपने बच्चों से बड़ी-बड़ी उम्मीदें सजोना, किशोर और युवा वर्ग को तनावग्रस्त बनाता है। अगर उन्हें उनके मुताबिक नौकरी नहीं मिल पाती तो यह स्थिति कालांतर में डिप्रेशन और कुछ मनोरोगों के जरिए आत्महत्या का कारण बन सकती है। इसलिए पैरेंट्स को अपने बच्चों, खासकर किशोरों और युवाओं पर इस बात की नजर रखनी चाहिए कि उनके बच्चों के स्वभाव में नकारात्मक परिवर्तन तो नहीं हो रहे हैं। अगर ऐसा है, तो फिर उन्हें मनोचिकित्सक के पास जरूर ले जाएं।

हेल्थ सजेशन

रजनी अरोड़ा

अगर आप अपनी डेली लाइफ में कुछ बैड हैबिट्स से दूर रहें तो एजिंग प्रोसेस धीमी होगी। यानी लंबे समय तक आप यंग- एनर्जेटिक बने रहेंगे। इस बारे में आपके लिए बहुत यूजफुल इंफॉर्मेशंस।

अपनाएं ये अच्छी आदतें लंबे समय तक रहेंगे यंग

आज के दौर में मिड एज के ज्यादातर लोग अकसर लो फील करते हैं। दरअसल, जाने-अनजाने वे ऐसी कई आदतें डाल लेते हैं, जो उन्हें ओवरवेटेड, थका हुआ और लो एनर्जी वाला बना देती हैं। जिनकी वजह से अनचाहे ही बुढ़ापे का असर उन पर समय से पहले नजर आने लगता है।

अनहेल्दी डाइट हैबिट: बढ़ती उम्र के साथ व्यक्ति के शरीर का डायजेस्टिव सिस्टम कमजोर और शारीरिक गतिविधियां कम होने लगती हैं। इसकी वजह से हेल्दी रहने के लिए खान-पान में बदलाव लाना जरूरी हो जाता है। यानी युवावस्था में जहां देर-सवेर या जरूरत से ज्यादा खाना और अनहेल्दी या ऑयली फूड भी शरीर पचा लेता है। वहीं 40-45 साल की एज के बाद अकसर इसे नजरअंदाज किया जाता है, जो कई समस्याओं का कारण बन सकता है।

ऐसे में स्ट्रिक्ट डाइटिंग और खान-पान की आदतों में बदलाव लाना इसका सॉल्यूशन है। खाना बंद करने या भूखा रहने के बजाय संतुलित मात्रा में खाना जरूरी है। यानी अपनी डाइट में पोर्शन साइज थोड़ा-सा छोटा करें। हमेशा एक रोटी की भूख छोड़कर खाना खाएं। ओवर ईटिंग न करें। यथासंभव प्रोसेस्ड, जंक और ऑयली फूड्स से परहेज करें। प्रोटीन, कैल्शियम रिच डाइट ज्यादा से ज्यादा लें। लिक्विड कैलोरीज (मीठी चाय, कॉफी, सॉफ्ट ड्रिंक्स, बियर या फ्रूट जूसेस) बिल्कुल बंद कर दें क्योंकि ये ब्लड में पहुंच कर शरीर में तेजी से अवशोषित हो जाते हैं और सेहत के लिए नुकसानदायक होते हैं।

भरपूर नींद न लेना: बढ़ती उम्र में देर रात तक जागना, पूरी नींद न सोने से अगला दिन बेकार ही नहीं हो जाता, सेहत को भी नुकसान पहुंचता है। बॉडी की एनर्जी लो हो जाती है, चिड़चिड़ापन या मूड स्विंग होते हैं, चाहकर भी काम पर फोकस नहीं कर पाते। रात में 6-7 घंटे की नींद न लेने पर बॉडी में फैट एक्यूमुलेशन दोगुना तेजी से बढ़ने लगता है। व्यक्ति अनचाहे ही मोटापे और उससे उपजी बीमारियों की गिरफ्त में आ जाता है। विशेषज्ञों का मानना है कि नींद को लेकर सजग रहें। अच्छी नींद के लिए सोते समय बेडरूम में एकदम अंधेरा करके सोएं। इससे मेलाटोनिन का रिसाव जल्दी होता है और व्यक्ति ज्यादा अच्छे से सो पाता है। टाइम पर बेड पर जाएं। कमरे को थोड़ा ठंडा रखें और सोने से कम-से-कम एक घंटा पहले स्क्रीन (चाहे वो टीवी हो या मोबाइल) बिल्कुल बंद कर दें।

स्ट्रेंथ ट्रेनिंग न करना: आज की युवा पीढ़ी फिटनेस-प्रेमी या जिम-फ्रीक है। ज्यादातर फिट रहने या बॉडी बिल्डिंग के लिए रेग्युलर जिम भी जाते हैं और स्ट्रेंथ ट्रेनिंग, कार्डियो, वेट बियरिंग जैसी एक्सरसाइज करते हैं। जबकि बढ़ती उम्र के व्यक्ति वॉक करने या कार्डियो एक्सरसाइज तक ही सिमट जाते हैं। स्वास्थ्य विशेषज्ञ इसे उपयुक्त नहीं मानते क्योंकि स्ट्रेंथ ट्रेनिंग न करने पर शरीर में धीरे-धीरे मसल्स लॉस होना शुरू हो जाता है जिसका व्यक्ति को जल्द पता नहीं चल पाता। मसल्स दरअसल, व्यक्ति को केवल अच्छा फिगर या अच्छा लुक ही प्रदान नहीं करते, शरीर के सुरक्षा-कवच का भी काम करते हैं। जॉइंट्स को सपोर्ट देते हैं, मेटाबॉलिज्म को एक्टिवेट करते हैं और हार्मोन निर्माण में भी मदद करते हैं। रिसर्च से साबित हो गया है कि 40 साल की उम्र के बाद अगर व्यक्ति स्ट्रेंथ ट्रेनिंग नहीं करते तो हर साल उनका लगभग 1 प्रतिशत मसल्स लॉस होता है।

इससे बचने के लिए जरूरी है मिड एज के बाद भी रेग्युलर जिम जाएं और इंस्ट्रक्टर की निगरानी में स्ट्रेंथ ट्रेनिंग करें। जिम न जा पाने की स्थिति में हफ्ते में तीन-चार दिन बेसिक बॉडी वेट स्ट्रेंथ ट्रेनिंग जरूर करें जैसे-स्क्वेट्स, पुश-अप्स, पुल अप्स, रेजिस्टेंस बैंड्स। घर में मौजूद डंबल्स या वॉटर बोतल की मदद से भी आप एक्सरसाइज कर सकते हैं।

हार्मोनल असंतुलन को इग्नोर करना: मिड एज के बाद अकसर कई तरह की शारीरिक-मानसिक समस्याएं शुरू हो जाती हैं। जिन्हें वे बढ़ती उम्र का असर मान लेते हैं। जैसे- वजन बढ़ना, हर वक्त थकान, काम में मन न लगना, अनियमित माहवारी, प्री-मेनोपॉज होना, सेक्स ड्राइव कम होना। मेडिकल साइंस इनके पीछे की वजह शरीर में मौजूद हार्मोनल असंतुलन को मानता है। हार्मोन असंतुलन होने पर शरीर का पूरा सिस्टम स्लो होने लगता है और कम उम्र में ही व्यक्ति पर असर दिखाई देने लगता है। जरूरी है उम्र से पहले आने वाले बदलावों पर गौर करें और हार्मोन असंतुलन को नजरअंदाज न करें। समय-समय पर हार्मोन लेवल चेक करवाएं। मेडिकल ट्रीटमेंट के अलावा लाइफस्टाइल में बदलाव करने पर हार्मोन-असंतुलन को काफी हद तक इंप्रूव किया जा सकता है।

विल पॉवर न रखना: मिड एज में व्यक्ति की जिंदगी में अकसर ठहराव-सा आ जाता है। व्यक्ति डिसिप्लिन और सिस्टेमेटिक लाइफस्टाइल से दूर होता जाता है। उन्हें किसी के मोटिवेशन का इंतजार ज्यादा रहता है। जिंदगी में स्वस्थ और सफल होने के लिए मोटिवेशन के बजाय डिसिप्लिन और सिस्टम्स बनाना जरूरी है। ऐसे सिस्टम्स बनाने की जरूरत है, जो व्यक्ति को स्वतः ही सही दिशा की तरफ जाने में मदद करें। जरूरी है कि रुटीन, सिस्टम और स्ट्रक्चर तय करें और उसके हिसाब से नियम बनाएं। *

अवेयरनेस

रेखा देशराज

यह सही है कि जड़ी-बूटियों का रिएक्शन तुलनात्मक रूप से कम होता है। लेकिन ये नुकसान करते ही नहीं, यह सोच गलत है। ऐसे में किसी भी जड़ी-बूटी का सेवन करने से पहले कुछ बातों का ध्यान रखना बहुत जरूरी है।

सावधानी के साथ ही करें जड़ी-बूटियों का सेवन

हाल के सालों में प्राकृतिक दवाओं यानी जड़ी-बूटियों को लेकर आम लोगों में विश्वास बहुत ज्यादा बढ़ा है। लेकिन इस बढ़ते भरोसे के बीच सावधानी बरतना भी जरूरी है। क्योंकि पिछले कुछ वर्षों में जड़ी-बूटियों और विभिन्न तरह के हर्बल उत्पादों का जो अंधाधुंध उपयोग शुरू हुआ है, उससे फायदे की जगह कई तरह के नुकसान भी सामने उभरकर आए हैं। दरअसल आम लोग जड़ी-बूटियों को हर हालत में सुरक्षित समझते हैं। इसलिए वो कई बार इनके जानकारों से भी यह राय लेना जरूरी नहीं समझते कि कौन-सी जड़ी-बूटी खानी चाहिए, कब खानी चाहिए और कैसे खानी चाहिए? ऐसे में ऐसी जड़ी-बूटियां जो आमतौर पर सेहत के लिए फायदेमंद होती हैं, कई बार उनसे भी नुकसान होते हुए देखने को मिलता है।

बिना सलाह के न करें सेवन: पहली बात तो यह गांठ बांध लें कि चाहे कोई भी चीज क्यों न हो, बिना उसके जानकार की राय लिए कभी नहीं खानी चाहिए। आजकल व्हाट्सएप, यू-ट्यूब और सोशल मीडिया में सभी विशेषज्ञ बनकर जो जानकारी देते रहते हैं, उससे भी इस तरह के नुकसान की आशंका बहुत बढ़ जाती है। यह समझना भी जरूरी है कि जिन जड़ी-बूटियों को हम केवल फायदे देने वाली समझते हैं, आखिर उनसे नुकसान कैसे हो जाता है? दरअसल, जड़ी-बूटियां पौधों से प्राप्त होती हैं, इसलिए इन्हें रासायनिक दवाओं की तुलना में ज्यादा कोमल माना जाता है। मगर हर कोमल चीज के डोज की भी एक लिमिट होती है। कई बार लोग जड़ी-बूटियों को नुकसान न पहुंचाने वाली समझकर इसके ओवर डोज का शिकार हो जाते हैं यानी इनकी सुरक्षित सीमा से ज्यादा का इस्तेमाल कर लेते हैं। इससे उल्टी, दस्त, सिरदर्द और चक्कर तो आते ही हैं, कई बार लीवर या किडनी भी फेल हो सकती है। इसलिए कभी-भी कोई जड़ी-बूटी तय डोज से ज्यादा न लें।

कई तरह की हो सकती हैं परेशानियां: सवाल है जड़ी बूटियों का इस्तेमाल करते हुए किस-किस तरह की सावधानियां बरती जानी चाहिए, जिससे हम इनके नुकसान के जोखिम से बचे रहें? हो सकता है कि किसी विशेष जड़ी-बूटी से किसी व्यक्ति पर कोई प्रभाव न पड़ता हो और किसी को उससे एलर्जी हो जाए। ऐसे में जिसको एलर्जी होती है, उसके लिए यह जड़ी-बूटी त्वचा पर कई तरह के रैशेज डाल सकती है। उसे सांस लेने में परेशानी पैदा कर सकती है या शरीर में सूजन हो सकती है। इसलिए जड़ी-बूटी का इस्तेमाल करते समय किसी जानकार की राय लेना जरूरी है, भले वह जड़ी-बूटी आपके परिवार में पहले किसी और के द्वारा इस्तेमाल की जाती रही हो और उसे इस तरह की कोई परेशानी न हुई हो। कई जड़ी-बूटियां पाचन सुधारने, प्रतिरक्षा तंत्र को मजबूत करने और शरीर की सूजन कम करने में बहुत असरकारक मानी जाती हैं। लेकिन कई बार यही जड़ी-बूटियां किसी ऐसे व्यक्ति के लिए खतरनाक साबित हो सकती हैं, जो पहले अंग्रेजी दवाओं का इस्तेमाल कर रहा हो, क्योंकि ये जड़ी-बूटियां अंग्रेजी दवाओं के असर को बढ़ा या घटा भी सकती हैं।

तय समय तक करें सेवन: जड़ी-बूटी को लेकर आमतौर पर उनके दीर्घकालिक उपयोग की धारणा बनी हुई है। लगभग हर आदमी यह समझता है कि जड़ी-बूटियों को लंबे समय तक उपयोग किया जा सकता है, क्योंकि इनमें किसी तरह का कोई साइड इफेक्ट नहीं होता। पर यह बात सही नहीं है। विशेषकर गर्भावस्था और स्तनपान करा रही महिलाएं अगर इस तरह के भ्रम का शिकार हों और वे लंबे समय से ली जा रही जड़ी-बूटियों को इन विशेष स्थितियों में भी लगातार लेती रहें, तो इनसे परेशानी पैदा हो सकती है। *

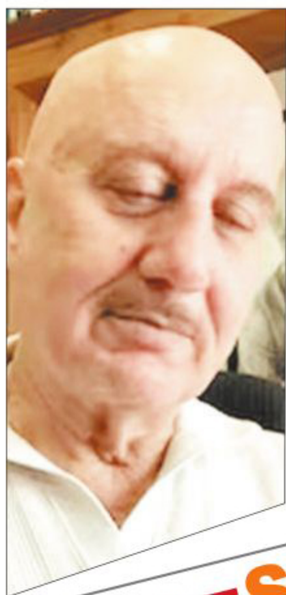

ऑस्कर विनर एक्टर के लिए अनुपम ने लिखा भावुक पोस्ट

मुंबई। हॉलीवुड के मशहूर एक्टर, फिल्म प्रोड्यूसर और ऑस्कर विनर रॉबर्ट डुवैल का 95 साल की उम्र में निधन हो गया। रॉबर्ट डुवैल ने 'द गॉडफादर' जैसी कल्ट फिल्म में अपनी दमदार एक्टिंग से दुनिया भर में पॉपुलैरिटी बटोरी थी। एक्टर अनुपम खेर ने रॉबर्ट डुवैल के निधन पर दुख जताया। उन्होंने अपने इंस्टाग्राम अकाउंट पर रॉबर्ट डुवैल की तस्वीरें पोस्ट करते हुए लिखा, 'रॉबर्ट डुवैल ऐसे एक्टर थे, जिन्हें ध्यान खींचने के लिए कभी शोर की जरूरत नहीं पड़ी। शांत, सटीक और बहुत सच्चे... वह हर रोल में जबरदस्त गहराई लेकर आए और पर्दे पर कमाल की छाप छोड़ी।

लाइफ Style

मोना

स्टार को बीमा पॉलिसी समझते हैं मेकर्स

टीवी की जस्सी के नाम से मशहूर अभिनेत्री मोना सिंह अब इंडस्ट्री की सबसे बिजी अभिनेत्रियों में से एक हैं। वो फिल्मों के साथ-साथ वेब सीरीज में भी लगातार काम कर रही हैं। हाल ही में मोना सिंह नेटफ्लिक्स की सीरीज कोहरा के दूसरे सीजन में नजर आई हैं।

एजेंसी ▶▶ मुंबई

लगातार फिल्मों और सीरीज में अहम भूमिकाएं निभाने के बावजूद मोना सिंह का कहना है कि प्रोड्यूसर्स उनके नाम पर 100 करोड़ रुपए के बजट की फिल्म बनाने का जोखिम नहीं उठाना चाहते। मोना सिंह ने अपने कॅरियर के उस मुकाम पर होने की बात की, जहां वह आसानी से प्रोजेक्ट्स को ठुकरा नहीं सकतीं। अभिनेत्री ने कहा कि यह मेरे द्वारा लिए गए फैसलों की वजह से ही है कि मैं यहां हूं। मैंने प्रासंगिक बने रहने और अपने सिद्धांतों पर कायम रहने की कोशिश की है। इसलिए मैंने कई प्रोजेक्ट्स को मना किया है। हालांकि, मना करना कभी आसान नहीं होता। मुझे लगता है कि जीवन में मुझे पता है कि मैं क्या नहीं चाहती। यह स्पष्टता अब मेरे भीतर है।अभिनेत्री ने आगे कहा कि निर्माता सितारों को एक बीमा पॉलिसी की तरह देखते हैं, ताकि उन्हें अपना पैसा वापस मिल सके। पोस्टर पर एक स्टार बॉक्स ऑफिस कलेक्शन की गारंटी देता है। फिल्म निर्माण आखिरकार एक व्यवसाय है। आप जानते हैं कि आप निवेश कर रहे हैं और आपको उससे कहीं अधिक पैसा वापस मिलने की उम्मीद है। दूसरी ओर किरदार सिर्फ सर्विस प्रोवाइडर बनकर रह जाते हैं। यही सच्चाई है। अगर आप मेरी मुख्य भूमिका वाली 100 करोड़ रुपए की फिल्म की बात कर रहे हैं, तो मुझे ऐसा होता हुआ नहीं दिख रहा है।

हॉलीवुड मसाला

डैनी के साथ शेयर की तस्वीरें

लॉस एंजिल्स। हॉलीवुड अभिनेता ड्वेन जॉनसन ने फिल्म 'जुमांजी 3' की शूटिंग को लेकर अहम जानकारी सोशल मीडिया हैंडल पर शेयर की हैं। फैंस के बीच 'द रॉक' के नाम से मशहूर ड्वेन ने फिल्म के सेट से कुछ खास तस्वीरें शेयर कर फैंस को खुश कर दिया है।17 फरवरी को ड्वेन जॉनसन ने इंस्टाग्राम पर एक भावुक पोस्ट शेयर कर बताया कि फिल्म 'जुमांजी 3' के लिए उनके सह-कलाकार डैनी डेविटो की शूटिंग पूरी हो गई है। उन्होंने डैनी और केविन हार्ट के साथ कुछ तस्वीरें शेयर कीं।

स्पाई-थ्रिलर सीरीज तेहरान से मिली थी पहचान...

लॉस एंजिल्स। इस्राइली प्रोड्यूसर डाना ईडन का 52 साल की उम्र में निधन हो गया है। डाना एक होटल में मृत अवस्था में पाई गईं। वो एमी पुरस्कार विजेता जासूसी थ्रिलर 'तेहरान' की सह-निर्माता थीं। इस्राइल के पब्लिक ब्रॉडकास्टर 'कान' ने डाना ईडन के निधन की जानकारी दी है। इसके मुताबिक, वो ग्रीस में 'तेहरान' के चौथे सीजन की शूटिंग कर रही थीं। डाना ईडन को इस्राइल की सबसे सफल और प्रभावशाली टेलीविजन प्रोड्यूसर्स में गिना जाता था। वह हिट सीरीज 'तेहरान' की सह-निर्माता और क्रिएटर थीं। उन्होंने अपने करियर में कई चर्चित टीवी प्रोजेक्ट्स पर काम किया। जिनमें 'सेविंग्स द वाइल्डलाइफ', 'शी हैज इट', 'मैगपाई' और 'शाकशौका' जैसे शोज के जरिए उन्होंने अपनी पहचान बनाई। डाना ईडन ने अपने प्रोफेशनल पार्टनरशिप प्रोड्यूसर शूला स्पीगल के साथ मिलकर डोना और शुला प्रोडक्शंस की स्थापना की थी।

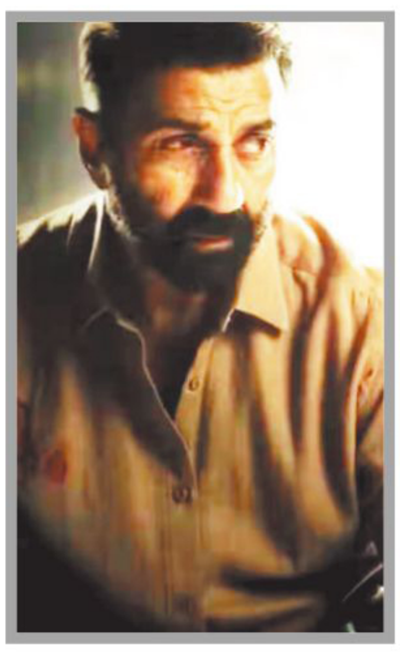

आगे खिसकी गबरू की रिलीज डेट...

मुंबई। सनी देओल अभिनीत फिल्म 'बॉर्डर 2' बॉक्स ऑफिस पर जबर्दस्त तरीके से सफल हुई है। इस बीच वे अपने आगामी प्रोजेक्ट्स को लेकर चर्चा में हैं, जिनमें फिल्म 'गबरू' का भी नाम है। पहले यह फिल्म मार्च में रिलीज होने वाली थी। मगर, अब दर्शकों को इसके लिए थोड़ा इंतजार करना पड़ेगा। रिलीज डेट में बदलाव किया गया है। शशांक उदयपुरकर निर्देशित यह फिल्म पहले 13 मार्च को सिनेमाघरों में रिलीज होने वाली थी। मगर, अब इसमें बदलाव कर दिया गया है। यह फिल्म 8 मई को सिनेमाघरों में दस्तक देगी। हाल ही में सनी देओल ने 'गबरू' को अपने दिल के सबसे करीब फिल्मों में से एक बताया। रणवीर सिंह की 'धुरंधर 2' और यश की 'टॉक्सिक' 19 मार्च को रिलीज हो रही हैं। फिल्म 'गबरू' को विशाल राणा और ओम छंगानी के प्रोड्यूस किया है।

तुम्बाड 2 के लिए विलेन की तलाश जारी

मुंबई। साल 2018 में रिलीज हुई सोहम शाह की हॉरर फिल्म तुम्बाड थिएटर के बाद डिजिटल पर जबरदस्त रिएक्शन मिला था। फिल्म की कहानी, एक्टिंग ने ऑडियंस और गहरी छाप छोड़ी थी। अब सोहम शाह इस तुम्बाड 2 बना रहे हैं। फिल्म पर काम इस साल की शुरुआत में शुरू हो गया है। अब विलेन के सिलेक्शन पर काम चल रहा है। ताजा रिपोर्ट की मानें तो तुम्बाड 2 के लिए धुरंधर के रहमान डकैत अक्षय खन्ना और नवाजुद्दीन सिद्दीकी का नाम सामने आ रहा है। दोनों में से कोई एक हॉरर फिल्म का विलेन बन सकता है। इस फिल्म से जुड़े सूत्र ने एक पोर्टल को जानकारी देते हुए बताया है कि तुम्बाड 2 में एक पावरफुल विलेन का किरदार अहम है। फिल्म की कहानी इसी किरदार के इर्द गिर्द रची गई है। इस विलेन का किरदार इंटेस और कई परतों से बना हुआ है।

टीवी मसाला

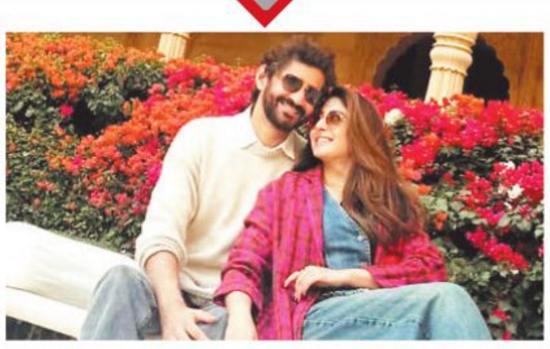

फिल्म की शूटिंग खत्म करते ही शादी के बंधन में बंधेंगी...

नई दिल्ली। कृतिका कामरा और गौरव कपूर इस मार्च शादी के बंधन में बंधने जा रहे हैं। शादी से पहले दोनों अपने-अपने प्रोफेशनल कमिटमेंट्स को पूरा करने में व्यस्त हैं, ताकि जश्न के दौरान वे पूरी तरह फ्री रह सकें। कृतिका अपनी नई फिल्म की शूटिंग खत्म करने में जुटी हैं, जबकि गौरव एक बड़े स्पोर्ट्स टीवी और एंटरटेनमेंट इंडस्ट्री की जानी-मानी जोड़ी कृतिका कामरा और गौरव कपूर अपने जीवन के सबसे खास पड़ाव की ओर बढ़ रहे हैं। दोनों इस मार्च शादी के बंधन में बंधने जा रहे हैं और जैसे-जैसे तारीख नजदीक आ रही है, वैसे-वैसे उनकी जिंदगी में उत्साह बढ़ते नजर आ रहे हैं। शादी से पहले दोनों अपने-अपने प्रोफेशनल कमिटमेंट्स को पूरा करने में पूरी तरह जुटे हुए हैं, ताकि जब जश्न का समय आए तो वे बिना किसी चिंता के हर पल को जी सकें। कृतिका इन दिनों एक इंडिपेंडेंट फिल्म की शूटिंग में व्यस्त हैं। यह प्रोजेक्ट लगातार चलने वाले शेड्यूल में शूट हो रहा है और उम्मीद है कि मार्च के पहले सप्ताह तक इसका काम पूरा हो जाएगा। लंबे शूटिंग घंटों के बावजूद कृतिका शादी की तैयारियों पर भी उतना ही ध्यान दे रही हैं। उनके करीबी बताते हैं कि वह चाहती हैं कि शादी के समय उनका कैलेंडर पूरी तरह खाली हो, ताकि वह इस नए सफर की शुरुआत पूरे सुकून और खुशी के साथ कर सकें। वहीं, गौरव कपूर भी अपने काम में व्यस्त हैं। वह इन दिनों एक बड़े स्पोर्ट्स इवेंट की मेजबानी कर रहे हैं और लगातार शूट व लाइव शेड्यूल में व्यस्त हैं।

अवनीत कौर का मिस्ट्री मैन कौन

नई दिल्ली। अवनीत कौर ने इस वैलंटाइंस डे पर एक ऐसी तस्वीर शेयर की जिसके बाद से उनके मिस्ट्री मैन को लेकर चर्चा शुरू हो गई है।

हालांकि, अवनीत ने वो पोस्ट डिलीट तो कर दिया लेकिन अब वो सवालों के घेरे में फंस गई हैं। पहले तो उन्होंने वैलंटाइंस डे पर सरेआम प्यार का इजहार किया और फिर अपनी वो पोस्ट डिलीट कर डाली। बताया जा रहा है कि ये मिस्ट्री मैन कोई और नहीं, बल्कि राघव शर्मा हैं। हालांकि, भले अवनीत ने वो फोटो डिलीट कर दी लेकिन अब चर्चा है कि क्या एक्ट्रेस राघव शर्मा को डेट कर रही हैं? बताया जा रहा है कि राघव देसी म्यूजिक फैक्ट्री के को-फाउंडर हैं, जो साल 2022 से अवनीत के साथ अपने रिलेशनशिप को लेकर खबरों में हैं। एक्ट्रेस ने पहले तो पोस्ट किया लेकिन इसे लेकर शुरू होते बवाल को देखते हुए उन्होंने ये सबूत मिटाने की कोशिश की। हालांकि, तब तक ये झलक चारों तरफ फैल चुकी थी। उस तस्वीर में अवनीत डाइनिंग टेबल के दूसरी तरफ बैठे एक शख्स का हाथ पकड़े नजर आ रही थीं और जैसे ही उन्होंने ये पोस्ट किया लोगों ने स्क्रीनशॉट रख लिए थे।

अभिषेक अब शाहरुख की किंग में आएंगे नजर...

मुंबई। अभिषेक बच्चन ने अपने नए लुक को लेकर बात की और बताया है कि ये शाहरुख खान की अपकमिंग फिल्म 'किंग' का हिस्सा है। अब एक्टर के इस नए लुक पर लोग जमकर कॉमेंट करते दिख रहे हैं। अभिषेक बच्चन ने शाहरुख की फिल्म का हिस्सा बनने की बात खुद कही है। पिछले दिनों एक इंटरव्यू मं अपने बदले हुए लुक पर बातें करते हुए अभिषेक बच्चन ये ये बातें बताई हैं। अब फिल्म 'किंग' में उनकी भूमिका को लेकर फैंस काफी एक्साइटेड दिख रहे हैं। इसके अलावा लोगों ने उनके इस लुक की तारीफ भी की है। सुपरस्टार शाहरुख खान अपनी अगली मी फिल्म 'किंग' के साथ एक बार फिर बड़े पर्दे पर अपना जादू बिखेरने के लिए तैयार हैं। 'जवान' के बाद आ रही शाहरुख की इस फिल्म में कई बॉलीवुड सितारे दिखेंगे, जिसे लेकर अब अभिषेक बच्चन ने भी कन्फर्म कर दिया है। अभिषेक बच्चन ने 'किंग' में अपनी भूमिका पर भी बात की। उन्होंने हाल में आयोजित 'ग्लोबल बिजनेस समिट 2026' के एक सेशन के दौरान अपने नए हेयरस्टाइल को लेकर बातें की। जब उनसे उनके नए लुक के बारे में पूछा गया, तो उन्होंने कहा, 'मुझे इस बात की खुशी है कि आपने मेरे बदले हुए लुक पर ध्यान दिया। जी हां, मैं फिलहाल अपनी नई फिल्म किंग की शूटिंग कर रहा हूं।' हालांकि उनसे ये भी पूछा गया कि क्या वो इस फिल्म के बारे में और बातें करना पसंद करेंगे? इसपर एक्टर ने ना में जवाब दिया और फिल्म के बारे में और कुछ कहने से साफ इनकार कर दिया।

अधूरी मोहब्बत की ताकत : सैड एंडिंग वाली फिल्में होती हैं सुपरहिट

नई दिल्ली। आज तक हम इस दुख में हैं कि गजनीमें कल्पना को अंत तक नहीं पता चल पाया कि सचिन ही संजय सिंहानिया है। हमें आज भी अफसोस होता है कि आमिर खान क्यों सही वक्त पर पहुंचकर आसिन को नहीं बचा पाए। तेरे नाम में जब राधे पागलखाने पहुंच जाता है और निर्जरा जहर पी लेती है, तो हम अंदर तक दुखी हो जाते हैं। रांझणा में कुंदन का जोया के लिए आखिरी मोनोलॉग आज भी तीर की तरह हमें चुभता है। सनम तेरी कसम में सरस्वती को मरते देख हम सब आंसू बहाते हैं। कल हो ना हो में शाहरुख खान का किरदार अमन माथुर चल बसता है, लेकिन हम आज भी उस फिल्म को याद करते हैं। सदमा में जब ट्रेन से श्रीदेवी चली जाती हैं तो पीछे कमल हासन का छूटना हमें आज भी सताता है। हम दिल दे चुके सनम में सलमान खान के किरदार को तड़पते देख हम भी दर्द महसूस करते थे, मगर ये सारी फिल्में सुपरहिट रहीं। एक विलेन, आशिकी 2, लैला मजनूं, मोहब्बतें जैसी तमाम फिल्में हैं, जिनमें हीरो या हीरोइन या दोनों की मौत हो जाती है, लेकिन बॉक्स ऑफिस पर ये फिल्में शानदार प्रदर्शन करती हैं।

लेकिन सवाल है: जब इन फिल्मों को देखकर हम अंदर तक दुखी हो जाते हैं, फिर भी ये सैड एंडिंग वाली फिल्में सुपरहिट क्यों होती हैं? चलिए समझने की कोशिश करते हैं।

क्यों सुरक्षित रिश्ते लगते हैं बोरिंग, 'रजनीगंधा'ने 52 साल पहले समझा दिया था । इश्क दर्द और सिनेमा

अधूरी मोहब्बत का आकर्षण : जब कोई प्यार पूरी तरह से पूरा नहीं होता या हमें हासिल नहीं हो पाता, तो हमारा दिमाग उसे खास मानने लगता है। साइक्लॉजी में इसे 'अप्राप्य वस्तुओं का आदर्शवाद' कहा जाता है। मतलब, जो चीज मुश्किल या नामुमकिन लगती है, हमारा दिमाग उसे ज्यादा परफेक्ट और रोमांटिक मानता है। इसलिए देवदास, रांझणा, सनम तेरी कसम जैसी अधूरी मोहब्बत की कहानी हमें ज्यादा याद रहती है और दिल को छू जाती है। हमारा अचेतन इसे आइडियल मानता है।

जैसा हरिवंश राय बच्चन ने मधुशाला में लिखा- 'प्यार नहीं पा जाने में है, पाने के अरमानों में! पा जाता तब, हाय, न इतनी प्यारी लगती मधुशाला।' यानी, हासिल करने में प्यार उतना खास नहीं लगता जितना उसे पाने की तड़प में।

एक के लिए तो गिनीज बुक में दर्ज हो चुका है नाम

सिर्फ भारतीय फिल्मों में होती हैं ये 7 अजीब चीजें

नई दिल्ली। बात जब फिल्मों की आती है तो हम अक्सर बातें करते हैं कि बॉलीवुड वाले हॉलीवुड के टक्कर की फिल्में नहीं बना पाते हैं। कभी वीएफक्स तो कभी कोरियन सिनेमा जैसी सादगी हमारी फिल्मों में मिसिंग रहने की बात उठती है। लेकिन, क्या आपको पता है कि भारत साल भर में इतनी फिल्में रिलीज करता है जितनी दुनिया भर में और कहीं नहीं होती हैं। इतना ही नहीं और भी कई ऐसी बातें हैं जो भारतीय सिनेमा को बाकी फिल्म इंडस्ट्रीज से अलग बनाती हैं। तो चलिए जानते हैं भारतीय सिनेमा के बारे में 7 रोचक तथ्य।

फिल्मों की फैक्ट्री है अपना इंडिया

दुनिया को लगता है कि हॉलीवुड सबसे बड़ा है, लेकिन सच यह है कि भारत दुनिया में सबसे ज्यादा फिल्में बनाने वाला देश है। जहां हॉलीवुड साल भर में लगभग 700-800 फिल्में बनाता है, वहीं भारत हर साल 1,500 से 2,000 के बीच फिल्में रिलीज करता है।

बिना गानों की फिल्म का पिटना तय

हॉलीवुड या यूरोपियन सिनेमा में फिल्में बिना गानों के होना सामान्य बात है, वहां 'म्यूजिकल' एक अलग जॉनर होता है। लेकिन, भारत में उल्टा है। यहां बिना गानों की फिल्म बनाना एक बहुत बड़ा जोखिम माना जाता है। भारतीय फिल्मों में औसतन 5-6 गाने होते हैं, जो फिल्म की मार्केटिंग और कमाई का आधा जरिया होते हैं।

स्टार्स का दूध अभिषेक और मंदिर

यह दुनिया के किसी और देश में नहीं होता। दक्षिण भारत में जब किसी बड़े सुपरस्टार की फिल्म रिलीज होती है, तो फैंस उनके कट-आउट्स को दूध से नहलाते हैं। इतना ही नहीं, अमिताभ बच्चन और सोनू सूद जैसे स्टार्स के तो भारत में बाकायदा मंदिर भी बने हुए हैं।

क्यों दुनिया से उलटा चल रहा इंडिया?

दुनिया भर की सिनेमा इंडस्ट्री आज 90 मिनट से 2 घंटे की फिल्मों की ओर बढ़ रहा है, लेकिन भारतीय दर्शक आज भी 'पैसा वसूल' अनुभव के लिए कम से कम 2.5 से 3 घंटे की फिल्म की उम्मीद करते हैं। भारत में फिल्म देखने जाना मतलब पूरा दिन इसके लिए निकालना पड़ता है। क्योंकि, कई बार 3 घंटे की फिल्म और इंटरवल फिर फिल्म से पहले और बाद थोड़ा घूमना-फिरना पूरा दिन लेता है।

सिर्फ यहां का बोर्ड लगाता है ऐसे नियम

भारत दुनिया के उन चुनिंदा देशों में से है जहां फिल्मों में स्मोकिंग या शराब के सीन आने पर स्क्रीन के नीचे 'चेतावनी' दिखाना जरूरी है। विदेशी फिल्मों को भी भारत में रिलीज होते समय इन नियमों का पालन करना पड़ता है, जो बाहर के फिल्ममेकर्स के लिए काफी अजीब अनुभव होता है।

दुनिया का सबसे बड़ा फिल्मी परिवार

भारतीय सिनेमा जगत में 'नेपोटिज्म' की खूब चर्चा तो होती है, लेकिन क्या आपको पता है कि इसी वजह से हमने गिनीज बुक में भी जगह पाई है। कपूर खानदान का नाम 'गिनीज वर्ल्ड बुक' में दर्ज है, क्योंकि उनकी एक ही परिवार की पांच पीढ़ियां (पृथ्वीराज कपूर से लेकर रणबीर-करीना तक) सिनेमा जगत का हिस्सा रही हैं।

कहीं नहीं मिलती ऐसी फैन फॉलोइंग

आपको जानकर हैरानी होगी कि राज कपूर रूस में वहां के लोकल हीरोज से ज्यादा पॉपुलर थे। वहीं, रजनीकांत का जापान में इतना जबरदस्त क्रेज है कि वहां उनकी फिल्मों के खास शोज चलते हैं। मिथुन चक्रवर्ती का 'डिस्को डांसर' अवतार आज भी रूस और मिड एशिया के देशों में एक कल्ट माना जाता है।

जम्मू-कश्मीर ने रचा इतिहास, बंगाल को हराकर फाइनल में 67 साल बाद एंट्री

रणजी ट्रॉफी : बंगाल को 6 विकेट से दी शिकस्त, आकिब नबी ने चटकाए 9 विकेट

एजेंसी ▸▸| कल्याणी

जम्मू कश्मीर ने सेमीफाइनल के चौथे दिन दो बार के पूर्व चैंपियन बंगाल को 6 विकेट से करारी शिकस्त देकर अपने 67 साल के इतिहास में पहली बार रणजी ट्रॉफी क्रिकेट टूर्नामेंट के फाइनल में पहुंचकर इतिहास रच दिया। बंगाल ने जम्मू कश्मीर के सामने 126 रन का लक्ष्य रखा था।

जम्मू कश्मीर में 34.4 ओवर में चार विकेट खोकर यह लक्ष्य हासिल कर दिया। उसकी तरफ से वंशज शर्मा ने नाबाद 43 और अब्दुल समद ने नाबाद 30 रन बनाए। तेज गेंदबाज आकिब नबी ने मैच में 9 विकेट लेकर बंगाल की जीत की संभावनाओं को पूरी तरह से खत्म कर दिया था।

जम्मू-कश्मीर को लगे पहली जीत दर्ज करने में 44 साल

जम्मू कश्मीर ने पहली बार 1959-60 के सत्र में रणजी ट्रॉफी में हिस्सा लिया था और तब से लेकर अब तक उसे मजबूत दावेदार नहीं माना जाता था। जम्मू कश्मीर ने इस सत्र से पहले 334 रणजी मैच खेले थे, जिनमें से उसने केवल 45 जीते थे। उसे अपनी पहली जीत दर्ज करने में 44 साल लग गए, जो उसने 1982-83 में सेना के खिलाफ हासिल की थी। उसके लिए नॉकआउट में पहुंचना कभी आसान नहीं रहा लेकिन 2013-14 में उसे एक बड़ी सफलता मिली जब उसने नेट रन रेट के आधार पर गोवा को पीछे छोड़कर क्वार्टर फाइनल में जगह बनाई। उसने 2015-16 में परवेज रसूल की कप्तानी में वानखेड़े स्टेडियम में मुंबई को हराकर अपनी सबसे बड़ी जीत दर्ज की थी।

वंशज-समद ने दिलाई ऐतिहासिक जीत

जम्मू कश्मीर ने मंगलवार को तीसरे के दिन का खेल समाप्त होने तक दो विकेट पर 43 रन बनाए थे। उसने चौथे दिन की शुरुआत में ही अविजित बल्लेबाज शुभम पुंडीर (27) और कप्तान पारस डोगरा (09) के विकेट गंवा दिए, लेकिन वंशज और समद ने बंगाल के गेंदबाजों को कोई मौका नहीं दिया और 55 रन की अटूट साझेदारी करके अपनी टीम को ऐतिहासिक जीत दिलाई।

बंगाल नहीं उठा पाया बढ़त का फायदा

बंगाल ने अपनी पहली पारी में 328 रन बनाए थे, जिसके जवाब में जम्मू कश्मीर ने 302 रन बनाए। बंगाल हालांकि पहली पारी की मामूली बढ़त का फायदा नहीं उठा पाया और उसकी टीम दूसरी पारी में केवल 99 रन पर आउट हो गई। मैच के सर्वश्रेष्ठ खिलाड़ी चुने गए नबी ने कहा, 'पिछली बार हम क्वार्टर फाइनल में हार गए थे, लेकिन हमने कड़ी मेहनत की और हम इसके हकदार थे।'

आईसीसी रैंकिंग

ईशान की सुनामी, लगाई 17 पायदान की छलांग

टॉप-10 में भारतीयों का दबदबा

एजेंसी ▸▸| दुबई

ईशान किशन का शानदार प्रदर्शन जारी है। टी20 वर्ल्ड कप में बाएं हाथ के विकेटकीपर बल्लेबाज ने धुआंधार बल्लेबाजी की है। इसका फायदा टी20 बल्लेबाजी रैंकिंग में हुई है। इंटरनेशनल क्रिकेट काउंसिल ने बुधवार को रैंकिंग जारी की। इशान किशन ने 17 स्थान की छलांग लगाकर टॉप-10 में एंट्री कर ली है। टी20 में बल्लेबाजों की रैंकिंग की बात करें तो भारतीय खिलाड़ियों का दबदबा है। शीर्ष-10 बल्लेबाजों में 4 भारतीय हैं। अभिषेक शर्मा पहले, तिलक वर्मा चौथे, सूर्यकुमार यादव छठे और इशान किशन आठवें नंबर पर हैं। तिलक वर्मा को एक स्थान का फायदा हुआ है। अभिषेक और सूर्यकुमार के स्थान में कोई बदलाव नहीं हुआ है।

निसांका तीसरे नंबर पर पहुंचे

ईशान किशन के अलावा साउथ अफ्रीका के रयान रिकेल्टन ने 22 स्थान की छलांग लगाई है। वह 11 नंबर पर पहुंच गए। कप्तान एडेन मार्कराम ने 6 स्थान की छलांग लगाई है। वह 15वें नंबर पर पहुंच गए। टी20 वर्ल्ड कप में पहला शतक लगाने वाले पथुम निसांका ने तीन स्थान की छलांग लगाकर तीसरे नंबर पर पहुंच गए हैं। पाकिस्तान के ओपनर साहिबजादा फरहान को 2 स्थान का नुकसान हुआ है।

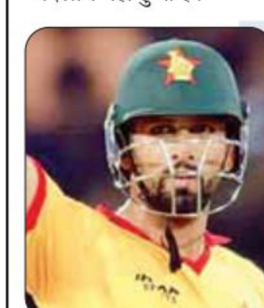

अयूब-रजा के बीच दिलचस्प लड़ाई

टी20 में ऑलराउंडर्स की रैंकिगं में पाकिस्तान के सैम अयूब और जिम्बाब्वे के कप्तान सिकंदर रजा के बीच दिलचस्प लड़ाई चल रही है। अयूब 303 रेटिंग अंक के साथ पहले और सिंकदर रजा 297 रेटिंग अंक के साथ दूसरे नंबर पर हैं। हार्दिक पंड्या 282 रेटिंग अंक के साथ तीसरे नंबर पर हैं।

चक्रवर्ती नंबर-1 गेंदबाज

टी20 में गेंदबाजों की रैंकिंग में भारत के स्पिनर वरुण चक्रवर्ती 796 रेंटिंग के साथ शीर्ष पर हैं। अफगाविस्तान के कप्तान राशिद खान एक स्थान ऊपर दूसरे नंबर पर पहुंच गए हैं। पाकिस्तान के अबरार अहमद को एक स्थान का नुकसान हुआ है। वह तीसरे नंबर पर पहुंच गए हैं। जिम्बाब्वे के ब्रैंड इवांस को 10 स्थान का फायदा हुआ। वह 5वें नंबर पर पहुंच गए।

खबर संक्षेप

डीएलटीए ने किया डेविस कप टीम को सम्मानित

नई दिल्ली। दिल्ली लॉन टेनिस संघ (डीएलटीए) ने चल रहे दिल्ली ओपन के दौरान नीदरलैंड पर शानदार जीत दर्ज करने वाली भारतीय डेविस कप टीम को सम्मानित किया। भारत ने इस महीने की शुरु में बेंगलुरु में एक रोमांचक मुकाबले में छठी रैंकिंग वाली नीदरलैंड की टीम को 3-2 से हराकर सितंबर में होने वाले क्वालीफायर के दूसरे दौर में जगह बनाई। भारतीय टीम की तब रैंकिंग 33 थी। डीएलटीए अध्यक्ष रोहित राजपाल ने कहा, 'डीएलटीए में हम हर स्तर पर भारतीय टेनिस का समर्थन करने और मजबूत करने के लिए प्रतिबद्ध हैं।' सुमित नागल ने कहा, 'सभी खिलाड़ियों ने शानदार प्रदर्शन किया। आप कोर्ट में जाकर अपना मैच जीतते हैं तो यह आसान होता जाता है। स्विट्जरलैंड में हमें दो अंक मिले और इस बेंगलुरु मुकाबले में युकी भांबरी और दक्षिणेश्वर सुरेश ने सभी अंक हासिल किए। आखिर में डेविस कप मुकाबला टीम के बारे में है और सभी ने अच्छा प्रदर्शन किया।

21 फरवरी से एशियाई क्रॉस-कंट्री चैंपियनशिप

नई दिल्ली। सेना के हरमनजोत सिंह 12 सदस्यीय भारतीय टीम में शामिल होंगे, जो 21 फरवरी से जापान के फुकुओका में होने वाली 18वीं एशियाई क्रॉस-कंट्री चैंपियनशिप में हिस्सा लेगी। भारतीय एथलेटिक्स महासंघ (एएफआई) के अध्यक्ष बहादुर सिंह सागू ने कहा कि टीम बुधवार को जापान के लिए रवाना होगी। एएफआई ने पिछले महीने झारखंड के रांची में हुई 60वीं राष्ट्रीय क्रॉस-कंट्री चैंपियनशिप में खिलाड़ियों के प्रदर्शन के आधार पर टीम चुनी। भारतीय खिलाड़ी सीनियर पुरुष, महिला और अंडर-20 ग्रुप में हिस्सा लेंगे।

मौजूदा ऑस्ट्रेलियाई टीम में चमक नहीं : पोंटिंग

नई दिल्ली। पूर्व कप्तान रिकी पोंटिंग ने टी20 विश्व कप से ऑस्ट्रेलिया के बाहर होने के बाद कहा कि यह बहुत खराब अभियान रहा और मौजूदा टीम में वह चमक नहीं है, जो वैश्विक टूर्नामेंट में पिछली टीमों में हुआ करती थी। आईसीसी 'रिव्यू' में पोंटिंग ने कहा कि कागज पर यह टीम उन पिछली ऑस्ट्रेलियाई टीम जैसी प्रभावशाली नहीं दिखती, जिन्होंने आईसीसी टूर्नामेंट में दबदबा बनाया था। पोंटिंग ने कहा, 'जब आप इस ऑस्ट्रेलियाई टीम को कागज पर देखते हैं, तो उसमें वह आभा नजर नहीं आती जो कई अन्य ऑस्ट्रेलियाई टीम में आईसीसी टूर्नामेंट और विश्व कप से पहले दिखाई देती थी।' उन्होंने कहा, 'इन टूर्नामेंटों में आगे बढ़ने और जीतने के लिए आपके सर्वश्रेष्ठ और सबसे अनुभवी खिलाड़ियों को बड़े मौकों पर प्रदर्शन करना होता है। ऑस्ट्रेलिया को वह प्रदर्शन नहीं मिला।'

34वां मुकाबला : बॉश ने किए तीन शिकार, रहे प्लेयर ऑफ द मैच

द. अफ्रीका ने लगाया जीत का चौका, 40 गेंद शेष रहते यूएई पर 6 विकेट से फतह

एजेंसी ▸▸| नई दिल्ली

साउथ अफ्रीका ने शानदार खेल जारी रखते हुए टी20 वर्ल्ड कप में लगातार चौथी जीत दर्ज की। उसने ग्रुप डी के अपने आखिरी मुकाबले में संयुक्त अरब अमीरात (यूएई) को छह विकेट से मात दी। साउथ अफ्रीका को जीत के लिए 123 रन का लक्ष्य मिला था, जिसे उसने चार विकेट गंवाकर 14वें ओवर में हासिल कर लिया। इससे पहले यूएई की टीम पहले बैटिंग करते हुए छह विकेट पर 122 रन ही बना सकी। उसकी तरफ से अलीशान शराफू ने सर्वाधिक 45 रन की पारी खेली। साउथ अफ्रीका की तरफ से कॉर्बिन बॉश ने 12 रन देकर 3 विकेट लिए तो एनरिक नॉर्त्जे को 28 पर 2 दो सफलता मिली। कॉर्बिन बॉश प्लेयर ऑफ द मैच रहे। साउथ अफ्रीका ने पहले तीन मैच जीतकर सुपर 8 में जगह बना ली थी। वहीं यूएई इस रेस से बाहर था।

मार्करम ने दिया आतिशी आगाज

लक्ष्य का पीछा करते हुए साउथ अफ्रीका को कप्तान एडन मार्करम ने आतिशी आगाज दिया। उन्होंने 11 गेंद में पांच चौकों व एक छक्के से 28 रन उड़ाए। क्विंटन डिकॉक 16 गेंद में 14 रन बनाकर आउट हुए। रयान रिकल्टन ने 16 में 30 तो डेवाल्ड ब्रेविस ने 25 गेंद में 36 रन बनाते हुए टीम को जीत की दहलीज पर पहुंचा दिया। रिकल्टन ने तीन चौके व दो छक्के तो ब्रेविस ने एक चौका व तीन छक्के उड़ाए। ट्रिस्टन स्टब्स व जेसन स्मिथ ने मिलकर जीत की औपचारिकता पूरी की।

यूएई की तरफ से सराफू ने बनाए सर्वाधिक रन

यूएई की तरफ से शराफू ही बना सके रन

पहले बैटिंग करते हुए यूएई ने आगाज अच्छा किया। कप्तान मोहम्मद वसीम ने 12 गेंद में चार चौकों से 22 रन बनाए। उनके साथी ओपनर आर्यांश शर्मा ने 17 गेंद में 13 रन की पारी खेली। लेकिन इसके बाद शराफू ही रन जुटा सके। उन्होंने 39 गेंद का सामना किया और पांच चौके व एक छक्का लगाया। बाकी बल्लेबाज हवाई शॉट खेलने की कोशिशों में आउट होते चले गए।

नॉर्त्जे ने रचा कीर्तिमान सर्वाधिक विकेट लेने में बने नंबर-2 गेंदबाज

साउथ अफ्रीका के गेंदबाज एनरिक नॉर्त्जे ने 4 ओवरों में 28 रन देकर 2 विकेट हासिल किए। इसी के साथ नॉर्त्जे टी20 वर्ल्ड कप इतिहास में सर्वाधिक विकेट लेने वाले तेज गेंदबाजों की लिस्ट में दूसरे पायदान पर पहुंच गए हैं। नॉर्त्जे ने साल 2021 से अब तक टी20 वर्ल्ड कप मुकाबलों में 37 विकेट हासिल किए हैं, जबकि पूर्व श्रीलंकाई खिलाड़ी लसिथ मलिंगा 31 मुकाबलों में 38 विकेट लेकर शीर्ष पर मौजूद हैं। साउथ अफ्रीकी टीम सुपर-8 में तीन मैच खेलेगी, जिसमें नॉर्त्जे के पास मलिंगा से आगे निकलने का मौका होगा। तेज गेंदबाजों की इस लिस्ट में टिम साउदी तीसरे पायदान पर हैं, जिन्होंने 25 मुकाबलों में 36 विकेट निकाले है।

प्रीव्यू : तेज गेंदबाजों के दम पर टीम इंडिया का बढ़त हासिल करना लक्ष्य

महिला टी20 : भारत और ऑस्ट्रेलिया के बीच आज दोपहर 1.45 बजे से मुकाबला

एजेंसी ▸▸| कैनबरा

भारतीय महिला क्रिकेट टीम गुरुवार को जब दूसरे टी20 अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट मैच में ऑस्ट्रेलिया का सामना करेगी तो वह पहले मैच में तेज गेंदबाजों के शानदार प्रदर्शन से प्रेरणा लेने की कोशिश करेगी। तेज गेंदबाज अरुंधति रेड्डी ने पहले मैच में चार विकेट लेकर ऑस्ट्रेलिया की बल्लेबाजी को झकझोर दिया था। ऑस्ट्रेलिया की टीम 20 ओवर भी पूरे नहीं खेल पाई और केवल 133 रन पर आउट हो गई। भारतीय बल्लेबाजों को हालांकि बारिश के कारण खेलने का खास मौका नहीं

मिला। भारत ने यह मैच डकवर्थ-लुईस प्रणाली के आधार पर जीता, जिसमें केवल सलामी बल्लेबाज स्मृति मंधाना और शेफाली वर्मा ही कुछ समय क्रीज पर बिता पाईं।

भारत एक बार फिर शेफाली की तूफानी शुरुआत पर निर्भर रहेगा, जिन्होंने पिछले साल दक्षिण अफ्रीका के खिलाफ विश्व कप फाइनल में शानदार प्रदर्शन किया था। इसके अलावा मंधाना की करिश्माई बल्लेबाजी तथा कप्तान हरमनप्रीत कौर और जेमिमा रोड्रिग्स की भूमिका भी महत्वपूर्ण होगी। इस साल इंग्लैंड में होने वाले महिला टी20 विश्व कप को देखते हुए भारत के लिए यह श्रृंखला काफी महत्वपूर्ण है। तीन मैचों की टी20 अंतरराष्ट्रीय श्रृंखला जीतने से भारत को आत्मविश्वास मिलेगा । नई कप्तान सोफी मोलिनी की अगुवाई वाली ऑस्ट्रेलिया की टीम बदला लेने और श्रृंखला बराबर करने के लिए बेताब होगी।

आचार संहिता के उल्लंघन पर मुन्से को आईसीसी की फटकार

मुंबई। स्कॉटलैंड के सलामी बल्लेबाज जॉर्ज मुन्से को यहां नेपाल के खिलाफ आईसीसी टी20 विश्व कप के ग्रुप सी मैच के दौरान विज्ञापन बोर्ड पर अपना हेलमेट

फेंकने के लिए फटकार लगाई गई है और एक डिमेरिट अंक दिया गया है। मुन्से को खिलाड़ियों और खिलाड़ियों के सहयोगी स्टाफ के लिए आईसीसी आचार संहिता के नियम 2.2 के उल्लंघन का दोषी पाया गया, जो अंतरराष्ट्रीय मैच के दौरान क्रिकेट उपकरण या पोशाल, मैदान के उपकरण या साजो-सामान के दुरुपयोग' से संबंधित है। इसके अलावा मुन्से के अनुशासनात्मक रिकॉर्ड में एक डिमेरिट अंक भी जोड़ा गया है।

35वां मुकाबला : नामीबिया को हराकर 'सुपर-8' में पाकिस्तान, फरहान का नाबाद शतक

एजेंसी ▸▸| कोलंबो

पाकिस्तान ने बुधवार को टी20 वर्ल्ड कप के 35वें मुकाबले में नामीबिया के खिलाफ 102 रन से जीत दर्ज करते हुए 'सुपर-8' में जगह बना ली है। सुपर-8 में पाकिस्तानी टीम 21 फरवरी को न्यूजीलैंड के विरुद्ध मुकाबला खेलेगी, जिसके बाद 24 फरवरी को इंग्लैंड से उसकी भिड़ंत होगी। पाकिस्तान सुपर-8 के अपने अंतिम मैच में श्रीलंकाई टीम को चुनौती देगा। सिंहली स्पोर्ट्स क्लब में टॉस जीतकर बल्लेबाजी करने उतरी पाकिस्तानी टीम ने 3 विकेट खोकर 199 रन बनाए।

नामीबियाई टीम 97 रन पर सिमटी

इसके जवाब में नामीबियाई टीम 17.3 ओवरों में महज 97 रन पर सिमट गई। नामीबिया की तरफ से लौरेन स्टीनकैंप ने 23 रन का योगदान टीम के खाते में दिया, जबकि अलेक्जेंडर वोल्शेंक ने 20 रन की पारी खेली। इनके अलावा, कोई अन्य बल्लेबाज दहाई का आंकड़ा नहीं छू सका। पाकिस्तान की तरफ से उस्मान तारिक ने 3.3 ओवरों में 16 रन देकर 4 विकेट निकाले, जबकि शादाब खान ने 3 विकेट हासिल किए। इनके अलावा, सलमान मिर्जा और मोहम्मद नवाज ने 1-1 विकेट अपने नाम किया।

रिंडरकनेच को हराकर 150वीं टूर-लेवल हार्ड-कोर्ट हासिल की फतह

कतर ओपन : अल्काराज की जीत के साथ शानदार शुरुआत

एजेंसी ▸▸| दोहा

कार्लोस अल्काराज ने कतर ओपन की शुरुआत जीत के साथ की है। अल्काराज ने आर्थर रिंडरकनेच को 6-4, 7-6 (5) से हराकर टूर्नामेंट की शानदार शुरुआत की है। 22 साल के अल्काराज ने दूसरे सेट में सर्विस पर दो सेट पॉइंट बचाए और फिर टाई-ब्रेक में जीत हासिल करके अपनी 150वीं टूर-लेवल हार्ड-कोर्ट जीत हासिल की।kजीत के बाद अल्काराज ने कहा, "यह सच में मुश्किल था। आर्थर सच में एक खतरनाक खिलाड़ी है। कोई भी उसके खिलाफ पहले राउंड में नहीं खेलना चाहता। मुझे खुशी है कि मैं मैच में मुश्किल पलों से निकल गया। मुझे खुशी है कि मैं शांत और सकारात्मक रहा, और शानदार टेनिस खेला।"

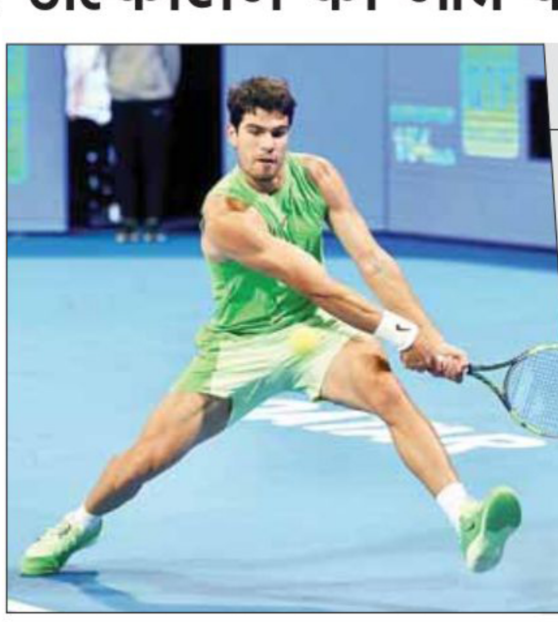

अगला मुकाबला वैलेन्टिन रॉयर से

अल्काराज पिछले साल दोहा में अपने डेब्यू के नतीजे को बेहतर करना चाहते हैं, जहां वह क्वार्टर-फाइनल में जिरी लेहेका से हार गए थे। एटीपी रैंकिंग में नंबर 1 खिलाड़ी का अगला मुकाबला फ्रेंचमैन वैलेन्टिन रॉयर से होगा। अल्काराज चैंपियनशिप मैच में दूसरे सीड सिनर से भिड़ सकते हैं। इससे पहले, स्पेन के इस खिलाड़ी का क्वार्टर-फाइनल में करेन खाचानोव से मुकाबला हो सकता है।

खाचानोव ने मोचिजुकी को 6-1, 3-6, 6-4 से दी मात

एक अन्य मैच में खाचानोव ने लकी लूजर शिंटारो मोचिजुकी को 6-1, 3-6, 6-4 से हराया। सातवें सीड वाले खाचानोव का दूसरे राउंड में मार्टन फुकसोविक्स से मुकाबला होगा। वहीं डिफेंडिंग चैंपियन एंड्री रुबलेव ने बाद में धीमी शुरुआत से उबरते हुए अपने शुरुआती मैच में जेस्पर डी जोंग पर 6-4, 6-3 से जीत हासिल की। पांचवें सीड, जिन्होंने 2020 में दोहा ट्रॉफी भी जीती थी, जब यह एटीपी 250 था, अब उनका सामना फैबियन मारोजसन से होगा, जिन्होंने उगो हम्बर्ट को 6-3, 6-1 से हराया। स्टेफानोस त्सित्सिपास ने ट्यूनीशियाई वाइल्ड कार्ड मोएज इचारगुई पर 6-4, 6-4 से जीत के साथ अपने दोहा कैंपेन की शुरुआत की और लंबे समय के प्रतिद्वंद्वी डेनियल मेदवेदेव के साथ दूसरे राउंड का मुकाबला बुक किया।

एक दशक बाद पैरालंपिक में रूसी ध्वज की वापसी

एजेंसी ▸▸| मिलान

रूसी खिलाड़ी एक दशक से अधिक समय में पहली बार पैरालंपिक शीतकालीन खेलों में अपने देश के ध्वज के तले प्रतिस्पर्धा करेंगे और उसके किसी खिलाड़ी के स्वर्ण पदक जीतने पर पदक वितरण समारोह में रूस का राष्ट्रगान बजाया जाएगा।

लॉस एंजिल्स में 2028 में होने वाले ग्रीष्मकालीन ओलंपिक खेलों से काफी पहले ओलंपिक जगत में रूस और उसकी राष्ट्रीय पहचान पूरी तरह से बहाल हो जाएगी। अंतरराष्ट्रीय पैरालंपिक समिति ने कहा कि रूस की राष्ट्रीय पैरालंपिक समिति को आगामी मिलान कोर्टिना पैरालंपिक खेलों के लिए छह स्थान आवंटित किए गए हैं। यह 2014 में रूस के सोची में हुए

पैरालंपिक शीतकालीन खेलों के बाद पहली बार होगा जब पैरालंपिक खेलों में रूस का ध्वज फहराया जाएगा। रूस पर पहले सरकार प्रायोजित डोपिंग कार्यक्रम के कारण प्रतिबंध लगाया गया था।

इसके बाद 2022 में यूक्रेन पर रूस के आक्रमण के बाद से उसके खिलाफ प्रतिबंध जारी रखे गए। रूस के करीबी सहयोगी बेलारूस पर भी 2022 से प्रतिबंध लगा हुआ है, लेकिन मिलान कोर्टिना में उसके लिए चार स्थान उपलब्ध होंगे।

पोलिंग बूथ पर मोबाइल ले जाने की छूट, ईवीएम पर पहली बार रंगीन फोटो

मुख्य चुनाव आयुक्त ने की कई अहम बदलावों की घोषणा | 100 मीटर दूर अपनी टेबल लगा सकेंगे राजनीतिक दल

एजेंसी ▶▶| नई दिल्ली

असम में चुनावी तैयारियों की समीक्षा के दौरान मुख्य चुनाव आयुक्त ज्ञानेश कुमार ने कई अहम बदलावों की घोषणा की। उन्होंने बताया कि इस बार ईवीएम पर उम्मीदवारों की रंगीन फोटोज लगाई जाएंगी। इसके अलावा उनके नाम और सीरियल नंबर भी बड़े फॉन्ट में दिखेंगे ताकि मतदाताओं की पहचान आसानी से हो सके। इसके अलावा प्रत्येक मतदान केंद्र पर अधिकतम 1,200 मतदाताओं की सीमा तय की गई है। खास बात यह है कि पहली बार असम में मतदाता अपने मोबाइल फोन मतदान केंद्र के प्रवेश द्वार पर जमा कर सकेंगे जिससे मतदान प्रक्रिया अधिक सुव्यवस्थित और पारदर्शी बन सके।

यह होगा हर मतदान केंद्र में

असम में चुनाव तैयारियों की समीक्षा के दौरान मुख्य चुनाव आयुक्त ज्ञानेश कुमार ने कहा, 'हमारे जो उम्मीदवार होते हैं, उनकी भी ये शिकायत होती थी कि उनके जो फोटोज होते हैं, वो इतने पुराने होते हैं कि मतदाता उन्हें पहचान ही नहीं पाते। इसलिए पहली बार ईवीएम पर उम्मीदवारों की कलर फोटोज डिस्प्ले की जाएंगी और उनके नाम व सीरियल नंबर बड़े फॉन्ट में दिखाए जाएंगे। हमने हर मतदान केंद्र पर अधिकतम 1200 मतदाताओं की सीमा तय की है। जिससे लाइनें बहुत लंबी ना हों और मतदाताओं को बहुत ज्यादा देर इंतजार ना करना पड़े।'

ये हैं नए इनिशिएटिव

ज्ञानेश कुमार ने कहा, 'जहां तक नए इनिशिएटिव की बात है तो असम में पहली बार मतदाताओं को यह मौका मिलेगा कि मोबाइल घर पर छोड़कर जाने की जरूरत नहीं है। आप आसानी से पोलिंग बूथ के दरवाजे तक अपना फोन लेकर जा सकते हैं। और बाहर मोबाइल फोन रखने के बाद अंदर जाकर वोट करें और वापस अपना फोन लें। यह मांग काफी लंबे समय से हो रही थी तो चुनाव आयोग ने यह फैसला लिया कि यह सुविधा दी जानी चाहिए।' मुख्य चुनाव आयुक्त ने कहा, 'अभी तक राजनीतिक दलों को पोलिंग बूथ से काफी दूर बैठाया जाता था। लेकिन अब मतदाताओं की मदद के लिए वे 100 मीटर दूर अपनी टेबल लगा सकते हैं।'इस दौरान, ज्ञानेश ने बताया कि दस राज्यों में राज्यसभा की 37 सीट के लिए द्विवार्षिक चुनाव 16 मार्च को होंगे। निर्वाचन आयोग ने बुधवार को यह जानकारी दी। ये सीट महाराष्ट्र, ओडिशा, तेलंगाना, तमिलनाडु, छत्तीसगढ़, पश्चिम बंगाल, असम, हरियाणा, हिमाचल प्रदेश और बिहार में अप्रैल में अलग-अलग तिथियों में खाली हो रहीं हैं।

बीहू को लेकर चुनाव तिथियों पर होगा विचार

चुनाव तिथियों के निर्धारण पर पूछे गए सवाल के जवाब में ज्ञानेश कुमार ने कहा कि बीहू असम का अत्यंत महत्वपूर्ण पर्व है। इसलिए समीक्षा बैठकों के दौरान विभिन्न पक्षों से प्राप्त सुझावों और प्रस्तावों पर गंभीरता से विचार किया जाएगा। उन्होंने संकेत दिया कि चुनाव कार्यक्रम तय करते समय राज्य की सांस्कृतिक और सामाजिक परिस्थितियों को ध्यान में रखा जाएगा। ज्ञानेश कुमार के मुताबिक, आयोग की प्राथमिकता स्वतंत्र, निष्पक्ष और सुचारु चुनाव कराना है, लेकिन इसके साथ ही स्थानीय परंपराओं और जनभावनाओं का सम्मान करना भी उतना ही जरूरी है। उन्होंने भरोसा दिलाया कि सभी पक्षों से प्राप्त सुझावों का मूल्यांकन कर संतुलित और व्यावहारिक चुनाव कार्यक्रम घोषित किया जाएगा।

12 राज्यों में एसआईआर, असम में एसआर

मुख्य चुनाव आयुक्त ने स्पष्ट किया कि चुनावी नियमों के अनुसार मतदान से पहले मतदाता सूची का अद्यतन जरूरी है। इसी के तहत 12 राज्यों में विशेष गहन पुनरीक्षण (एसआईआर) कराया गया, जबकि असम में विशेष पुनरीक्षण (एसआर) आयोजित किया गया। उन्होंने बताया कि यह पूरी प्रक्रिया सफल रही है। राज्य के सभी जिलों से कुल लगभग 500 लोगों ने ही अपने नाम जोड़ने या किसी अन्य नाम को हटाने के लिए अपील दायर की है, जो इस बात का संकेत है कि सूची काफी हद तक सटीक है।

खबर संक्षेप

अमेरिका से कोकिंग कोयला लेने को भारत इच्छुकः गोयल

नयी दिल्ली। वाणिज्य एवं उद्योग मंत्री पीयूष गोयल ने बुधवार को कहा कि भारत कच्चे तेल और इस्पात उत्पादन में इस्तेमाल होने वाले कोकिंग कोयले के आयात स्रोतों में विविधता लाना चाहता है और उसे अमेरिका से उच्च गुणवत्ता वाला कोकिंग कोयला लेने में 'खुशी' होगी। गोयल ने कहा, 'हम कच्चे तेल के अपने स्रोतों में विविधता लाना चाहते हैं। मसलन, कोकिंग कोयले के स्रोत में भी विविधता लाना चाहते हैं।

चीन : दुकान में धमाका 12 लोगों की मौत

बीजिंग। चीन के हुबेई प्रांत में आतिशबाजी की एक दुकान में जोरदार विस्फोट होने से 12 लोगों की मौत हो गई। यह हादसा बुधवार दोपहर शिंजियांन शहर में हुआ। धमाके के बाद दुकान में भीषण आग लग गई। चीनी समाचार एजेंसी के मुताबिक, धमाके की सूचना मिलते ही राहत और बचाव दल मौके पर पहुंच गए। काफी मशक्कत के बाद आग पर काबू पाया गया। फिलहाल विस्फोट की असली वजह जानने के लिए जांच शुरू कर दी गई है। चीन में लूनर न्यू ईयर और स्प्रिंग फेस्टिवल के दौरान बड़े पैमाने पर आतिशबाजी की जाती है।

बच्ची से यौन उत्पीड़न भारतीय नागरिक गिरफ्तार

वाशिंगटन। अमेरिका के न्यू जर्सी में एक भारतीय नागरिक को इमिग्रेशन अधिकारियों ने हिरासत में लिया है। उस पर 13 साल से कम उम्र की बच्ची से यौन उत्पीड़न और दुकान से चोरी से जुड़े आरोप लगे हैं। अमेरिकी इमिग्रेशन एंड कस्टम्स एनफोर्समेंट ने सोशल मीडिया पर बयान जारी कर आरोपी की पहचान वोडेला यशस्वी कोट्टापल्ली के रूप में की है। एजेंसी के मुताबिक वह अवैध रूप से अमेरिका में रह रहा था और उसके खिलाफ आपराधिक मामले लंबित हैं। आईसीई ने कहा है कि आरोपी को अमेरिका के इमिग्रेशन कानून के तहत डिपोर्टेशन की प्रक्रिया पूरी होने तक हिरासत में रखा जाएगा।

सुप्रीम कोर्ट ने इलाहाबाद हाईकोर्ट को फटकार लगाते हुए बदला उसका फैसला

'नाड़ा खींचना रेप की कोशिश' यौन अपराधों पर फैसले के लिए तर्क, सहानुभूति की जरूरत

एजेंसी ▶▶| नई दिल्ली

सुप्रीम कोर्ट ने इलाहाबाद हाई कोर्ट के एक विवादित फैसले को बदल दिया है इसके साथ ही इलाहाबाद हाई कोर्ट को फटकार भी लगाई है। सुप्रीम कोर्ट ने कहा है कि पायजामे का नाड़ा खोलना बलात्कार की कोशिश की है। सुप्रीम कोर्ट ने इलाहाबाद हाई कोर्ट के उस विवादित फैसले को पलटने का फैसला किया है, जिसमें कहा गया था कि एक बच्ची के ब्रेस्ट को पकड़ना, उसके पायजामे का नाड़ा खोलना और उसे पुलिया के नीचे खींचने की कोशिश करना रेप या रेप की कोशिश नहीं है। इलाहाबाद हाई कोर्ट के फैसले पर कड़ी टिप्पणी करते हुए चीफ जस्टिस ऑफ इंडिया सूर्यकांत की अगुवाई वाली बेंच ने जस्टिस जॉयमाल्या बागची और एनवी अंजारिया के साथ कहा कि यौन अपराधों के मामलों में फैसले के लिए कानूनी तर्क और सहानुभूति दोनों की जरूरत होती है। सुको ने इलाहाबाद हाई कोर्ट के उस विवादित आदेश को खारिज कर दिया जिसमें कहा गया था कि ये सिर्फ 'रेप करने की तैयारी' है।

खास बातें

- हाईकोर्ट ने नाड़ा खींचने को बताया था, रेप की तैयारी
- सुको ने कहा- हम हाई कोर्ट के इस नतीजे से सहमत नहीं हो सकते

एक सुओ मोटो याचिका

सीजेआई सूर्यकांत और जस्टिस जॉयमाल्या बागची और एन वी अंजारिया की बेंच ने कहा कि विवादित ऑर्डर को 'क्रिमिनल ज्यूरिस्प्रूडेंस के तय सिद्धांतों के साफ तौर पर गलत इस्तेमाल' की वजह से रद्द किया जाता है। कोर्ट ने यह ऑर्डर एक सुओ मोटो याचिका पर दिया था, जिसमें उसने इलाहाबाद हाई कोर्ट के ऑर्डर का संज्ञान लिया था, इसमें कहा गया था कि सिर्फ ब्रेस्ट पकड़ना और पायजामे का डोरा खींचना रेप का अपराध नहीं है। हाईकोर्ट के फैसले को रद्द करते हुए शीर्ष अदालत ने प्रोटेक्शन ऑफ़ चिल्ड्रन फ्रॉम सेक्सुअल ऑफेंस (पोक्सो) एक्ट के तहत दो आरोपियों के खिलाफ रेप की कोशिश के असली कड़े चार्ज को बहाल कर दिया। कोर्ट ने कहा, 'जो फैक्ट्स बताए गए हैं, उन्हें देखते हुए, हम हाई कोर्ट के इस नतीजे से सहमत नहीं हो सकते कि आरोप सिर्फ रेप के अपराध को करने की तैयारी के हैं।' 'आरोपियों द्वारा की गई कोशिश साफ तौर पर और जरूरी तौर पर हमें इस नतीजे पर ले जाती है कि पहली नजर में, शिकायत करने वाले और प्रॉसिक्यूशन ने रेप करने की कोशिश के प्रोविजन को लागू करने का मामला बनाया है। इसलिए क्रिमिनल ज्यूरिस्प्रूडेंस के तय सिद्धांतों के साफ़ तौर पर गलत इस्तेमाल के कारण, विवादित फैसले को रद्द किया जाता है।

इलाहाबाद हाईकोर्ट के फैसले का तर्क

17 मार्च, 2025 के अपने ऑर्डर में, हाईकोर्ट ने फैसला सुनाया कि सिर्फ़ ब्रेस्ट पकड़ना और पायजामे का डोरा खींचना रेप का जुर्म नहीं है, लेकिन यह किसी महिला के कपड़े उतारने या उसे नंगा होने के लिए मजबूर करने के इरादे से हमला या क्रिमिनल फोर्स के इस्तेमाल के दायरे में आता है।

यह था मामला

केस के तथ्यों के अनुसार स्पेशल जज, पॉक्सो एक्ट की कोर्ट में एक एप्लीकेशन दी गई थी जिसमें आरोप लगाया गया था कि 10 नवंबर, 2021 को एक महिला अपनी 14 साल की बेटी के साथ अपनी ननद के घर से लौट रही थी। आरोपी पवन, आकाश और अशोक उसके गांव के थे और रास्ते में उससे मिले. उन्होंने उसकी बेटी को लिफ्ट देने की पेशकश की। आरोप है कि आरोपियों ने गांव जाते समय अपनी मोटरसाइकिल रोकी और नाबालिग के साथ छेड़छाड़ करने लगे। आकाश ने कथित तौर पर उसे घसीटा और पुलिया के नीचे ले जाने की कोशिश की और उसके पायजामे का नाड़ा खींच लिया। लड़की के रोने की आवाज सुनकर दो लोग मौके पर पहुंचे जिससे आरोपी भाग गए।

ममता बोलीं- ईडी केंद्र का हथियार, एजेंसी ने कहा- हमें बंगाल में धमकाया

सुप्रीम कोर्ट में चल रही है सुनवाई

पश्चिम बंगाल में कुछ ही महीनों में होने हैं विधानसभा चुनाव

एजेंसी ▶▶| नई दिल्ली

पश्चिम बंगाल में आई-पीएसी से जुड़े रेड मामले में बुधवार को सुप्रीम कोर्ट में सुनवाई हुई। इस दौरान ममता सरकार ने आरोप लगाया कि केंद्र सरकार प्रवर्तन निदेशालय (ईडी) का उन राज्यों में हथियार के रूप में इस्तेमाल कर रही है, जहां विपक्ष की सरकार है।वहीं केंद्रीय एजेंसी ने पलटवार करते हुए कहा कि हम किसी के हथियार नहीं हैं। बंगाल में ममता सरकार ने हमें धमकाया। दोनों पक्षों के बीच बहस पर सुप्रीम कोर्ट ने कहा है कि किसका हथियार के रूप में इस्तेमाल किया जा रहा है और किसे धमकाया जा रहा है, यह हम तय करेंगे।

ईडी ने दायर की थी याचिका

ईडी ने आई-पीएसी रेड मामले की जांच केंद्रीय जांच ब्यूरो (सीबीआई) से कराने की मांग को लेकर सुप्रीम कोर्ट में एक याचिका दायर की थी। ईडी का आरोप है कि 8 जनवरी को आई-पीएसी के ऑफिसों पर रेड के दौरान सीएम ममता बनर्जी और बंगाल पुलिस के अधिकारियों ने उनकी कार्रवाई में रुकावट डाली। सुप्रीम कोर्ट ने मामले की सुनवाई 18 मार्च तक टाल दी है। इससे पहले 3 फरवरी को सुनवाई टाली गई थी।

यह हुआ था सर्च आपरेशन में

सर्च ऑपरेशन के दौरान, सीएम ममता बनर्जी अन्य टीएमसी नेताओं के साथ आई-पीएसी ऑफिस पहुंचीं। इसके बाद काफी हंगामा हुआ। ममता ऑफिस से कई फाइलें लेकर बाहर निकलीं और मीडिया से बात की। मुख्यमंत्री ने केंद्रीय एजेंसी पर हद से ज्यादा दखलंदाजी का आरोप लगाया। पार्टी ने यह भी आरोप लगाया है कि आई-पीएसी पार्टी के चुनाव रणनीतिकार के रूप में काम करता है और विधानसभा चुनाव से ठीक पहले ईडी ने गोपनीय चुनाव रणनीति से जुड़ी जानकारी हासिल करने के लिए रेड डाली। टीएमसी ने ईडी की कार्रवाई में बाधा डालने के आरोप का खंडन किया।

ईरान को 50 फाइटर जेट्स ने घेरा मिडिल ईस्ट में मची फिर खलबली

एजेंसी ▶▶| वाशिंगटन

ईरान पर आक्रमण की अटकलों के बीच अमेरिका ने पश्चिम एशिया में अपनी सैन्य मौजूदगी तेजी से बढ़ा दी है। बीते 24 घंटों में अमेरिका ने 50 से अधिक लड़ाकू विमान इस क्षेत्र की ओर भेजे हैं। यह कदम ऐसे समय उठाया गया है, जब ईरान के साथ उसके परमाणु कार्यक्रम को लेकर नई कूटनीतिक बातचीत भी जारी है। अमेरिकी अधिकारियों के अनुसार, यह क्षेत्र में वायु और नौसैनिक ताकत को मजबूत करने की एक बड़ी कार्रवाई है। रिपोर्ट के मुताबिक, एफ-22, एफ-35 और एफ-16 जैसे अत्याधुनिक फाइटर जेट्स के साथ कई एयर रिफ्यूलिंग टैंकर भी मध्य पूर्व की ओर बढ़ते देखे गए हैं। सैन्य विमानन पर नजर रखने वाले स्वतंत्र ट्रैकिंग डेटा से भी इसकी पुष्टि हुई है। इससे संकेत मिलता है कि ये विमान लंबे समय तक ऑपरेशन के लिए तैयार किए जा रहे हैं। एपी की रिपोर्ट के अनुसार, एक अमेरिकी अधिकारी ने बताया कि 'पिछले 24 घंटों में 50 से ज्यादा फाइटर जेट्स को इस क्षेत्र में तैनात किया गया है।

आक्रमण की अटकलों के बीच ट्रंप ने बढ़ाई सैन्य मौजूदगी

परमाणु वार्ता में भी दिखी प्रगति

इस सैन्य शक्ति प्रदर्शन के बावजूद कूटनीतिक मोर्चे पर दोनों पक्षों के बीच संयमित बातचीत चल रही है। जेनेवा में अमेरिका और ईरान के बीच अप्रत्यक्ष परमाणु वार्ता का दूसरा दौर हुआ, जिसे अमेरिकी अधिकारियों ने 'प्रगति वाला' बताया, हालांकि उन्होंने यह भी कहा कि 'अभी कई अहम बिंदुओं पर चर्चा बाकी है।' अमेरिकी प्रतिनिधिमंडल में राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप के दूत जेरेड कुश्नर और स्टीव विटकॉफ शामिल रहे। वार्ता के बाद ईरानी पक्ष ने संकेत दिया कि वे दो सप्ताह के भीतर अधिक विस्तृत प्रस्तावों के साथ लौटेंगे। ईरान के विदेश मंत्री अब्बास अरागची ने बातचीत को 'गंभीर, रचनात्मक और सकारात्मक' बताया।

लंबा ट्रैफिक जाम...

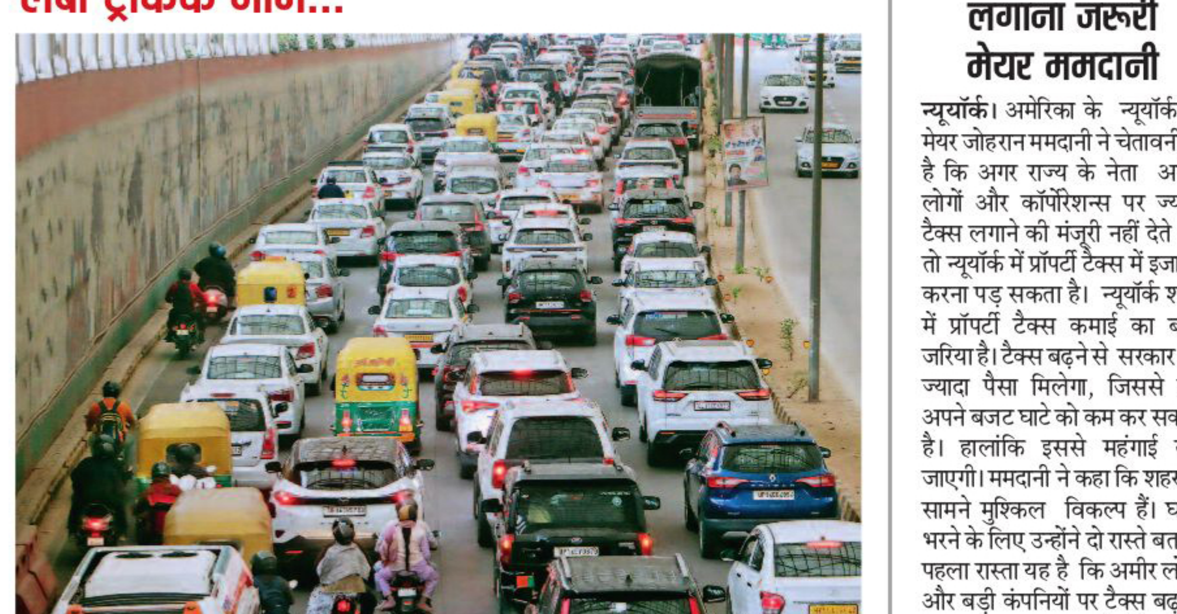

नई दिल्ली। राजधानी दिल्ली में बुधवार को भारत मंडपम के पास लंबा ट्रैफिक जाम लग गया। आपको बता दें, यहां एआई इम्पैक्ट समिट चल रहा है। इस वैश्विक सम्मेलन को देखने के लिए बड़ी संख्या में लोग उमड़ पड़े हैं।

अमीरों पर टैक्स लगाना जरूरी मेयर ममदानी

न्यूयॉर्क। अमेरिका के न्यूयॉर्क के मेयर जोहरान ममदानी ने चेतावनी दी है कि अगर राज्य के नेता अमीर लोगों और कॉर्पोरेशन्स पर ज्यादा टैक्स लगाने की मंजूरी नहीं देते हैं, तो न्यूयॉर्क में प्रॉपर्टी टैक्स में इजाफा करना पड़ सकता है। न्यूयॉर्क शहर में प्रॉपर्टी टैक्स कमाई का बड़ा जरिया है। टैक्स बढ़ने से सरकार को ज्यादा पैसा मिलेगा, जिससे वह अपने बजट घाटे को कम कर सकती है। हालांकि इससे महंगाई बढ़ जाएगी। ममदानी ने कहा कि शहर के सामने मुश्किल विकल्प हैं। घाटा भरने के लिए उन्होंने दो रास्ते बताए। पहला रास्ता यह है कि अमीर लोगों और बड़ी कंपनियों पर टैक्स बढ़ाया जाए। दूसरा रास्ता यह है कि प्रॉपर्टी टैक्स बढ़ाया जाए और रिजर्व फंड से पैसा निकाला जाए।

चीन ने दुनिया को दिखाई अपनी तकनीकी ताकत

रोबोट्स ने किया बच्चों के साथ मार्शल आर्ट्स, डांस भी

एजेंसी ▶▶| नई दिल्ली

चीन में हाल ही में स्प्रिंग फेस्टिवल गाला, 2026 आयोजित किया गया। इस प्रोग्राम में इस बार असली सितारे इंसान नहीं, बल्कि ह्यूमनॉइड रोबोट थे। दरअसल, चीन ने दुनिया को अपनी तकनीकी ताकत दिखाई। इस कार्यक्रम में इंसानों जैसे दिखने वाले ह्यूमनॉइड रोबोट्स ने मार्शल आर्ट्स और डांस किया। करीब 25 रोबोट्स बच्चों के साथ तलवार भांजते, बैकलिफ्ट करते और डंडे घुमाते हुए डांस करते दिखाई दिए। यह प्रदर्शन देख दुनिया हैरान रह गई। इसी वजह से इस साल चीन का ये सांस्कृतिक कार्यक्रम इस बार सोशल मीडिया पर वायरल हो गया। क्योंकि इस प्रोग्राम में मार्शल आर्ट्स से लेकर कठिन डांस मूव्स और बैकफ्लिप तक, इन रोबोट्स ने सबकुछ इंसानों से खूब बेहतर किया और ये साबित कर दिया कि भविष्य में इंसान और मशीन का रिश्ता कैसा हो सकता है।

सोशल मीडिया पर वायरल हुआ स्प्रिंग फेस्टिवल गाला

इन कंपनियों ने किया हैरान

यह कार्यक्रम चीन के शहर यिवू में आयोजित किया गया। इस इवेंट में कई बड़ी रोबोटिक्स कंपनियों ने हिस्सा लिया। इनमें मैजिक लैब, यूनिट्री रोबोटिक, नोएटिक्स रोबोटिक्स और बीजिंग गालबोट शामिल थीं। इन कंपनियों ने अपने नए ह्यूमनॉइड रोबोट्स पेश किए, जिन्हें देखकर दर्शक हैरान रह गए। यूनिट्री रोबोटिक्स ने इस गाला में तीसरी बार हिस्सा लिया। कंपनी ने अपने जी1 और एच2 ह्यूमनॉइड रोबोट्स को 'वूबोट' नामक मार्शल आर्ट्स थीम पर आधारित प्रस्तुति में शामिल किया। इन रोबोट्स ने असली मार्शल आर्ट कलाकारों के साथ मिलकर कई मुश्किल मूव्स किए। इनमें हॉर्स स्टांस, फ्लिप, नंचाकू रूटीन और ड्रंकन फिस्ट जैसी तकनीकें शामिल थीं। यह परफॉरमेंस चार मिनट से ज्यादा चली और पूरे समय रोबोट्स ने संतुलन और तालमेल बनाए रखा।

दुनियाभर में 90% रोबोट्स चीन के

रिसर्च फर्म ओम्डिया के अनुसार, पिछले साल दुनियाभर में भेजे गए लगभग 13 हजार ह्यूमनॉइड रोबोट्स में से 90 प्रतिशत चीन से थे। यह अमेरिकी कंपनियों से काफी आगे है। मॉर्गन स्टेनली का अनुमान है कि इस साल चीन में ह्यूमनॉइड रोबोट की बिक्री दोगुने से ज्यादा बढ़कर 28 हजार यूनिट तक पहुंच सकती है। दुनिया के सबसे रईस शख्स इलॉन मस्क का कहना है कि उन्हें अपने सबसे बड़े प्रतिद्वंद्वी के रूप में चीनी कंपनियां नजर आती हैं, क्योंकि वह टेस्ला को एआई आधारित रोबोटिक्स की दिशा में आगे बढ़ा रहे हैं। उन्होंने हाल ही में कहा, 'चीन को बाहर के लोग कम आंकते हैं, लेकिन चीन अगले स्तर का दमदार खिलाड़ी है।'

'दुनिया की नौसेनाएं महासागरों को समृद्धि के द्वार के रूप में करेंगी विकसित'

नई दिल्ली

दुनिया के कई भागों में काफी वक्त से जारी युद्ध से उत्पन्न ऊर्जा और खाद्य सुरक्षा जैसी गंभीर चुनौतियों के मध्य भारत के दक्षिणी राज्य आंध्र-प्रदेश के विशाखापट्टनम में बुधवार से भारतीय नौसेना की मेजबानी में 'अंतरराष्ट्रीय फ्लीट रिव्यू-2026' (आईएफआर) की शुरुआत हो चुकी है। इस बार विश्व के कुल 74 देशों की नौसेनाएं इस महत्वपूर्ण आयोजन में हिस्सा ले रही हैं। राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू ने 18 फरवरी को आईएफआर का उद्घाटन किया। इस दौरान अपने संबोधन में उन्होंने दो बिंदुओं पर खासा जोर दिया है। जिसमें पहले में समुद्री सुरक्षा क्षेत्र में कार्य करने को लेकर भारत के वसुधैव कुटुंबकम के

दृष्टिकोण के बारे में बताया। साथ ही दूसरे में इस फ्लीट रिव्यू में शामिल सभी नौसेनाओं के प्रति यह विश्वास व्यक्त किया कि वे सभी एकजुटता से महासागरों को अंतरराष्ट्रीय समुदाय के विकास, समृद्धि और समग्र कल्याण के द्वार के रूप में विकसित करने में अपना योगदान देंगी। नौसेना ने एक बयान जारी यह जानकारी दी है।

मुद्रक, प्रकाशक व स्वत्वाधिकारी आरपी न्यूज़ नेटवर्क प्राईवेट लिमिटेड के लिये श्रीराम ऑफसेट, 14, शॉपिंग सेंटर, ज़ोरावरसिंह गेट के बाहर, आमेर रोड, जयपुर से मुद्रित तथा रॉयल पत्रिका कार्यालय: 4312, मोहल्ला नायकान, नाहरवाड़ा, जगन्नाथ शाह का रास्ता, रामगंज, जयपुर से प्रकाशित। पीआरबी एक्ट के अनुसार खबरों के चयन के लिए उत्तरदायित्व संपादक मुन्ना खान मोबाइल नंबर 9772552446, 8058969180 ई-मेल: rpnewsnetworkpvt.ltd@gmail.com